राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक–4 नवम् विधान सभा के चतुर्थ सत्र का चतुर्थ दिवस संख्या–2

सोमवार,

25 फरवरी, 1991

(विधान सभा की बैठक पूर्वाह्न 11·00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।)

(श्री हरिशंकर भाभड़ा, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न....

अनेक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय....(व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : अध्यक्ष महोदय, 26 विधायकों के....

(व्यवस्था सूचक-घण्टी)

श्री अध्यक्ष : कृपया एक-एक बोलें.... एक बार बैठिये प्लीज....(व्यवधान)....आप बैठिये .. (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, दल बदलुओं को बाहर करो। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष :....(व्यवधान).......प्लीज बैठिये....आप बैठिये....सचेतक महोदय....

श्री ओमप्रकाश गुप्ता (मुख्य सचेतक) : ....(अश्रव्य)....

(डा. चन्द्रभान द्वारा कुछ कागज माननीय अध्यक्ष महोदय को दिये गये)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, 26 विधायकों के दल.... (व्यवधान) 26 विधायक दल छोड़कर चले गये हैं और बाई ऑपरेशन ऑफ लॉ वह डिबार हो चुके हैं। उन्होंने अपनी याचिकाओं में + + + उन 26 विधायकों के दल बदल की वजह से वह इस सदन में बैठने लायक नहीं है। पहले उनको बाहर किया जाये और सदन की कार्यवाही फिर चालू की जाये।

प्रश्न काल का स्थगन

श्री ओमप्रकाश गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, रूल 31 के अन्तर्गत प्रश्नकाल को सस्पैण्ड किया जाये।

श्री अध्यक्ष : प्रस्ताव आया है, आपको इस पर कुछ बोलना है ?

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री नत्थी सिंह : पहले हमारा प्रस्ताव है।

श्री अध्यक्ष : प्रस्ताव यह आया है कि क्या आज क्वेश्चन को सस्पेण्ड किया जाये.. इस पर आपको बोलना है क्या ?........ (व्यवधान)

कुछ माननीय सदस्य : सस्पेण्ड किया जाये।

श्री जगतसिंह दायमा : कुछ माननीय सदस्यों ने सदन की गरिमा को गिराया है। 22 तारीख को माननीय सदस्यों द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा जो भाषण किया गया था....

श्री अध्यक्ष : सदन की इजाजत से प्रश्नकाल को मैं स्थगित करता हूं।

श्री नत्थी सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, 26 विधायकों ने....

एक माननीय सदस्य : इनको हाउस से निकाला जाये। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बैठिये, बैठिये........... (व्यवधान) प्लीज सिट डाउन....प्लीज सिट डाउन....

श्री रामेश्वरदयाल यादव : अध्यक्ष महोदय, सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले 26 विधायकों को, जो दल बदल कर चुके हैं, जो बाई ऑपरेशन ऑफ लॉ डिबार हो चुके हैं, बाहर किया जाये....(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, इस तरह से सदन नहीं चल पायेगा....

श्री अध्यक्ष : बोलिए, आप क्या बोल रहे हैं ? आप बोलिए, क्या बोल रहे हैं ?

श्री रमाकान्त शर्मा : मैं एक प्रस्ताव पढ़ रहा हूं ...

श्री अध्यक्ष : हां, बोलिये।

श्री रमाकान्त शर्मा : अध्यक्ष महोदय, इस सदन का मत है कि दिनांक 22-2-91 को महामहिम राज्यपाल के साथ विधान सभा में निम्नलिखित जिन माननीय सदस्यों ने अभद्र, असंवैधानिक व अलोकतान्त्रिक व्यवहार किया है....

श्री नत्थी सिंह : इस तरह से नहीं चलेगा। गलत काम कर रहे हैं। सदन की वैधानिकता पर प्रश्न चिन्ह है। पहले वैधानिकता को सही कीजिए....(व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : 22 तारीख को राज्यपाल महोदय का अपमान हुआ है.... (व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले इनका फैसला कीजिए बाई ऑपरेशन ऑफ लॉ....(व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : सदन की गरिमा का अपमान हुआ है....(व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत :....(अश्रव्य)... सदन की गरिमा का अपमान किया है इसलिए इनको निलम्बित किया जाये।.... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यह रमाकांत जी कुछ पढ़ रहे हैं, आप क्या पढ़ रहे हैं (व्यवधान)....

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्तमान सरकार दल बदलुओं की है, संवैधानिक नहीं है, इसलिए जो दल-बदलू हैं उनको बाहर किया जाये........ (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : जब तक आप लोकतन्त्र की हत्या करने वालों को नहीं निकालेंगे, तब तक विधान सभा नहीं चलेगी, नहीं चलेगी ....(व्यवधान)

श्री गोविन्दसिंह गुर्जर : अध्यक्ष महोदय, पाइन्ट ऑफ ऑर्डर....(व्यवधान)

श्री हीरासिंह चौहान :....पढ़ने का कोई अधिकार नहीं बनता है....(व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : राज्यपाल महोदय का अपमान करने वालों को बाहर निकाला जाये.....

(व्यवस्था सूचक-घंटी)

(+ + +)

श्री अध्यक्ष : बैठिये, बैठिये (व्यवधान) ...पहले रामेश्वर जी यादव बोलेंगे ।...... एक-एक को सुनूंगा । आपको भी सुन लूंगा । एक-एक बोलेंगे तो कान में पड़ेगा । आप पहले इनको बोलने दीजिए । रामेश्वर जी यादव, बोलिये....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : राज्यपाल महोदय की गरिमा को गिराया है । इनको निलम्बित किया जाये ।

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सत्ता पक्ष के सदस्यों को समझाइये ।

श्री ओमप्रकाश गुप्ता :....(अश्रव्य)

+ + +

श्री रामेश्वरदयाल यादव : नहीं चल पायेगा सदन । (व्यवधान)

(सदन में नारेबाजी)

एक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं खड़ा हूं ।

एक माननीय सदस्य : राजस्थान विधान सभा के सदस्य, सुरेन्द्र व्यास, राजेन्द्र पारीक को तुरन्त बाहर निकाला जाना चाहिये, अध्यक्ष महोदय । इन्होंने माननीय राज्यपाल का अपमान किया है और सदन की गरिमा को गिराया है ।

एक माननीय सदस्य : तीनों सदस्यों को सदन से निष्कासित करो ।

एक अन्य माननीय सदस्य : यह + + + यह है + + + माननीय अध्यक्ष महोदय, जिन्होंने + + + पेश किये हैं उनसे कम से कम जवाब तो पूछा जाय ।

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई ।

श्री रमाकान्त शर्मा : जिन्होंने सदन की गरिमा को गिराया है, राज्यपाल की गरिमा को गिराया है....

एक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + + (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : श्री रामेश्वरजी यादव। श्री रामेश्वरजी यादव बोलिये।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय....

श्री अध्यक्ष : हां, बोलिये। आप बोलिये....(व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : अगर यह हमें नहीं बोलने देंगे तो हम मुख्य मंत्री को नहीं बोलने देंगे। किसी कीमत पर नहीं बोल पायेंगे।

श्री अध्यक्ष : आप बोलिये, बोलिये.... (व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : यह समझाइये इनको। यह क्या हो रहा है?

श्री अध्यक्ष : आप बैठिये। श्री रामेश्वर जी यादव। श्री रामेश्वरजी यादव।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : आप इनको समझाइये।

श्री जगतसिंह दायमा : पहले हमारा प्रस्ताव आया है आपके पास। (व्यवधान)

श्री रमाकान्त शर्मा : मेरा प्रस्ताव है, बीच में कैसे बोल सकते हैं।

एक माननीय सदस्य : यह शासकीय दल के माननीय सदस्य अव्यवस्था फैला रहे हैं। यह शासकीय दल के माननीय सदस्य अव्यवस्था फैला रहे है। और दल बदलुओं को अपनी गोद में लेकर बैठे हैं। जब तक दल बदलुओं को बाहर नहीं किया जायगा, तब तक सदन की कार्यवाही नहीं चलने दी जायेगी। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + + करने वालों को.....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : श्री रामेश्वर दयाल यादव, आप बोलिये....(व्यवधान)....अब मैं क्या करूं।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो इनको कहिये।

श्री अध्यक्ष : प्लीज, प्लीज। माननीय सदस्य। माननीय सदस्य।

एक माननीय सदस्य : + + +

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप नहीं बोल रहे क्या।.....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : बाहर निकालो। बाहर निकालो इनको सबको।

श्री अध्यक्ष : रमाकान्त जी, आप क्या बोल रहे हैं, बोलिये आप। बोलिये, बोलिये (व्यवधान)

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके आदेश से....

श्री अध्यक्ष : अब आप बोले नहीं हैं और आप—

श्री रामेश्वरदयाल यादव : मैं बोल रहा हूं। मैं बोल रहा हूं, बोलने नहीं देते।

श्री अध्यक्ष : आप, रमाकांत जी, बोलिये। आप बाद में बोलिये, रमाकांतजी, बोलिये, बोलिये।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके निर्देश से मैं बोल रहा हूं।

श्री जगतसिंह दायमा : + + +

श्री हेतराम बेनीवाल : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है....(व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, जनता दल के 26 सदस्यों ने दल बदल कर....

श्री जगतसिंह दायमा : इसको बाहर निकालो, राज्यपाल महोदय का अपमान करने वाले को।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : पृथक् रूप से जो एक ग्रुप का गठन किया....

एक माननीय सदस्य : दल बदलुओं को जब तक बाहर नहीं निकालोगे तब तक कोई भी मोशन नहीं....

श्री रामेश्वरदयाल यादव : यह 26 विधायक सदन की सदस्यता खो चुके हैं— (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : + + +

श्री अध्यक्ष : प्लीज। आप बैठिये। प्लीज सिट डाउन। एक मिनट सुन लीजिये। आप सुन लीजिये। एक मिनट। एक मिनट। प्लीज, प्लीज सुन लीजिये।

श्री जगतसिंह दायमा : पहले हमारा प्रस्ताव पढ़ा जाय। पहले हमारा प्रस्ताव। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्लीज, प्लीज। माननीय सदस्य, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य। बैठिये। आप बोलिये, बोलिये।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय....

श्री अध्यक्ष : हां, बोलिये, बोलिये.... (व्यवधान)

माननीय सदस्य, प्लीज सिट डाउन। रामेश्वरजी यादव। आप बैठिये, प्लीज। रामेश्वरजी यादव, बोलिये।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप एक मिनट। प्लीज। प्लीज, प्लीज सिट डाउन।

एक माननीय सदस्य : पहले सत्ता दल के बोलेंगे....(व्यवधान)

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री अध्यक्ष : आप सुन लीजिये । प्लीज सिट डाउन ।

एक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

श्री रामेश्वरदयाल यादव : सत्ता पक्ष सदन नहीं चलाना चाहता है और यह जिस तरह का वातावरण पैदा कर रहे हैं, आप यह उम्मीद करते हो क्या वह बोल पायेंगे सदन के अन्दर ।

श्री अध्यक्ष : श्री रामेश्वरजी यादव । रामेश्वरजी यादव को थोडा बोलने दीजिए । आप दो मिनट । प्लीट सिट डाउन ।

श्री जगतसिंह दायमा : रामेश्वर यादव को नहीं बोलने दिया जायेगा ।

श्री अध्यक्ष : प्लीज । प्लीज सिट डाउन । कोगटाजी, बिराजिये । प्लीज बैठिये । आप बोलिये, रामेश्वरजी । प्लीज सिट डाउन हियर हिम ।

श्री जगतसिंह दायमा : माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले प्रस्ताव पढ़ने दिया जाय ।

श्री हीरासिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले प्रस्ताव पढ़ने दिया जाय । हमारी मांग है कि पहले प्रस्ताव पढ़ने दिया जाय । माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले प्रस्ताव पढ़ने दिया जाय ।....
(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : दायमाजी, प्लीज हियर हिम । प्लीज सिट डाउन । प्लीज सिट डाउन । आप इनको सुनें । श्री रामेश्वर जी यादव, आप बोलिये ।....(व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, मूल जनता दल के एक माननीय सदस्य ने दिनांक 6-11 को....
(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : नहीं बोलने दिया जायगा ।

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले सदन के अन्दर जो पेश हुआ है पहले उसके ऊपर आप चर्चा करायें ।....
(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

एक माननीय सदस्य : डाक्टर चन्द्रभान, माननीय सदस्य सुरेन्द्र व्यास, राजेन्द्र पारीक को सदन से निष्कासित करके सदन से बाहर किया जाना चाहिए ।

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सदन में किस तरह से + + + करा रहे हो ।....(व्यवधान)

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई ।

श्री अध्यक्ष : आप बोलिये। प्लीज, रामेश्वरजी को दो मिनट बोलने दीजिये। आप जरा सुन लीजिये।...(व्यवधान).... प्लीज सिट डाउन। प्लीज सिट डाउन। दो मिनट बैठिये। राठौड़ साहब, बैठिये। प्लीज सिट डाउन। प्लीज सिट डाउन। आप बोलिये, रामेश्वर जी। बोलिये, बोलिये।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : वह सरकारी डिप्टी चीफ व्हिप हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, जनता दल के....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आ जायेगा, जब कह देंगे। आप सुन तो लीजिये।....(व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र व्यास : मैं यह कहता हूं....

एक माननीय सदस्य : आप क्या हैं। आप ऐसे क्यों खड़े हो।

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह किस पर बोल रहे हैं।... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको सदन से बाहर निकालो। इन्होंने सदन का अपमान किया है, सदन की गरिमा को गिराया है। माननीय राज्यपाल के अभिभाषण को फाड़ा है।.... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप दो मिनट उनको सुन लीजिये। मैं आपको भी मौका दूंगा।

एक माननीय सदस्य : माननीय सुरेन्द्र व्यास को तुरन्त बाहर किया जाना चाहिए। महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण को फाड़ा है।

श्री अध्यक्ष : आप बोलिये। श्री रामेश्वर जी यादव।

एक माननीय सदस्य : इन्होंने जो तरीका अपनाया है।....(व्यवधान)

श्री हीरासिंह चौहान : यह कोई नयी बात नहीं कह रहे हैं। उसी बात का रिपीटिशन कर रहे हैं। वही बात बार-बार कह रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : हीरासिंह जी, आपको भी दूंगा। पहले आप बोल जायं, फिर आपको दूंगा। बोलिये आप।

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप कृपया बैठिये। मैं आपको भी सुनूंगा। पहले इनको सुन लीजिए।... (व्यवधान)

श्री रामेश्वरदयाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्लीज सिट डाउन। आप दो मिनट इनको सुन लीजिए। प्लीज बैठिए। देखिए, रामेश्वर जी, रमाकांत जी, हेतराम जी, सब को सुन लूंगा मैं एक-एक करके। प्लीज सिट डाउन।... (व्यवधान)

श्री हीरासिंह चौहान : इनको पढ़ने दिया जाय। यह हमारा प्रस्ताव है....

श्री अध्यक्ष : आप बैठिए। माननीय रामेश्वर जी, बोलिए।....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, जिन्होंने महामहिम राज्यपाल का अपमान किया है, सदन की गरिमा को.... (व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : महोदय, पहले प्रस्ताव हमारा पढ़ा जाएगा....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : पाइण्ट ऑफ आर्डर....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : अब मैं इनका नाम पुकारता हूं। कृपया रमाकान्त जी अपना मोशन मूव करें।....(व्यवधान)

सदन से सदस्यों के निष्कासन का प्रस्ताव

श्री रमाकांत शर्मा (थानागाजी) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन का मत है कि दिनांक 22-2-91 को महामहिम राज्यपाल के साथ विधान सभा के निम्नलिखित जिन माननीय सदस्यों ने अभद्र, असंवैधानिक एवं अलोकतान्त्रिक व्यवहार किया है उनके विरुद्ध समुचित कार्यवाही की जायं।

महामहिम राज्यपाल ने संविधान के अन्तर्गत अपने कर्तव्यों के निर्वहन में जिस समय विधान सभा में अपना अभिभाषण पढ़ना आरम्भ किया उस समय माननीय सदस्य श्री सुरेन्द्र व्यास, श्री चन्द्रभान, श्री राजेन्द्र पारीक, श्री प्रद्युम्नसिंह, श्री नत्थी सिंह, श्री जनार्दनसिंह गहलोत, श्री रामेश्वर प्रसाद यादव, श्री ईश्वरलाल सैनी, श्री राम नारायण वर्मा, श्री नाथूराम आर्य, श्री मोहम्मद माहिर आजाद, श्री महिपाल यादव, श्री बुलाकीदास कल्ला, श्री राम स्वरूप मीणा ने आक्रामक रूख अपना कर नारेबाजी की और अभिभाषण नहीं पढ़ने का आग्रह किया। महामहिम राज्यपाल ने अपना अभिभाषण जारी रखा। इस पर मालपुरा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य श्री सुरेन्द्र व्यास ने महामहिम राज्यपाल के सामने होकर माइक को फेंक दिया। सीकर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित श्री राजेन्द्र पारीक ने टेबल लैम्प को हटा दिया और उसके साथ ही मण्डावा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य श्री चन्द्रभान ने उनके हाथ से अभिभाषण की प्रति छीन कर फेंक दी। महामहिम राज्यपाल महोदय के साथ इस प्रकार व्यवहार करने से सदन उनके अभिभाषण को सुनने से वंचित रहा। साथ ही इन तीनों विधायकों के आचरण से सदन की प्रतिष्ठा को आघात लगा, संविधान का उल्लंघन हुआ और लोकतान्त्रिक मान्यताओं को तिलांजलि दे दी गई।

अतः इस सदन का मत है कि इन तीनों सदस्यों सर्व श्री सुरेन्द्र व्यास, श्री राजेन्द्र पारीक व श्री चन्द्रभान को उनके उपरोक्त दुराचरण के लिए उनके विधायक काल की शेष अवधि के लिए निष्कासित किया जाय। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : + + + (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : सदन की कार्यवाही आधे घंटे तक स्थगित की जाती है।

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री अध्यक्ष)

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 11.28 बजे स्थगित हुई)

(म. पू. 11.58 बजे)

(पुनः समवेत होने पर)

(श्री यदुनाथ सिंह, उपाध्यक्ष, पदासीन)

श्री उपाध्यक्ष : आधा घण्टे के लिए फिर स्थगित किया जाता है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 12.00 बजे आधे घण्टे के लिए स्थगित हुई।)

(12.30 म. प.)

(पुनः समवेत होने पर)

(श्री यदुनाथ सिंह, उपाध्यक्ष, पदासीन)

श्री उपाध्यक्ष : सदन की कार्यवाही एक घण्टे के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक म.प. 12.31 बजे स्थगित हुई)

पुनः समवेत होने पर

(1.33 म. प.)

(श्री यदुनाथ सिंह, उपाध्यक्ष, पदासीन)

श्री उपाध्यक्ष : परम्परा का निर्वहन करते हुए 15 मिनट के लिए पुनः स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक म. प. 1.34 बजे 15 मिनट के लिये पुनः स्थगित हुई।)

(1.49 म. प.)

(पुनः समवेत होने पर)

(श्री हरिशंकर भाभड़ा, अध्यक्ष पदासीन)

श्री अध्यक्ष : मैं समझता हूं कि आज जो मोशन मूव हुआ है उसको लेकर हाउस में उत्तेजना है इसलिए इस मोशन पर मैं आज डिबेट स्थगित करता हूं, डिबेट कल ले लेंगे। बाकी बिजनेस आज ले लें।

श्री मोहम्मद माहिर आजाद : अध्यक्ष महोदय, पाइंट ऑफ इन्फार्मेशन, हमें तो पता ही नहीं कि कौन सा मोशन मूव हुआ, कोई सर्कुलेट होता.... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कल हो जायेगा, कल हो जायेगा। कापियां आपकी सबकी टेबल पर आ जायेंगी।

श्रीमती सुमित्रा सिंह : अध्यक्ष महोदय, मूव तो नहीं हुआ। हम आसन से यह व्यवस्था चाहेंगे, क्या यह मोशन मूव हो चुका है ?

श्री मोहम्मद माहिर आजाद : कॉपी पेश करने को मूव किया हुआ नहीं माना जा सकता। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आपको प्रति मिल जाएगी। और किसी को नहीं मिली है, उनको भी मिल जाएगी। मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है... (व्यवधान)

श्री नत्थी सिंह : पाइंट आफ आर्डर, अध्यक्ष महोदय। व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि हमने प्रातः काल भी आपसे यह

(श्री नत्थी सिंह)

निवेदन किया था और पुनः आपसे यह निवेदन करते हैं कि हमने यह कहा है कि हाउस की वैधानिकता के सम्बन्ध में पहले आप निर्णय करें। इस हाउस में जब 26 ऐसे सदस्य बैठे हैं जो हाउस के अयोग्य हो गये हैं, मंत्रिमण्डल में बैठे हैं, जब तक इस हाउस की कार्यवाही नहीं चल सकती। आप उसका फैसला करिए पहले.... (व्यवधान)

श्री रामनारायण वर्मा (नैनवां) : अध्यक्ष महोदय, फैसला कीजिये। अयोग्य व्यक्तियों को बाहर करो....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : देखिये, आपने जो.... (व्यवधान) प्लीज सिट डाउन।

श्री नत्थी सिंह : मेरी पूरी बात सुनिये।

श्री अध्यक्ष : मैंने सुन लिया है। उसी का जवाब दे रहा हूं....(व्यवधान)

श्री नत्थी सिंह : मेरी पूरी बात सुनी जाय। मेरा निवेदन है कि....

श्री महावीर प्रसाद जैन (टौंक) : ये गलत तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको बैठाइये। (व्यवधान)

श्री शान्तिलाल चपलोत (विधि मंत्री) : महामहिम राज्यपाल का अपमान किया है। अभिभाषण को फाड़ा है। इसलिए ऐसे लोगों को तुरन्त सदन से निष्कासित करके बाहर किया जाए। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : यह सत्ता पक्ष का नाटक कब तक चलेगा ? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्लीज, प्लीज। एक मिनट बिराजिये। ऐसा है कि मैं आपकी भावनाओं की कद्र करता हूं। मैं आपकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि लोकसभा में....(व्यवधान)

पहले सुन तो लीजिये आप। लोक सभा में भी यह सवाल उठा था और लोक सभा का पूरा सत्र समाप्त होने के आखिरी दिन पर निर्णय हुआ है। मैं भी इसी सत्र में, सारे जितने भी नेता है, उनको बुला लेता हूं, जितनी जल्दी इस पर निर्णय हो सकता है, मैं यह आश्वासन देता हूं कि उसका निर्णय करूंगा। (व्यवधान) अब हो गया (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : हम इस पर स्पष्ट आश्वासन चाहते हैं अध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कल्ला जी बोलेंगे।

श्री बुलाकीदास कल्ला : लोक सभा में + + + का कोई मामला, कोई मुद्दा नहीं उठा था। (व्यवधान)

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

श्री अध्यक्ष : अब आप कल्ला जी को बोलने दीजिये । कल्ला जी बोलिये । (व्यवधान)

श्री बुलाकीदास कल्ला : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सामने दो मामले पेंडिंग हैं। एक तो एन्टी डिफेक्शन बिल के अन्तर्गत और दूसरा मामला + + + प्रस्तुत करने के बारे में है । यह + + + आने से न केवल इस सदन में, पूरी जनता में इस बात पर रोष है....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : + + + का क्या अर्थ है ? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आपका दूसरा पाइन्ट सुन लिया है। आप कृपया बिराजिये । प्लीज प्लीज । देखिये, जिस दूसरे मामले के बारे में आप कह रहे हैं, वह मामला भी पिटीशन की प्रक्रिया से सम्बन्धित है । इन्डिपेन्डेन्ट नहीं है । आज तो उसी पर डिसीजन होगा । (व्यवधान)

इस पाइन्ट का निर्णय भी इसी प्रक्रिया में होगा । मेरे निर्णय में इसका भी.... (व्यवधान) बस हो गया । चलिए ।

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नलिखित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है :—

(1) श्री रामनारायण वर्मा, सदस्य, विधान सभा की ओर से, रामगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य के कर्मचारियों द्वारा ग्रामीणों को आतंकित व परेशान किये जाने के सम्बन्ध में । (व्यवधान)

डॉ. चन्द्रभान (मण्डावा) : अध्यक्ष महोदय, दो मामले हैं । इन दोनों मामलों में कोई तारीख निश्चित कीजिये आप । यह एक तो... (व्यवधान)

(2) श्री अमीन खां, सदस्य, विधान सभा की ओर से सीमावर्ती संरक्षित इलाके जिला बाड़मेर व जैसलमेर में शिक्षकों की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई शून्य होने से जनता में भारी असन्तोष के सम्बन्ध में....(व्यवधान)

डॉ. चन्द्रभान : ये फर्जी दस्तावेज हैं । जो अयोग्य लोग हैं, इनके मामले में फैसले की तारीख निश्चित कीजिये । जब तक यह स्पष्ट नहीं होगा, जब तक तारीख निश्चित नहीं होगी, हम इसे नहीं मानेंगे । (व्यवधान)

(3) श्री हेतराम बेनीवाल, सदस्य, विधान सभा की ओर से राज्य में साम्प्रदायिक दंगों के कारण गौरवपूर्ण सहिष्णुता व भाईचारे की भावना कलुषित हो जाने तथा इन दंगों की न्यायिक जांच उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से कराने के सम्बन्ध में । (व्यवधान)

श्री रामेश्वर दयाल यादव (चौमूं) : माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है । माननीय अध्यक्ष महोदय, पाइन्ट ऑफ आर्डर....(व्यवधान)

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया ।

श्री अध्यक्ष : (4) सर्व श्री ईश्वरलाल सैनी, राजेन्द्र पारीक, रामस्वरूप मीणा व बुलाकीदास कल्ला, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से दिनांक 27–28 जनवरी, 1991 की रात्रि को थाना विराट नगर, जिला जयपुर के श्रन्तर्गत ग्राम बीलवाड़ी-नौरंगपुर सड़क पर एक जीप में सवार चार व्यक्तियों में से तीन की गश्ती पुलिस द्वारा मुठभेड़ बताकर मृत्यु हो जाने बाबत उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में।

(5) श्री गोविन्द सिंह गुर्जर व 18 श्रन्य सदस्य, राजस्थान विधान सभा की श्रोर से फसल बीमा योजना को पुनः श्रविलम्ब प्रारम्भ किये जाने के सम्बन्ध में। (व्यवधान)

(6) श्री लक्ष्मीलाल व 12 श्रन्य सदस्य, राजस्थान विधान सभा की श्रोर से पिछड़े वर्ग के समुदाय के लिए विशेष संरक्षण दिये जाने के प्रयोजन से मण्डल श्रायोग की सिफारिशों को राज्य सरकार द्वारा लागू किये जाने के सम्बन्ध में। (व्यवधान)

उपरोक्त स्थगन प्रस्तावों पर राज्य सरकार से श्रविलम्ब जानकारी प्राप्त की जा रही है। जानकारी प्राप्त होने पर निर्णय लिया जावेगा। (व्यवधान)

प्रक्रिया के नियम 295 के श्रन्तर्गत प्रस्ताव

(1) श्री प्रभुलाल पटेल, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से सपोटरा क्षेत्र की पेयजल समस्या के निदान के सम्बन्ध में।

(2) श्री श्रमीन खां, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से बाड़मेर जिले की तहसील शिव के ग्राम जुड़ीया में मेगवालका खड़ीन तथा जैसलमेर तहसील के ग्राम बीरमानी में श्रनुसूचित जाति के स्वीकृत खड़ीन से पिछड़े एवं श्रनुसूचित जाति के लोगों को लाभ दिलवाने के सम्बन्ध में। (व्यवधान)

(विपक्ष के कुछ माननीय सदस्य श्रध्यक्ष महोदय के सामने श्रा गये श्रौर प्रांगण में बैठ गये तथा नारेबाजी की)

(3) श्री किशनाराम, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से ग्राम नरहड़, जिला झुन्झुनू की कृषि भूमि खसरा नं. 325 एवं 330 का वास्तविक क्रेता को कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में। (व्यवधान)

(4) श्री हरिश्चन्द्र कुमावत, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से कुचामन-नावां क्षेत्र में विद्युत सप्लाई न मिलने के कारण काश्तकारों को हो रही परेशानी के सम्बन्ध में।

(5) श्री बुलाकीदास कल्ला एवं श्री रामस्वरूप मीणा, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से राजस्थान में कार्यरत विभिन्न जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों की समस्याश्रों तथा बीकानेर जिला दुग्ध उत्पादक संघ एवं इनके सम्बन्धित फैडरेशन इकाइयों के विलीनीकरण नहीं करने के सम्बन्ध में। (व्यवधान)

(6) श्री हेतराम बेनीवाल, सदस्य, विधान सभा की श्रोर से राज्य के गरीब काश्तकारों की फसलों को बचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त श्रनुदान का कृषि विभाग के श्रधिकारियों द्वारा सदुपयोग नहीं किये जाने के सम्बन्ध में।

(श्री अध्यक्ष)

(7) श्री दयाराम परमार, सदस्य, विधान सभा की ओर से अपना गांव अपना काम योजना के अन्तर्गत 30 प्रतिशत जन सहयोग के स्थान पर ट्राइबल क्षेत्रों में 5 प्रतिशत जन सहयोग लिये जाने के सम्बन्ध में।

माननीय सदस्यों को उनके द्वारा दिये गये प्रस्तावों को पढ़ने की अनुमति होगी। (व्यवधान) यह सारे विशेष उल्लेख पढ़े हुए माने जायेंगे। (व्यवधान)

(विशेष उल्लेख के प्रस्तावों के लिये कृपया परिशिष्ट सं. 1 देखिये।)

कार्य सलाहकार समिति का प्रतिवेदन

माननीय सचेतक।

श्री ओमप्रकाश गुप्ता (सरकारी मुख्य सचेतक): मैं कार्य सलाहकार समिति के 5वें प्रतिवेदन का उपस्थापन करता हूं। मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य सलाहकार समिति के 5वें प्रतिवेदन पर अपनी सहमति प्रकट करता है। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि सदन कार्य सलाहकार समिति के 5वें प्रतिवेदन पर अपनी सहमति प्रकट करता है?

(स्वीकृत)

सहमति प्रकट की गई।

समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन

श्री परसराम मदेरणा। (अनुपस्थित)

याचिकाओं का उपस्थापन

श्री रामनारायण वर्मा (अनुपस्थित)

श्री अमीन खां (अनुपस्थित)

श्री बालचन्द्र आर्यवीर।

श्री बालचन्द्र आर्यवीर : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा से मैं निम्न याचिकाएं उपस्थापित करता हूं :—

1. कोटा जिले की अधूरी काचरी लिफ्ट को पूरा कराने तथा किसानों को मुआवजा अविलम्ब दिलाने विषयक,
2. नायब तहसील अन्ता, जिला कोटा के समीप के गांव, मांगरोल तहसील से हटाकर अन्ता नायब तहसील से जोड़े जाने विषयक,
3. कोटा जिले की राजस्व उप तहसील अन्ता को तहसील रूप में क्रमोन्नति विषयक,
4. कोटा जिले की पंचायत समिति अन्ता के काचरी तालाब की खुदाई करवा कर ट्यूबवैल खुदवाने विषयक, एवं
5. कोटा जिले की अन्ता (एन. टी.-पी. सी) से काचरी तक की स्वीकृत सड़क को पूर्ण निर्माण विषयक। (व्यवधान)

प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय में वृद्धि

श्री अध्यक्ष : श्री भैरोंसिंह शेखावत, सभापति, प्रवर समिति प्रस्ताव करेंगे।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : राजस्थान लोकायुक्त तथा उप लोकायुक्त (संशोधन) विधेयक, 1990 के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढ़ा दिया जावे।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि राजस्थान लोकायुक्त तथा उप लोकायुक्त (संशोधन) विधेयक, 1990 के प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढ़ा दिया जाए ?

(स्वीकृत)

अनुमति प्रदान की गई।

(2.00 म. प.)

विधायी कार्य

विधेयक का पुरःस्थापन

1. राजस्थान सिंचाई तथा जल विकास (संशोधन) विधेयक, 1991

श्री अध्यक्ष : प्रभारी मंत्री।

श्री विजयसिंह झाला (सिंचाई मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सिंचाई तथा जल-निकास (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति के लिए प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि राजस्थान सिंचाई तथा जल-निकास (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की जाय।

(स्वीकृत)

विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की गई।

श्री विजयसिंह झाला : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सिंचाई तथा जल-निकास (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री गंगाराम चौधरी। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य (विपक्ष) : प्रजातंत्र का गला घोटा जा रहा है।

2. राजस्थान साहूकार (संशोधन) विधेयक, 1991

श्री गंगाराम चौधरी (राजस्व मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान साहूकार (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति के लिए प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि राजस्थान साहूकार (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की जाय।

(स्वीकृत)

विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की गई।

श्री गंगाराम चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान साहूकार (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करता हूं।

3. राजस्थान सिविल न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 1991

श्री अध्यक्ष : श्री शांतिलाल चपलोत।

श्री शांतिलाल चपलोत (विधि राज्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सिविल न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति के लिए प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि राजस्थान सिविल न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की जाय।

(स्वीकृत)

विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की गई।

श्री शांतिलाल चपलोत : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राजस्थान सिविल न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करता हूं।

4. दण्ड प्रक्रिया संहिता (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1991

श्री अध्यक्ष : श्री शांतिलाल चपलोत।

श्री शांतिलाल चपलोत : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से दण्ड प्रक्रिया संहिता (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति के लिए प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि दण्ड प्रक्रिया संहिता (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की जाय।

(स्वीकृत)

विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की गई।

श्री शांतिलाल चपलोत : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से दण्ड प्रक्रिया संहिता (राजस्थान संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करता हूं।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री अध्यक्ष : राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद। श्री कालीचरण सराफ।

श्री कालीचरण सराफ (जौहरी बाजार) : अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा इस सदन में दिये गये अभिभाषण के प्रति उन्हें निम्नांकित रूप से धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाय।

"इस सत्र में एकत्रित हम, राजस्थान विधान सभा के सदस्यगण, राज्यपाल द्वारा इस सदन में दिये गये अभिभाषण के प्रति उनके आभारी हैं।" (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : + + +

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री कालीचरण सराफ : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में.. (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष): + + +

श्री कालीचरण सराफ : राजस्थान के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जायेगा राजस्थान विधान सभा के गौरवमयी इतिहास में पहली बार....(व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष): + + +

श्री कालीचरण सराफ : जिनकी इतिहास में कोई कहानी....(व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष): + + + (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ : विपक्ष में बैठते ही सदन की परम्परा भूल गये.... (व्यवधान)

कांग्रेस के एक माननीय सदस्य ने प्रेस कांफ्रेंस में....(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष महोदय पर भी आरोप लगाये गये ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि विपक्षी सदस्यों को यदि उनके मन में कुछ भी शर्म बाकी है....(व्यवधान)

खड़े होकर उनको क्षमा मांगी चाहिये। (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष): + + +

श्री कालीचरण सराफ : आज विपक्षी सदस्यों द्वारा... (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष) : कार्यवाही नहीं चलेगी।

श्री कालीचरण सराफ : कांग्रेस के खिलाफ....(व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष) : + + +

श्री कालीचरण सराफ : नेतृत्व में प्रदेश की सरकार....

अनेक माननीय सदस्य (विपक्ष) : + + + (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ : विकास का यही कारण था (व्यवधान) पिछले पांच सालों में मुख्य मन्त्री ने (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य (विपक्ष) : + + + (व्यवधान) + + +

श्री कालीचरण सराफ : कांग्रेस के शासन में (व्यवधान) और उनके मिलने पर···(व्यलधान) राजस्थान के गौनवमयी इतिहास को··· (व्यवधान) उस समय राज्य की वित्तीय स्थिति बड़ी गम्भीर थी।···· (व्यवधान)

डा. चन्द्रभान : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

अनेक माननीय सदस्य : + + +

+ + + अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

डॉ. चन्द्रभान : +++

श्री कालीचरण सराफ :....राज्य की वार्षिक योजना मंजूर की। जो मैंने आपके सामने....(व्यवधान)

डॉ. चन्द्रभान : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++

डॉ. चन्द्रभान : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++

श्री रामेश्वर दयाल यादव : +++ (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ :..भ्रष्टाचार को जड़मूल से समाप्त करने का जो संकल्प किया था उसमें काफी सफलता प्राप्त की है....(व्यवधान) वर्तमान सरकार ने आगे बढ़कर मुख्य मन्त्री को लोकायुक्त की परिधि में शामिल कराने का निर्णय लिया.... (व्यवधान)

अनेक माननीन सदस्य : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++

श्री महीपाल यादव : +++

अनेक माननीय सदस्य : नहीं, चलेगी।

श्री जगत सिंह दायमा : खाली करवायेंगे आपसे। (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ :....इस प्रदेश में ईमानदारी का वातावरण बनाया..(व्यवधान) इसके कारण प्रदेश में होने वाले भ्रष्टाचार पर रोक लगी, प्रशासन में भ्रष्टाचार कम हुआ। (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++ (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ : सरकार इस प्रकार की योजना बनायेगी जिससे अकाल का स्थायी हल ढूंढा जा सकेगा। (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++ (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ :....मुख्य मन्त्री के द्वारा प्रभावी ढंग से प्रयास करने के कारण 1084 करोड़ की योजना एवं 750 करोड़ रुपये की लिग्नाइट परियोजना को सरकार से, केन्द्रीय सरकार से स्वीकृति प्राप्त हुई। (व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : +++ (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ : बिजली की वर्तमान कमी को दूर करने के लिए 112 करोड़ रुपये की अतिरिक्त बिजली अन्तर्राज्यीय और केन्द्रीय परियोजनाओं से खरीदी जबकि पिछली सरकार ने कभी इसकी कोशिश नहीं की। कभी भी किसी भी वर्ष में....(व्यवधान) मैं धन्यवाद देना चाहूंगा मुख्य मन्त्रीजी को कि इस वर्ष जो

+++ शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री कालीचरण सराफ)

25 हजार कुओं को विद्युतीकृत करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था उसमें से 77 प्रतिशत लक्ष्य पूरा कर दिया गया है। (व्यवधान) उन्होंने प्रदेश में एक नयी योजना गांव अपना काम अपना शुरू की है। इस योजना के अन्तर्गत बिना किसी राजनैतिक भेदभाव के प्रत्येक विधायक के निर्वाचन क्षेत्र में 10 लाख रुपयों तक के निर्माण कार्य कराये जायेंगे····(व्यवधान) इतना ही नहीं इस कार्य का चयन भी वे ही लोग करेंगे। इस योजना के अन्तर्गत गांवों में काफी काम हो रहा है।

श्री जगतसिंह दायमा : +++

अनेक माननीय सदस्य : +++

श्री कालीचरण सराफ : अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस की सरकार ने नगरपालिका एवं नगर परिषदों के चुनावों को कराने की कई बार घोषणायें की मगर पूरी नहीं की। हमारी सरकार ने सत्ता में आते ही 147 नगर पालिकाओं और नगर परिषदों के चुनाव करवाये····(व्यवधान)

श्री नत्थी सिंह : अध्यक्ष महोदय, जरा विरोधी दल के नेता को सुनिए (व्यवधान)

श्री मोहम्मद माहिर आजाद : ऐसा नहीं करोगे। प्रिविलेज मोशन मूव कर दूंगा आपके खिलाफ। तरीके से बात करो।

श्री अध्यक्ष : माननीय कालीचरणजी, दो मिनट बैठिए।

श्री हरिदेव जोशी (नेता प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदय, कल राज्यपाल महोदय यहां तशरीफ लाये थे, उस समय कुछ प्रदर्शन हुआ था, एक प्रकार की नाराजगी थी। डेमोक्रेसी में नाराजगी जाहिर की जाती है। यह पहला मौका नहीं था। भैरोंसिंहजी जब विरोधी पक्ष के नेता थे और सुखदेव प्रसाद जी गवर्नर थे, उस समय इससे भी ज्यादा उग्र प्रदर्शन हुआ था। गवर्नर साहब का चश्मा गिर गया था, उनका पैन छीन लिया गया था, कपड़े फट गये थे और भैरोंसिंहजी को भी अपनी धोती यहां बदलनी पड़ी थी।

अनेक माननीय सदस्य : असत्य। असत्य।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। कृपया शांति रखिये।

श्री हरिदेव जोशी : पहली मर्तबा इस विधान सभा में ऐसा मौका आया जब विरोधी पक्ष को एक प्रकार का प्रदर्शन करना पड़ा। वह इसलिए क्योंकि एक बहुत बड़े पैमाने के ऊपर अनैतिक ढंग से फ्लोर क्रासिंग हुआ और स्पेरिंग हुआ, नई सरकार बनी। इसको जो सरकार में बैठे हैं, वह उचित समझ सकते हैं। जो सरकार से बाहर है अथवा आम जनता है, वह इसको अनैतिक मानती है। हम ऐसा समझते थे कि सरकार में बैठे हुए साथी इसकी गंभीरता को महसूस करेंगे। मगर मुख्य मन्त्रीजी की ओर से आज एक चुनौती भरी चिट्ठी मुझे मिली जिसमें उन्होंने लिखा था कि जिन लोगों ने ऐसा किया है उनके खिलाफ कार्यवाही की जाये। मैंने उसको कारण बताकर

+++ अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री हरिदेव जोशी)

जवाब दे दिया था। आज तक, अभी तक लोग अपना विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और मैं ऐसा समझता हूं कि ट्रेजरी बैंचेज अपने बहुमत के ऊपर आमादा है और यह सोचते हैं कि वह सब कुछ कर सकते हैं क्योंकि उनके पास सोर्स है। मैं समझता हूं राजनीति में नैतिकता भी एक चीज है और उसका प्रयोग किया जाना चाहिए।

श्रीमती उजला अरोड़ा : आज ही याद आयी।

श्री महावीर प्रसाद जैन : 1967 में क्या हुआ था।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री महावीर प्रसाद जैन : विरोधी पक्ष ने हमारे पैसे····

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री महावीर प्रसाद जैन : आपने जिस समय····

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री महावीर प्रसाद जैन : क्या जुल्म और ज्यादती हुई। उत्तर प्रदेश और दिल्ली में जो कुछ हुआ····

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री हरिदेव जोशी : इसलिए इस बहरे बहुमत को सुनने के लिए हमने तय किया है कि हम सदन के अन्दर भूख हड़ताल कर रहे हैं। आज से अन्न और जल नहीं लेंगे, जब तक कि सम्मानपूर्वक इस बारे में कोई बात नहीं हो जाती है। धन्यवाद।

श्री नत्थी सिंह : अध्यक्ष महोदय, जो विरोधी पक्ष के नेता ने कहा है और जो + + + हम इसके समर्थन में भूख हड़ताल पर और धरने पर बैठते हैं।

(विपक्षी दल के सदस्य सदन के प्रांगण पर बैठ गये)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : कोआपरेटिव में + + + नहीं चलेगी।

श्री मदनलाल सैनी : नत्थी सिंह जी। कोआपरेटिव में कितनी + + + की है, जवाब दें।

श्री जगतसिंह दायमा : खाद में मिलावट भी नहीं चलेगी, हल्दी काण्ड भी नहीं चलेगा। जाने कितने काण्ड चलाये हैं और फिर बात करते हैं + + + नैतिकता की बात करते हो।

श्री अध्यक्ष : मुख्य मन्त्रीजी।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : अध्यक्ष महोदय,····

अनेक माननीय सदस्य (सत्ता पक्ष) : अब भजन करो भजन।

श्री अध्यक्ष : कालीचरण सराफ।

श्री डूंगरराम पंवार : + + + अब याद आ रहा है। यह भगवान के भक्त कैसे हो गये।

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री रामप्रताप कासनिया : बड़ी देर बाद भगवान याद आये।

श्री कालीचरण सराफ : मैं यह कह रहा था, उन्होंने 19 बार यह घोषणा की कि नगरपालिका और नगरपरिषदों के चुनाव करवायें जायेंगे। उनका प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं था, उन्होंने नगरपालिका और नगरपरिषदों के चुनाव नहीं करवाये परन्तु मैं धन्यवाद देना चाहूंगा वर्तमान सरकार को कि उन्होंने सत्ता में आते ही 145 नगरपालिका और नगरपरिषदों के चुनाव राजस्थान में करवाये और हमें इस बात का भी गर्व है कि राजस्थान ऐसा पहला राज्य है, जहां नगरपालिका नियमों में संशोधन कर महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत स्थान आरक्षित वर्गों का निर्धारण किया गया और चुनाव कराये गये। मैं राज्य सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि ऐसी नगरपालिकाओं एवं नगरपरिषदों के चुनाव, जो इन लोगों के कोर्ट में जाने के कारण, न्यायिक अड़चनों के कारण नहीं हो पाये, उनकी अड़चनों को दूर करके उनको भी शीघ्र करवाया जाना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, पिछली कांग्रेस की सरकार ने सहकारी समितियों के चुनाव भी कई वर्षों से नहीं करवाये थे। कार्यकाल समाप्त होने के बाद भी संचालक मण्डल कार्यरत रहते थे जिसके कारण सहकारिता आन्दोलन में शिथिलता आ गई थी। मैं धन्यवाद देना चाहूंगा वर्तमान सरकार को कि राज्य सरकार ने कानून में संशोधन किया और यह व्यवस्था की कि चुनाव अवधि समाप्त होने के पूर्व यदि चुनाव नहीं हो सके, वहां पर अगले चुनाव तक या एक वर्ष के लिए, जो भी पहले हो, प्रशासक लगा दिये जायें। इस व्यवस्था के कारण भविष्य में सहकारी समितियों के चुनाव स्थगित नहीं किये जा सकेंगे। मुझे खुशी इस बात की है कि घोषणा के अनुरूप ग्राम सेवा अधिकारी समितियों के चुनाव करवा दिये गये हैं और अब बाकी चुनाव भी हो जायेंगे। इस संशोधन से निश्चिय रूप से प्रदेश में सहकारिता आन्दोलन में आई शिथिलता समाप्त हुई है और गतिशीलता आयी है। मैं मुख्य मन्त्रीजी को इस बात के लिए भी बधाई देना चाहता हूं कि उनके अथक प्रयासों के कारण··· (व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : भूख हड़ताल पर बैठो और रामधुनी करो।

श्री कालीचरण सराफ : विश्व बैंक ने असिंचित क्षेत्रों में रहने वाले किसानों को लाभान्वित करने के लिए एकीकृत जल संग्रहण विकास योजना स्वीकृत की है। तकनीकी शिक्षा के लिए 45 करोड़ रुपये की राशि विश्व बैंक ने स्वीकृत की है। इतना ही नहीं इन्दिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में वृक्षारोपण करने के लिए जापान सरकार ने 160 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। हमें खुशी इस बात की है कि आज तक प्रदेश के इतिहास में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा इतनी बड़ी राशि कभी भी स्वीकृति नहीं गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बधाई देना चाहूंगा राज्य सरकार को कि राज्य की पुलिस ने सीमा क्षेत्र में तत्परता और मुस्तैदी दिखाई है जिसके कारण 54 करोड़ रुपये से भी अधिक मूल्य का तस्करी का सामान पकड़ा गया, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। मैं मुख्य मन्त्रीजी को इस बात के लिए भी

(श्री कालीचरण सराफ)

धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने पुन: अन्त्योदय योजना इस प्रदेश में प्रारम्भ की है। सन् 1977 से 1980 तक जनता शासन के दौरान इस योजना की समूचे देश में भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी। पुन: इस योजना के लागू होने से प्रदेश के निर्धनतम व्यक्तियों को लाभ मिलेगा। मैं इस बात के लिए भी राज्य सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा कि अकुशल मजदूरों की जो न्यूनतम मजदूरी 14 रुपये थी उसको 22 रुपये कर दिया गया है।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात के लिए राज्य सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि राजस्थान के इतिहास में पहली बार केन्द्र सरकार से बातचीत करके एक हजार इकहत्तर किलोमीटर मीटर गेज की लाइन को ब्राड गेज की लाइन में परिवर्तित करने का जो प्रयास राज्य सरकार ने किया था उसको भी भारत सरकार की मन्जूरी मिल गयी है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि एक साल के छोटे-से अन्तराल में शेखावत सरकार ने विकास की जो योजनाएं बनायी हैं, जो प्रयास किये हैं केन्द्र सरकार से पैसा लेने के, उनसे निश्चित रूप से प्रदेश का बहुमुखी विकास होगा। मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन के सभी माननीय सदस्य महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर सर्वसम्मति से धन्यवाद प्रस्ताव पारित करने की कृपा करें। धन्यवाद।

घोषणा

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद हेतु समय का बंटवारा

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों को सूचित करता हूं कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद के लिए लगभग 17 घण्टे उपलब्ध हैं। उपलब्ध समय में सरकार द्वारा उत्तर दिये जाने का समय भी सम्मिलित है। मैं विभिन्न पार्टियों के लिए समय का बंटवारा इस प्रकार करता हूं। भारतीय जनता पार्टी-7 घण्टे 10 मिनट, कांग्रेस (आई) पार्टी-4 घण्टे 15 मिनट, जनता दल-2 घण्टे 10 मिनट, सी. पी. ए. 10 मिनट, निर्दलीय-43 मिनट।

इस प्रस्ताव के समर्थन में श्री शिवकिशोर सनाढ्य।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री शिवकिशोर सनाढ्य (उदयपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण 22 तारीख को पढ़ा गया। इस पर कालीचरण जी सराफ ने जो यह प्रस्ताव रखा है मैं उसका समर्थन करता हूं और सदन के माननीय सदस्यों से यह अपील करता हूं कि इस धन्यवाद प्रस्ताव को पास कर इसे राज्यपाल महोदय को पहुंचायें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सरकार और खासकर राजस्थान के मुख्य मन्त्री और उनके मन्त्रिमण्डल की उपलब्धियों का, जो उनकी रही हैं, समर्थन करता हूं। 40 साल के शासन के बाद जिस समय शासन इनको मिला उस समय खजाना खाली था, राजस्थान की जो योजनाएं थीं उन सारी योजनाओं को गलत तरीके से चलाया गया कि राजस्थान का विकास रुक गया, राजस्थान का विकास नहीं हो सका।

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

आवश्यकता इस बात की थी कि उन किसानों के बारे में, जिन्होंने आजादी की लड़ाई को लड़ा था, उसमें जिनका सबसे बड़ा योगदान रहा, सोचा जाता, लेकिन हुकूमत करने वाले जो लोग थे उन लोगों ने राजस्थान के किसानों के सन्दर्भ में कभी इस बात को नहीं सोचा। वन के जो लोग थे, जो वनवासी थे, वन क्षेत्रों के लोग थे, जनजाति क्षेत्रों के लोग थे उनके विकास के सन्दर्भ में कभी नहीं सोचा गया और राजस्थान उन क्षेत्रों में पिछड़ा होता चला गया। उनके नाम पर केन्द्र से पैसा तो आया लेकिन वह पैसा उन क्षेत्रों में कभी नहीं लगा। वह पैसा, सम्पूर्ण पैसा उन लोगों की जेब में गया जो शासन में बैठे हुए थे। किसानों के सन्दर्भ में कोई ऐसी योजना नहीं बनी जिसका लाभ किसानों को होता, उन वन क्षेत्रों के लोगों को होता, उन वनवासियों को होता। उनकी शिक्षा नहीं हुई, उनकी चिकित्सा नहीं हुई। इसलिए राजस्थान सरकार ने अभी-अभी अपनी नयी योजनाएं बनायी हैं जिनका प्रतिपादन, जिनका लक्ष्य राज्यपाल के अभिभाषण में प्रदर्शित होता है। इससे लगता है कि राजस्थान सरकार, राजस्थान के मुख्य मन्त्री भैरोंसिहजी के सामने केवल दो ही विकल्प थे। उनके मन की जो मंशा थी वह यह थी कि गांवों का उत्थान हो। उनके मन में यह संकल्प था कि भ्रष्टाचार दूर हो। भ्रष्टाचार दूर करने की दृष्टि से, गांवों का उत्थान करने की दृष्टि से, क्योंकि वे एक किसान के घर से आने वाले हैं जिन्होंने स्वयं अपने हाथों से खेती की हो, जिन्होंने इस बात को समझा हो कि किसान की पीड़ा क्या है, किसान का दर्द क्या है, इस तरह की योजना किसानों के लिए रखी है।

आज वनों के लिए योजना बनायी गयी है। वनों का विकास नहीं हो सका, वनों की निर्मम तरीके से कटाई की गयी। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे मेवाड़ के क्षेत्र में अरावली की पहाड़ियों के बीच में काफी वन थे, लेकिन उनकी जिस तरह से कटाई प्रारम्भ हुई उसकी वजह से राजस्थान में शासन में बैठे हुए जो लोग थे उन्होंने उनका दोहन ठीक तरह से नहीं किया, उनकी कटाई ठीक तरह से नहीं की, वनों का विकास ठीक तरह से नहीं किया। लेकिन आज वर्ल्ड बैंक की स्कीम के माध्यम से अरावली की सम्पूर्ण पहाड़ियों को, उन क्षेत्रों को (व्यवधान) उन क्षेत्रों का विकास करना चाहते हैं, यह राज्यपाल के अभिभाषण से व्याप्त होता है कि हमको राजस्थान के अन्दर उन जनजातियों के बारे में; उन क्षेत्रों के बारे में, उन पहाड़ियों के बारे में सोचना होगा जो नंगी हो गयीं। पानरवा का जंगल, अरावली की पहाड़ियां हरी-भरी दिखती थीं। मेवाड़, उदयपुर के क्षेत्र में, जिसका अपना इतिहास, उज्ज्वल इतिहास रहा है, संसार का पर्यटक आता था, लोग आते थे। उन नीतियों के कारण वे जंगल कट गये, उन जंगलों को लोग खा गये। जंगलों को वे लोग खा गये जिन लोगों के बाप-दादाओं ने वे जंगल लगाये थे बल्कि वे खा गये जो शासन में बैठे हुए लोग थे, जिन लोगों ने 40 साल तक राजस्थान में राज किया था। उन लोगों के दलाल और वे लोग उन जंगलों को खा गये। लेकिन राजस्थान की वर्तमान सरकार ने उन जंगलों को आच्छादित करने के लिए, उन जंगलों को लगाने के लिए वर्ल्ड बैंक के माध्यम से इस तरह की योजना तैयार की

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

है कि उससे वे जंगल हरे-भरे हो सकेंगे। यदि जंगल हरे-भरे होते हैं तो आप यह देखेंगे कि मेवाड़ के उस क्षेत्र में पर्यटक आयेंगे जिस मेवाड़ का, जिस राजस्थान का इतिहास इतना उज्जवल रहा है। मैं कहना चाहता हूं, मैं निवेदन करना चाहता हूं सदन के माननीय सदस्यों से कि इस राज्यपाल के अभिभाषण को देखें कि इस अभिभाषण में किस तरीके से पर्यटन के नाम पर जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, उदपुर और जयपुर इन सारे क्षेत्रों की पर्यटन की दृष्टि से विकास की योजनाएं तैयार की हैं। जो पर्यटक कश्मीर जाता था वह इन योजनाओं के कारण राजस्थान आयेगा। कश्मीर की गलत नीतियां रहीं केन्द्र सरकार की। कांग्रेस की सरकार की जो नीतियां रहीं उनकी वजह से आज कश्मीर जल रहा है, आज आसाम जल रहा है। आज वहां स्थिति ऐसी पैदा हो गयी है कि वहां पर्यटक नहीं जा रहा। अब वह पर्यटक राजस्थान की तरफ आकर्षित होगा। पर्यटन की दृष्टि से अगर इनका विकास किया जाता है तो राजस्थान को विदेशी मुद्रा भी मिलेगी और राजस्थान के अन्दर पर्यटक भी आयेगा। इस दृष्टि से जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर और जयपुर की जो योजनाएं बन रही हैं उनके लिए मैं धन्यवाद देना चहता हूं राजस्थान के मन्त्रिमण्डल को कि उन्होंने इस तरह की योजना बनाकर राजस्थान के अन्दर पर्यटन की दृष्टि से सुविधा दी है।

मैं कहना चाहता हूं इस सदन की जानकारी के लिए कि चिकित्सा की दृष्टि से चिकित्सालयों में आज तक हर जगह से यह आवाज आती रही कि डाक्टर्स के अन्दर फ्रस्ट्रेशन है। पिछली बार जब कांग्रेस की सरकार थी उस समय मेडिकल कालेज के डाक्टर्स को स्ट्राइक करनी पड़ी, उनको हड़ताल करनी पड़ी। डाक्टर्स हड़ताल पर गये, उनकी मांगें नहीं सुनी गयीं। दोनों तरफ से जिस तरह का संवाद चलना चाहिए था वह नहीं किया गया। मेडिकल के लेक्चरर्स से फ्रस्ट्रेशन था, डाक्टर्स में फ्रस्ट्रेशन था। उन लोगों की डी. पी. सी. नहीं होने की वजह से कभी भी ठीक तरह से प्रमोशन नहीं हो सके। उसमें भी इस बात का ध्यान रखा जाता था कि किस डॉक्टर का प्रमोशन हो। मैं कहना चाहता हूं राजस्थान के चिकित्सा मंत्री के लिए कि राजस्थान में जब चतुर्वेदी जी ने इस डिपार्टमैण्ट को सम्भाला, माननीय चतुर्वेदी जी ने सबसे पहली बार राजस्थान में सभी डाक्टर्स को लगाने की सोची कि कोई भी अस्पताल खाली न रहे। गाँवों के लोग डेपुटेशन कराके शहरों में बैठे रहते थे, बड़े-बड़े दवाखानों में बैठे रहते थे जहां पर उनको अधिक आमदनी होती थी। लेकिन चिकित्सा मंत्री ने सारी जगह डाक्टर्स को लगाया, डेपुटेशन समाप्त कर दिया। रिश्वत लेकर या बेईमानी से डेपुटेशन से जिन जगहों को भरा जाता था उनको समाप्त किया। इस तरीके से चिकित्सा विभाग से बेइमानी समाप्त की गयी। उसके बाद प्रमोशन किये गये। गांवों की तरफ चिकित्सक जायें, इस बात के लिए चतुर्वेदी जी के जमाने में ही उन लोगों को बाध्य किया गया। आज सब जगह चिकित्सकों की व्यवस्था की जा रही है। यह जो मेवाड़ का क्षेत्र रहा, जो गरीबों का क्षेत्र रहा, जो वनवासियों का क्षेत्र रहा।

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

आज आवश्यकता इस बात की है कि वहां पर जो हजारों लोग टी. बी के मरीज हैं उनको पूरा न्यूट्रेशन का खाना नहीं मिलता है, उन लोगों को पूरी चिकित्सा सुविधा नहीं मिलती है, दवाइयां नहीं मिलती हैं, उन क्षेत्रों के लिए विशेष चिकित्सा की आवश्यकता है। मैं राजस्थान सरकार से और इस सदन से निवेदन करूंगा कि वह जब यह धन्यवाद प्रस्ताव पास करे तब वह यह संशोधन लाये कि जो क्षय रोग से पीड़ित जो बनवासी हैं उनके लिए एक विशेष योजना बनाई जाय, न्यूट्रेशन को उन लोगों के लिए विशेष योजना बनाई जाय और उन गरीबों को राहत पहुंचायी जाय।

मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं इस सदन से कि आने वाले समय में जब हम इस पर बहस करें तो हम इस बात का ध्यान रखें कि आयुर्वेद के कालेज तो खुलें, आयुर्वेद संस्थान तो खुले, आयुर्वेद के हास्पिटल तो खोले गए पर बिना किसी योजना के खोल दिए गए, केवल राजनीतिक आधार पर खोल दिए गए लेकिन आज तक उन आयुर्वेद के औषधालयों के अन्दर दवाइयां नहीं हैं। मैं राजस्थान की सरकार को कहना चाहता हूं कि वहां पर अगर कोई वैद्य दवा भी लिख दे तो गांव के अन्दर कोई दवाई की दुकान नहीं होती है। इस तरह से आयुर्वेदिक संस्थान जो केवल राजनीनिक आधार पर खोले गए हैं उनके कारण से उनका उपयोग नहीं हो पा रहा है। राजस्थान में 4 रसायन शालाएं काम कर रही हैं उनके अधिक से अधिक दवाइयां बनाई जायं और यह जो नियमों में शिथिलन है इस शिथिलन को दूर किया जाय उसके बाद में उन आयुर्वेद औषधालयों के अन्दर दवाइयां पहुंचायी जायं ताकि यूनानी दवाखानें, आयुर्वेद के दवाखानें और सारे चिकित्सालय अगर काम करने लग जायं तो लोगों को आसानी से चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण को पढ़ने के बाद मैं कहना चाहूंगा कि जो विरोध पक्ष के सदस्य हैं उन लोगों से भी कहना चाहूंगा और विरोध पक्ष के नेता से भी कहना चाहता हूं कि वह इस अभिभाषण को देखें और इस अभिभाषण में दी हुई चुनौतियों को जो राजस्थान की हुकूमत करना चाहती है, जो गांवों का चिन्तन करना चाहती है, आप तो केवल गांवों की बात कह कर रह गये, केवल उस किसान की बात को कह कर रह गए, पर आप देखेंगे कि जो वह गरीब किसान था, जो गांवो की तरफ करोड़ों रुपया गांवों के विकास में लगाया जाना चाहिए था वह सम्पूर्ण पूंजी आज गांवों से शहरों की तरफ लगती चली गई और इस तरह से यदि वहां पर उद्योग-धंधे नहीं पनपे तो वह किसान हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगा। वह जो किसान है उसके लिए आवश्यकता आज इस बात की है कि उसके क्षेत्र में उद्योग-धंधे भी पनपें। इस लिए राजस्थान सरकार ने उद्योग-धंधों की दृष्टि से इस बात पर विचार किया है कि और उद्योगों की जो नई नीति बनाई गई है उसकी वजह से राजस्थान में जो प्रवासी राजस्थानी हैं, तो उद्योगों में लगे हुए है वह प्रवासी राजस्थानी राजस्थान में अगर उद्योग लगाते हैं

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

तो राजस्थान के लोगों, को काम मिलेगा, उनकी वजह से उन्हें रोटी मिलेगी और वह जो पिछड़े हुए क्षेत्र हैं उनके अन्दर छोटे छोटे उद्योग धंधे पनपेंगे उनकी वजह से किसानों की स्थिति सुधरेगी, किसान उनकी वजह से पनप सकेंगे, किसान आगे बढ़ सकेंगे। इस तरीके से जो हमारी सरकार है वह चाहती है कि गांवों का विकास हो, किसानों को पीड़ा दूर हो।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस उद्बोधन के अन्दर जो आज तक विद्यालय थे, जो लड़के राजस्थान के थे वे पढ़ते रहे केवल पटेलों के झोपड़ों में, वे पढ़ते रहे पेड़ों के नीचे जहां पर उनको गन्दगी महसूस होती थी, पहली बार उनके लिए योजना बनाई गई है वह योजना है राजस्थान में शिक्षा के लिए इतने भवनों का निर्माण किया जायेगा। मैं याद दिलाना चाहता हूं 1977 में भी ईसी तरीके से एक योजना बनाई गई थी और उस "फूड फार वर्क" योजना के अन्दर जिस तरीके से विद्यालयों के नींवें पड़ी थीं और जिस तरह से विद्यालय भवन बने थे उसी तरीके से विद्यालय भवन बनाने की योजना है ताकि पढ़ने वाले विद्यार्थियों को ठीक तरह से छत सुलभ हो सकेगी। उन लोगों को विद्यालयों के माध्यम से ठीक तरह से सुविधा मिलेगी तो वह आगे बढ़ सकेंगे। इसलिए शिक्षा की दृष्टि से विद्यालय भवन बनाने की जो योजना है उसके तहत एक-एक विद्यालय को भवन बनाने के लिए खास कर आदिवासी क्षेत्रों के अन्दर लाख-लाख रुपया दिया गया है उनकी वजह से शिक्षा का विकास हो सकेगा। इस संकल्प से लगता है कि राजस्थान सरकार शिक्षा के क्षेत्र में काम करना चाहती है। इसलिए मैं राजस्थान के मुख्य मन्त्रीजी को याद दिलाना चाहता हूं कि उन्होंने ब्लैक बोर्ड आपरेशन के अन्दर भ्रष्टाचार मिटाने की दृष्टि से जो कार्यवाही करवाई वह कार्यवाही केवल कुछ नीचे के लोगों, कुछ छोटे लोगों के खिलाफ प्रारम्भ की गई है। मैं कहना चाहता हूं कि इसमें जो लोग लिप्त थे, जिन लोगों की वजह से यह बेइमानियां हुई, उसमें जो लोग लिप्त थे उन राजनीतिक लोगों को भी नहीं बख्शा जाना चाहिए, वह जो जिम्मेदार मंत्री थे या जिम्मेदार लोग थे उन लोगों को भी दृढ़ता के साथ, राजस्थान की जनता की हुकूमत है, इस जनता की हुकूमत को राजस्थान के लोगों के सामने जो करप्शन में लिप्त थे उन लोगों को उजागर करना चाहिए।

मैं यह भी आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान में केवल यह ब्लैक बोर्ड आपरेशन था जिसमें भ्रष्टाचार नहीं हुआ पर जो डाइट का सामान खरीदा गया पंचायत समितियों के माध्यम से और जिला परिषदों के माध्यम से उसमें जिस तरह का भ्रष्टाचार हुआ है उसे सम्पूर्ण भ्रष्टाचार को राजस्थान की इस संवेदनशील सरकार को जो चाहती है उसे उजागर करना चाहिए।

मैं यह भी चाहता हूं कि आपने कहा या नहीं, राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण में भ्रष्टाचार उन्मूलन की बात कही है। भ्रष्टाचार उन्मूलन के अन्तर्गत आपने कुछ मुद्दों को तो उठाया है लेकिन आपने

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

केवल कुछ मुद्दों को लेकर उस भ्रष्टाचार की बात को समाप्त कर दिया है। मैं याद दिलाना चाहता हूं जो राजस्थान के मुख्य मन्त्री हैं उनको, कि इसी सदन में बैठकर आपने कई लोगों के ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। मैं कहना चाहता हूं कि कि उदयपुर से आने वाले पूर्व विधायक श्री गुलाबचन्दजी कटारिया थे उन्होंने 1977 से लेकर 1980 तक, कहा था कि जिस परिवार से सम्बन्धित, राजस्थान के पूर्व मन्त्री श्री माणिक्यलाल जी वर्मा थे, श्री माणिक्यलाल जी वर्मा मेवाड़ की जनता का प्रतिनिधित्व करते थे वह और रूपानसिंहजी ने, जमीन दी थी छात्रावास के लिए उस जमीन का दुरुपयोग किया गया और श्री शिवचरणजी माथुर जब राजस्थान के मुख्य मन्त्री होते थे उस जमीन को बेच दिया गया। मैं याद दिलाना चाहता हूं उस बात को कि राजस्थान में जिस तरह से जमीनों के घोटाले हुए हैं, जिस तरीके से जमीनों में दलाली हुई है, जिस तरह से संस्थान की जमीन कांग्रेस के शासन में बेच दी गई उन लोगों की भी आप जांच करवायें और जो भी ऐसे लोग हैं जो जमीनों में लिप्त हैं, आज राजस्थान में जमीनों के भाव इतने बढ़ गए हैं, उस जमीन के सन्दर्भ में जो दलाली हुई है, जो बेइमानियां हुई हैं और जिस तरह से करोड़ों रुपयों की सरकारी जमीन राजस्थान में प्रभावशाली लोगों ने दबा ली है जब आप विरोध में थे तब आप उन लोगों की आलोचना करते रहे, राजस्थान से जो माननीय सदस्य थे जो इस विधान सभा में आते रहे हैं उन उन लोगों ने सदैव इस + + + के खिलाफ, जिन लोगों ने भूमियां + + + सरकारी जमीन दबा ली और सरकारी जमीनों के मालिक बन बैठे उन लोगों के खिलाफ आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई, राजस्थान की इस हुकूमत को चाहिए कि उन ऐसे सम्पूर्ण लोगों को राजस्थान की जनता के सामने + + + करके खड़ा कर दे और सजाएं दे तब जाकर आने वाले समय में किसी की हिम्मत नहीं होगी, किसी की ताकत नहीं होगी वह इस तरह से सरकारी भूमि दबाकर के लोगों को बेच-बेच कर के वह भ्रष्टाचार को आगे बढ़ाते रहे।

मैं इसी सन्दर्भ में कहना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार का अगर उन्मूलन हम चाहते हैं तो भ्रष्टाचार के जिन-जिन लोगों के ऊपर आज तक आरोप लगते रहे वह विधान सभा की कार्यवाही से निकाल कर उन लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाय, जेल की सींखचों में बन्द किया जाय अगर राजस्थान से आप भ्रष्टाचार निकालना चाहते हैं तो यह भ्रष्टाचार निकल सकेगा।

मैं यह भी सदन के नेता से चाहता हूं कि आज तक जिन लोगों की वजह से उन भ्रष्टचारियों को संरक्षण मिलता रहा जो शासन के उच्च पदों पर बैठे रहे वह चाहे राज्याधिकारी थे चाहे वह मन्त्री थे जब तक उन सब लोगों के खिलाफ खुली इन्क्वायरी नहीं होगी, उनकी जांच नहीं होगी तब तक इस देश से भ्रष्टाचार खत्म

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किये गये।

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

नहीं हो सकता राजस्थान की सरकार अगर भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहती है तो बहुत सख्ती के साथ, कड़ाई के साथ, मैं बधाई देना चाहता हूं राजस्थान के मुख्यमंत्री को और उनके मंत्री मण्डल के सदस्यों को कि उन्होंने कुछ सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगने पर उनको सजाएं दी, उनके नाम लिखे गये हैं उनके खिलाफ कार्यवाहियां चल रही हैं लेकिन केवल इतना मात्र आवश्यक नहीं है। सरकारी आदमी जो काम करता है वह किनके इशारे पर? उन पोलीटिशन्स के इशारे पर काम करता है वहां बैठकर के जो इशारा देते हैं उनके आधार पर काम करता है इसलिए उनकी गहराई में जाना चाहिए और उसके बाद ऐसे जो पोलीटिशन्स रहे, ऐसे जो मंत्री रहे, ऐसे जो नेता रहे, उन नेताओं के खिलाफ जब तक कार्यवाही नहीं की जाएगी तब तक भ्रष्टाचार की गंगा निरन्तर बहती रहेगी।

मैं यह भी कहना चाह रहा हूं, इस भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में आप जांच कीजिएगा कि कितना रुपया उन वनवासी क्षेत्रों के लिए केन्द्र से आया और उसका कितना उपयोग हुआ। आज तो राजस्थान की हुकूमत यह कह सकती है क्योंकि उसने दोनों को कम्पेयर करके देखा है। जुलाई में यहां पर बाढ़ आई थी और बाढ़ आने पर राजस्थान में जिस तत्परता से काम हुआ, जिस तत्परता से प्रशासन दौड़ा चला गया चाहे वह चिकित्सा की दृष्टि से चिकित्सा मंत्री गये हों, बाढ़ की दृष्टि से बाढ़ मंत्री गये हों, मुख्य मंत्री गए हों, लेकिन जुलाई में आने वाली बाढ़ में वहां के लोगों के दुःख दर्द को उनकी तकलीफों को राजस्थान की हुकूमत ने जिस तरीके से गम्भीरता से लिया, संवेदनशीलता से लिया। लेकिन पहले भी बाढ़ आई है, पहले भी अकाल पड़े हैं और उन अकालों में, उन बाढ़ों के अन्दर किसी तरह से रुपया तो आया लेकिन भ्रष्टाचार हुआ, बेईमानी हुई और उस रुपए को जिन गरीबों तक पहुंचना चाहिए था वह रुपया नहीं पहुंचा। एक जांच कमेटी बनाई जाय और मालूम किया जाए कि कौन लोग भ्रष्ट थे। मुझे याद है, मैं उस समय जयपुर में था जिस समय बाढ़ आई। चांदपोल का बाजार है यह रेत से ढक गया और उस रेत को हटाने के लिए जिन ठेकेदारों को, जिन राजनैतिक लोगों को प्रश्रय दिया गया वह उस समय सदन के सदस्य थे, आज वह सदन के सदस्य नहीं हैं। लेकिन आप अगर अपनी फाईलों को उठाकर देखेंगे तो उन लोगों के खिलाफ जिन्होंने बाढ़ के नाम पर करोड़ों रुपए की बेईमानी की है और अपने घर भर लिये। बिजली के नाम पर जो बिजली की चोरी की, जिनके कारखानों में बिजली की चोरियां की गई, ऐसे जो राजनेता हैं, जो भ्रष्ट थे कांग्रेस के लोग थे उनके खिलाफ जब तक कार्यवाही नहीं की जाएगी तब तक भ्रष्टाचार उन्मूलन का आपका सपना पूरा नहीं हो सकता और यह आवश्यक है कि इन सारी जांचों को किया जाए। अकाल राहत के नाम पर करोड़ों रुपया आया लेकिन किनको अकाल राहत मिली? किन लोगों को, किन गरीबों को वह अकाल राहत का

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

पैसा पहुंचा। वह अकाल का पैसा पहुंचा उन लोगों को जो शासन में बैठे हुए लोग थे उन मन्त्रियों को, उन राजनेताओं को जो क्षेत्र से आते थे। सड़कें बनाई गई और बाद में कह दिया गया कि पानी में बह गई। कितने दिन तक यह भूला पड़ता रहा है। आप जाकर के देखिएगा उस कोटड़ा के क्षेत्र में। मैं अभी जनजाति विकास मंत्री के साथ में झाड़ौल के क्षेत्र में गया था। मैंने उस झाड़ौल क्षेत्र में देखा कि करोड़ों रुपया जहां पर सड़कें बनाने के लिए आया लेकिन आज भी बरौही। जो गांव है, जो पंचायत है चार महीने तक वह लोग उसके मध्य में रहते हैं जहां पर कि पानी के दिनों में वह आ नहीं सकते। कोई सड़क नहीं है वहां पर, कोई चिकित्सालय नहीं है किसी तरह का वहां। मैं राजस्थान की हुकूमत से निवेदन करना चाहता हूं कि उसकी जांच करें कि यह सड़कों का पैसा आया था कहां गया? यह बिजली का पैसा आया था कहां गया, यह इरिगेशन का पैसा आया था, कहां गया। आज उनकी कोठियां बन गई। इनके भवनों को देखिएगा। यह लोग क्या थे आजादी के पहले और 1947 के पहले जो लड़ने वाले लोग थे, जिन्होंने इस देश के लिए बलिदान किया था वहीं लोग इतने भ्रष्ट हो जाएगें, इतने बेइमान हो जाएगें इस बात की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

आज भी जयपुर के आस-पास की जो जमीनें हैं किन प्रभावकारी लोगों ने उन पर दखल कर रखा है, उन सरकारी जमीनों को दाब रखा है उसकी जांच की जाए और केवल जांच ही नहीं की जाए उन्हें सजा दी जाए उसके बाद ही राजस्थान से भ्रष्टाचार दूर हो सकता है।

मैं कहना चाहता हूं राज्यपाल के अभिभाषण के अन्दर जो संकल्प शक्ति झलकती है आपकी कि हम भ्रष्टाचार का उन्मूलन करके रहेंगे तो आपको चाहिए कि केवल आज नहीं आने वाले समय में, जो बीता हुआ समय हैं, उन सारे लोगों की फाइलें भी देखें और उसके बाद उस भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो सकेगा। बाकी तो आज भी वह लोग जो भ्रष्टाचार कर चुके हैं, जो बेईमानियां कर चुके हैं वह हंस सकते हैं उन्हें लज्जा ज्ञात होनी चाहिए। जब उन पर आरोप लगते हैं उनको हंसी आती है। जो पैसा खा गए गरीबों के नाम पर, जनजाति क्षेत्रों के नामपर उन लोगों के लिए लज्जा ज्ञात होनी चाहिए। वह उनका प्रतिनिधत्व करते हैं लेकिन वह सही प्रतिनिधित्व नहीं करते।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो राज्यपाल के अभिभाषण के अन्दर राजस्थान सरकार की संकल्प शक्ति निखरती है वह जो गांवों की तरफ है और इसीलिए आज यह जो योजना प्रारम्भ की गई है अपना गांव यह उसी तरह से प्रारम्भ किया गया जिस तरह से कभी फूड फार वर्क किया गया था। आज भी 70 प्रतिशत रुपया गांवों के अन्दर यहां से जो देने वाले हैं उन्हे तो 30 प्रतिशत रुपया ही खर्च करना पड़ता है। इसकी वजह से गांवों का विकास हो सकेगा इन्होंने कभी अपने

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

साथियों पर विश्वास नहीं किया । उन सरपंचों को कभी अधिकार नहीं दिए । आपने तो उन पर इतना विश्वास किया है कि चालीस हजार तक की योजना वह लोग लागू कर सकते हैं और उसके लिए किसी भी तरीके की उनको इजाजत नहीं लेनी पड़ेगी । यदि गांवों का विकास करना है तो जयपुर में बैठकर नहीं किया जा सकता, दिल्ली में बैठकर नहीं किया जा सकता । गांवों का विकास और गांवों की आवश्यकताओं को अगर देखा जाता है तो केवल गांव में बैठकर के देखा जाता है । जिला परिषदों के माध्यम से आज डी. आर. डी. ए. के माध्यम से आप का जो यह पैसा जा रहा है । आपने तो इन पर विश्वास किया है और इसलिए क्योंकि लोकतंत्र में आप का विश्वास था, जनतन्त्र में आपका विश्वास था, राजस्थान के मंत्रिमण्डल का विश्वास था इसलिए हम लोगों के दबाव के बावजूद भी पंचायतों को भंग नहीं किया गया लेकिन जिला परिषदों में बैठे हुए जो लोग हैं वह राजनैतिक आधार पर आज भी उन गांवों की चिन्ता नहीं कर रहे जिस गांव के अन्दर आवश्यकता है उस गांव के अन्दर वह काम नहीं करना चाहते । वह केवल अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति करने की दृष्टि से पहले योजना बनाते । आवश्यकता है कानून में संशोधन करें । एक एक मंत्री को आप एक एक जिले का प्रभारी बनाइए ताकि गांवों में आपका सपना पूरा हो सके । उस किसान को, उस गांव के व्यक्ति को उससे राहत मिल सके । अगर आज भी आप केवल उस पर विश्वास करते रहे उस जिला प्रमुख के ऊपर उन पंचायतों के ऊपर जो राजनैतिक स्वार्थों से लगे हुए हैं तो गांवों का विकास नहीं हो सकेगा । गांवों के विकास में गांवों के लिए यदि एनीकट बनवाने हैं, गांव का खुर्रा बनवाया है, गांव की नालियां बनवानी हैं, गांव के औषधालय बनवाने हैं, गांव के लिए चिकित्सालय बनवाने हैं तो इस बात की आवश्यकता है कि आप उसकी पूर्ति करें ।

मैं राजस्थान की हुकूमत से कहना चाहूंगा 1986 से लेकर यह जो शासन में बैठे हुए लोग थे इन्होंने नौकरी नहीं दी । जो लोग रिटायर हो गए उनके स्थान खाली पड़े हैं आज भी । एक गरीब आदमी जो स्केल नं. 1 से लेकर 6 तक भर्ती हो सकता था उसको रोजगार नहीं दिया । यह रोजगार के नाम पर उसकी कौड़ी में शहद लगाते रहे । हम लोगों ने यह वायदा किया है और हम चाहते हैं कि रोजगार के नाम पर केवल हम धोखा नहीं दें । आज भी राजस्थान में केवल इनके गलत आदेशों के कारण, इनकी गलत नीतियों के कारण से आज भी हजारों पद रिक्त पड़े हुए हैं । वह जो गरीब था उसको इन्होंने चपरासी बनाकर के रखा, डेली वेजेज पर रखा । डेली वेजेज के आधार पर दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह साल तक लगाते रहे । राजस्थान हाई कोर्ट ने निर्णय दिया है । मैं राजस्थान की संवेदनशील सरकार से निवेदन करता हूं कि राज्यपाल के अभिभाषण के अन्दर जो आप की अभिव्यक्ति झलकती है, आप एक अच्छा प्रशासन देना चाहते हैं राजस्थान की जनता को, आप एक

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

चुस्त दुरूस्त प्रशासन देना चाहते हैं तो उसके लिए काम करने वाले लोगों की आवश्यकता होगी और इसलिए इन्होंने कानून बना रखे हैं। उन कानूनों में संशोधन की आवश्यकता है। उन कानूनों को बदलिएगा.... जिनकी वजह से राजस्थान के लोगों को काम मिल सके। मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि उनकी जो नीतियां थी, उन कारखानों के अन्दर जिनका उत्पादन घट रहा है, आज हमारे यहां आर. एस. एम. एम. है और वहां पर आज भी मैनेजमेंट के खिलाफ आन्दोलन चल रहा है और उसकी वजह से आज वहां पर नुकसान हो रहा है, उस मजदूर को नुकसान हो रहा है, राजस्थान की हुकूमत को नुकसान हो रहा है। यह सब इनकी गलत नीतियों के कारण से, इनके बनाये हुये गलत नियमों के कारण से उन लोगों ने जिस तरह की मान्यतायें राजनैतिक आधार पर दी हैं उनके कारण से आज भी वहां पर जो औद्योगिक विवाद पैदा हो गये हैं, मैं चाहता हूं राजस्थान की सरकार से कि वह उद्योगों को पनपाना चाहते हैं, बाहर से ला कर राजस्थान के प्रवासियों को उद्योग लगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, उनको सुविधायें दे रहे हैं। मैं उनसे यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि इनके गलत कारणों के द्वारा जो फ्रस्ट्रेशन पैदा हुये हैं उनको वापस कानून पुनः संशोधन करके आप निकाले। आज आपकी यह जो दृढ़ता है जो राज्यपाल के अभिभाषण से व्यक्त होती है। आप जिस तरह का प्रशासन राजस्थान की जनता को देना चाहते हैं जिस भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहते हैं, यहां के किसान को आप खुशहाल बनाना चाहते हैं। शराब की दुकानें तो आज सब जगह खुल गई। आज दारू तो सब जगह उपलब्ध है इनके राजस्थान में गांधीजी ने शराब की हमेशा खिलाफत की उस गांधी के चेलों ने आज सम्पूर्ण राजस्थान में दुकानें तो खुलवा दी लेकिन कभी पीने के पानी की चिन्ता नहीं की आज गन्दा पानी पी कर सड़ा पानी पी कर लोग अपना जीवन यापन कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि राजस्थान की सरकार ने पेयजल की समस्या को मिटाने के लिए सहयोग ले करके एक पानी की योजना तैयार की है और उस पानी की योजना से हम पानी सुलभ करा सकेंगे। राजस्थान के लोग जो सड़ा पानी पीते रहे हैं वे आज तक पानी के लिए तरसते रहे हैं, जो बरसों से दूर से पानी लाते रहे हैं अब यदि यह योजनायें पूरी होती हैं तो निश्चित रूप से हम पानी की समस्या का भी निपटारा कर सकेंगे। इसके लिए मैं राजस्थान के मुख्य मंत्री को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने दृढ़ता के साथ में राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण के अन्दर पेयजल की समस्या को निपटाने के लिए जो निर्णय किया है, आज भी राजस्थान में जो सूखा ग्रस्त क्षेत्र हैं, आज भी जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर जहां पर पानी नहीं है, आज जो पहाड़ी क्षेत्र है उनकी योजनायें बनी और उन सारी योजनाओं के आधार पर इस पानी की समस्या को हल किया जाये। मैं इस सदन के माननीय सदस्यों को निवेदन करना चाहता हूं कि इस साल राज्यपाल महोदय

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

के अभिभाषण के अन्दर राजस्थान की बहबूदी झलकती है। राजस्थान का विकास झलकता है राजस्थान को खुशहाल बनाने के लिए, इस अभिभाषण के अन्दर अभिव्यक्ति है राजस्थान की जनता के बीच में एक विश्वास पैदा किया गया है। लोगों ने बहुत आरोप लगाये कि राजस्थान के अन्दर साम्प्रदायिक दंगे हुये हैं। लेकिन इन साम्प्रयिक दंगों के समय में राजस्थान के मुख्य मंत्री ने संवेदनशीलता और दृढ़ता का परिचय दिया है, विश्वास का परिचय दिया और इसलिए किसी भी जाति के, किसी भी धर्म के लोग उस समय इनके पास आये। इनकी दृढ़ता को देख करके, इनके विश्वास को देख करके, इनकी संवेदनशीलता को देखकर मैं निवेदन करना चाहता हूं, इतनी जल्दी कभी भी निर्णय नहीं किये, लेकिन उन दिनों इनकी पुलिस गई, राहत कार्य करने के लिए लोग पहुंचे। जो गरीब थे उन लोगों को राहत पहुंचाई गई। उनको अन्न पहुंचाया गया, उनको नमक, घी, दूध, शक्कर जो कुछ भी था वह आवश्यकता की वस्तुयें उन लोगों को दी गई। उन लोगों को घर बनाने के लिए जो पैसा देना था वह भी उनको दिया गया और प्रशासन की तरफ से जो लोग यह आरोप लगा रहे थे कि इस शासन के अन्दर साम्प्रदायिकता के आधार पर, राजनैतिक आधार पर हुआ लेकिन राजस्थान की हुकूमत ने यह सिद्ध कर दिया कि हम सबके लिए हैं। जो भी है, हम एक से हैं, हम संवेदनशील है, हम एक-सा शासन चाहते हैं हमारे यहां पर धर्म और जाति के नाम पर कोई बंटवारा नहीं होता है। हमारे यहां पर इस दृष्टि से कभी नहीं देखा जाता। इस तरीके से दृढ़ता के साथ में राजस्थान में उन साम्प्रदायिक दंगों को उभरने नहीं दिया और इसके लिए मैं राजस्थान के मुख्य मंत्री को, उनके मंत्रिमण्डल के जागरूक सदस्यों को और प्रशासन को धन्यवाद देता हूं कि इस तरह से उन्होंने उन साम्प्रदायिक दंगों के समय में राजस्थान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश में आरक्षण के कारक से जिस तरीके से उथल-पुथल पैदा हो गयी उस उथल-पुथल के कारण से सम्पूर्ण देश में जिस तरह का व्यवहार हुआ लेकिन राजस्थान में आरक्षण विरोधी आन्दोलन होने के बाद में भी, क्योंकि राजस्थान की सरकार, राजस्थान का मंत्रिमण्डल, राजस्थान की भारतीय जनता पार्टी उन लोगों के प्रति संवेदनशील है। उन्हें आरक्षण मिलना चाहिए, उनके अधिकार उन्हें प्राप्त होने चाहिए जो अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं हुये। एक तरीके से आरक्षण के मामले में भी राजस्थान में जो रूख अपनाया गया, जिस तरह की दृढ़ता दिखाई गई जिस तरह का विश्वास प्रकट किया गया, मैं राजस्थान की हुकूमत से निवेदन करना चाहता हूं कि उन लोगों के साथ न्याय होना चाहिए। उन लोगों को जो पिछड़े हुये लोग हैं, जो बैकवर्ड लोग कहलाते हैं जो जनजाति क्षेत्र के लोग है उनके लिए योजनायें जिस तरीके से आपने राज्यपाल के अभिभाषण में रखी है। मैं कहना चाहता हूं कि उन योजनाओं को पूरा किया जाये और मैं बधाई देना चाहता हूं आपको कि आपने राजस्थान के अन्दर इस तरह का आरक्षण

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)

विरोधी जो आन्दोलन चल रहा था, दृढ़ता से काम लिया और उसकी वजह से हमारे यहां वह झगड़े पैदा नहीं हुये झगड़े लोग कराना चाहते थे। जिस तरह आरक्षण विरोधी आन्दोलन खड़ा किया गया, इसलिए मैं आपको उसके लिए बधाई देना चाहता हूं। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं इस सदन के माननीय सदस्यों से वे जरा इसे सोचे कि राज्यपाल के अभिभाषण के अन्दर जिस तरीके से आरक्षण, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने की दृष्टि से विचार प्रकट किया गया है वह दृढ़ता के साथ में राजस्थान की सरकार को लागू करना चाहिए।

आज राजस्थान के मुख्य मंत्री जिस तरह से दिल्ली और राजस्थान के बीच में ताल-मेल बैठाये हुये हैं। आज आपने देखा दो साल के अन्दर यह 46 प्रतिशत योजना कैसे बढ़ गई? पहले आप रुपया लाये वहां से जाकर के दुबारा फिर रुपया लाये और इस तरह से हमारे योजनाओं का 46 प्रतिशत आकार बढ़ा है लेकिन राजस्थान में और दिल्ली में जिनकी एक ही हुकूमत थी आप तो विपरीत परिस्थितियों में जा करके लाये हैं इसके लिए विशेष बधाई के पात्र है। जहां दिल्ली में भी उनकी सरकार थी और राजस्थान में भी उनकी सरकार थी लेकिन उनकी योजनाओं का आकार कितना बढ़ा था? उनकी योजनायें कैसी थी? आज भी बिजली घर के पत्थर लगे हुये हैं जगह-जगह और बांधों के निर्माण के मुख्य मंत्रियों के पत्थर लगे हुये हैं और दिल्ली के अन्दर मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मानसी वाकल योजना का पत्थर तो लग गया। उसके ऊपर इरिगेशन का रुपया तो खर्च कर दिया गया लेकिन क्या योजना बनी? क्या उसके लिए पैसा आया? नेशनल हाईवे के लिये, नेशनल हाइवे के ऊपर जो बाई पास निकालने थे उनके लिए पैसा आया? निर्माण कर दिया गया, पत्थर लगा दिया गया लेकिन उनके लिए पैसा नहीं आया। मैं राजस्थान की हुकूमत को उसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि इन विपरीत परिस्थितियों में जा करके जिस तरीके से योजना के लिए पैसा लाये हैं और योजनाओं का विकास किया है, योजनाओं का आकार बड़ा किया है। आज भाई कालीचरणजी सराफ ने कहा आज तक राजस्थान के अन्दर पहली बार ब्रोड गेज लाइन की सैंक्शन हुई। अगर सवाई माधोपुर और जयपुर को पहले जोड़ दिया जाता तो हमारे जो राजस्थान के लोग कलकत्ता में रहते हैं, आसाम में रहते हैं, मद्रास में रहते हैं उन लोगों को कितनी राहत होती। लेकिन वह काम अब पूरा किया गया है। आज कोटा से चित्तोड़ तक बड़ी लाइन बनाई गई है उसकी वजह से आज वह जो वनवासी क्षेत्र है वह उस ब्राड गेज लाइन से जुड़ेंगे, लेकिन राजस्थान के इतने एम. पीज. कांग्रेस के जाते रहे लेकिन दिल्ली में कभी भी जा कर उन लोगों ने इस तरह की वकालत नहीं की कि राजस्थान का विकास हो सकता। मैं बधाई देना चाहता हूं आपको कि आपने पहली बार दिल्ली के अन्दर विपरीत परि-

(श्री शिवकिशोर सनाढ्य)..

स्थितियों में भी आप राजस्थान के लिए रेल लाइनों को लाये हैं और उनकी वजह से यह रेल लाइनें निकलेगी तो राजस्थान का विकास होगा। इन रेलों के माध्यम से अगर राजस्थान का विकास होता है तो राजस्थान आगे बढ़ेगा। राजस्थान का विकास होगा और इस तरह से हमारे योजनाओं को बनाना चाहिए। मैं माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के माननीय सदस्यों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि राजनीतिक आधार पर नहीं, बल्कि राजस्थान की जनता को मध्य रखकर यहां के किसानों को अपने सामने रखकर, जनजातीय क्षेत्रों के लोगों को अपने सामने रखें। उस गरीब आदमी को जो गांवों में रहता है जो गांवों की पूंजी आज शहरों की तरफ चली आ रही है। राजस्थान के उस विकास को देखें। जो उद्योग-धन्धे लगने चाहिए उनको देखें। राजस्थान में जो भूमि हरीभरी बनाने के लिए जो योजनाएं बन रही हैं उनको देखें। वहां इस बात को देखें कि किस तरीके से चिकित्सा और शिक्षा के माध्यम से उस गरीब तक पहुंचा जा सकता है, उसे राहत दी जा सकती है, उसका विकास किया जा सकता है। यह सारी की सारी राज्यपाल के अभिभाषण के अन्दर राजस्थान की वह तस्वीर झलकती है जिसकी वजह से राजस्थान आगे बढ़ेगा, राजस्थान का विकास होगा और इसीलिए मैं माननीय सदस्यों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि यूनानिमसली-एकमत होकर इस राज्यपाल के प्रस्ताव को पारित करने की कृपा करें। मैं इस बात को सदन में कहता हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष : कांग्रेस (आई) पार्टी की तरफ से मेरे पास कोई नाम नहीं है, जो बोलना चाहे। जनता दल की तरफ से कोई नाम नहीं है जो बोलना चाहें। श्री सम्पतसिंह। (व्यवधान)

श्री सम्पतसिंह (कृषि मंत्री) : अध्यक्ष महोदय....(व्यवधान)

मैं आपके मतलब की बात करूंगा। अध्यक्ष महोदय, आज गुस्सा हो रहे हैं। विपक्ष के नेता महोदय गुस्सा हो रहे हैं। (व्यवधान)

देखो, प्यारे भाइयों, बहनों और +++ (व्यवधान)

आपको इस हालत में देखकर मुझे बड़ी सहानुभूति हो रही है। क्या वो जमाना था जब परवाज किया करते थे हवाई-जहाजों में, और आज धरने पर बैठे हुए हैं। अब कैसा लग रहा है लोकतंत्र ? अब आया आनन्द प्रजातन्त्र का। बड़े कान्टेसा गाड़ियों में चला करते थे। बड़ी परवाज किया करते थे हवाई जहाजों में। अब + + + की तरह ताली बजा रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : + + + शब्द एक्सपंज किया जाय।

श्री सम्पतसिंह : अब याद आ रहा है। अब राम का नाम आपको याद आ रहा

+ + : शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

है। हमें आपको इस हालत में देख करके बड़ी खुशी हो रही है। अभी जो कुर्सी छीनी, नत्थीसिंह जी की बात तो समझ में आती है, बुजुर्ग आदमी हैं। क्योंकि जिन्दगी के आखिर में जन्मपत्री में ठोकर लगी थी और बदकिस्मती से मंत्री बन गए थे लेकिन डा. चन्द्रभान जो स्वयं में मेन्टल केस हैं उनको मंत्री पद से हट जाने से नई उम्र में जिस किसी महिला को अगर अपने विधवा होने का शॉक लगे उससे बड़ा शॉक डा. चन्द्रभान को लगा है। आपकी पीड़ा से हमको बड़ी साहनुभूति है।

जब चौधरी चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश में सी. बी. गुप्ता की सरकार को गिराया था उस वक्त किसान ने यह सोचा कि कांग्रेस से हट करके कोई किसानों का एक

(3.15 म. प.)

(श्री यदुनाथ सिंह, उपाध्यक्ष पदासीन)

नाराज दल बना है। उस नाराज दल ने उपाध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि मैं अपनी बात निवेदन करूं आप कम से कम इतना बता दीजिए कि जो + + + उनका यहां विधान सभा में क्या काम है? बताओ, उपाध्यक्ष महोदय आप ही इस विषय पर रूलिंग दे सकते हैं। दे सकते हैं कि नहीं?

श्री उपाध्यक्ष : चेम्बर में मिलना। चेम्बर में।

श्री सम्पत सिंह : चैम्बर में? चैम्बर में तो फिर यह जाकर बैठ जाएंगे। उपाध्यक्ष महोदय, आज जैसे ही राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बहस शुरू हुई है, सबसे ज्यादा पीड़ा का विषय यह है कि वो लोग जो लोग जो कांग्रेस का नाम ले करके, महात्मा गांधी का नाम ले करके इस प्रजातन्त्र में गरीब आदमी को करीब 40-42 वर्षों से ठगते आए हैं। आपको याद होगा, उपाध्यक्ष महोदय, पिछली साल का हमारा जो बजट का प्रारूप था वह 956 करोड़ रुपए का था और अबकी बार 1166 करोड़ रुपए का प्रारूप हमारे मुख्य मंत्री महोदय के प्रयासों से हुआ है। अब राजस्थान में इसका सीधा-सीधा असर और प्रतिक्रिया क्या हो रही है और राजस्थान विधान सभा में आज तमाम राजनीतिक पार्टियां बेनकाब हो रही हैं, आज जो यथा-स्थिति बनाए रखना चाहते हैं उन लोगों ने यह तय किया है कि यह 1166 करोड़ की योजना कहीं गांव और गरीब, कहीं झोंपड़ी और खलिहान में न पहुंच जाय। आज पीड़ा इस बात की हो रही है कि गांवों में सड़क न बन जाय, आज पीड़ा इस बात की हो रही है कि गांवों में स्कूल न खुल आज। आज पीड़ा इस बात की हो रही है इन नेताओं को कि गांवों में मदरसा न खुल जाय, औषधालय न खुल जाय सड़क न बन जाय, सिंचाई और बिजली के साधन गांवों में न पहुंच जाय। यह 1166 करोड़ रुपए की योजना उनके पेट में दर्द करा रही है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं पूछना चाहता हूं हमारे साथी कुछ दिन पहले इस मंत्रिमण्डल में सदस्य थे। उपाध्यक्ष महोदय आप भी उनमें

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री सम्पतसिंह)

थे हमने कुम्हेर से आने वाले माननीय सदस्य को कमाण्डर इन चीफ बनाया था लेकिन 7 महीने का तजुर्बा आपने भी देखा और हमने भी देखा और पूर्वी राजस्थान के लोगों ने भी देखा वो सी-इन-सी की जगह चमचा इन चीफ बनकर रहे गए। (व्यवधान)

माननीय नत्थी सिंह जी, मेरी 5 मिनट बात सुन लें। आपकी कलई खोलकर रख देता हूं+++आपको कर+++दूंगा। आपको +++ कर दूंगा। हिम्मत है तो 5 मिनट सुन लें। आपने जब वकालत शुरू की थी आप कांग्रेस के सदस्य थे। कांग्रेस आपने छोड़ी और कांग्रेस क्यों छोड़ी ? जब कॉपरेटिव के साढ़े छः करोड़ रुपए गरीबों का खा गए तब जोशी के चरणों में गए थे आपने एक बार दल छोड़ा जब लोहिया की लोकप्रियता देश में शीर्ष पर थी। लोहिया का जजबा सर पर चढ़कर बोल रहा था। आप उस कांग्रेस पार्टी को छोड़कर लोहिया के चरण कमलों में चले गए और भरतपुर की कांग्रेस को धोखा दिया और लोहियावादी होकर आपने करोड़ों रुपए बनाए उस कॉआपरेटिव की दुकान में। अब आप हमको किस मुंह से कहते हैं कि हम दल-बदलू हैं ? आप तो +++ हैं। डा. चन्द्रभान आपको भी बताऊंगा छोटी सी उम्र में कितना रुपया ले रहे हैं और कहीं से नहीं हमारे उगाहे हुए चन्दे में से। युवा लोकदल के सिर्फ 70 हजार रुपए आप एक जगह से ले गए। जरा लज्जा करो। अगर +++ सती को उपदेश देने लगे तो इस देश का क्या होगा ? इस प्रदेश का क्या होगा ? अगर इस हालत में कोई आदमी आ जाय आप से ज्यादा+++ इन्सान इस धरती पर कोई नहीं हुआ होगा। आपने लोहिया की पीठ में छुरा घोंपा, आपने चौधरी चरणसिंह जी की पीठ में छुरा घोंपा आपने वी. पी. सिंह और चन्द्रशेखर, सब की पीठ में छुरा घोंपा। काहे के लिए ? आपको याद होगा, आप जब अपना मकान बना रहे थे। 1952-57 में, आपकी इतनी हैसियत नहीं थी कि एक बेलदार को लगा लिया जाये। आप दोनों मियां-बीबी अपने हाथ से मजदूरों को ईंटें दिया करते थे और आज नत्थी सिंह जी की दौलत का कोई आकलन करे ? आज बड़े-बड़े कोल्ड स्टोरेज बन रहे हैं, आज आयल मिल लग रही है, आज वह पैसों में खेल रहे हैं। और तो और, अभी सिर्फ सात महीने की अवधि में कुल दो करोड़ रुपया कमा पाये इन्दिरा गांधी नहर में से और हमको दल-बदलू कहते हैं। कोई दल हिन्दुस्तान का ऐसा नहीं रहा जिसमें कुम्हेर से आने वाले माननीय सदस्य नहीं रहे हों और वह लोग हमको दल-बदलू कहते हैं ? आज आप जाकर अपने चुनाव क्षेत्र में सभा करिये। मैडम सुमित्राजी भी कह रही हैं, अभी अपने चुनाव क्षेत्र में सभा करने की हिम्मत नहीं है और यहां आकर अपना और हमारा समय बर्बाद कर रहे हैं। आज यह देखिए। आपको नाथूरामजी मिर्धा ने यह कहा था कि नत्थी सिंहजी, जरा +++ करो, अगर मैंने नोटों के

+++शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

नम्बर बता दिये तो कपड़ों के अन्दर घूजने लग जाओगे। यह आपकी औकात है, यह आपकी ईमानदारी है ? आज आप हमको उपदेश देते हो कि कौन दल-बदलू है, कौन दल-बदलू नहीं है। आपको याद होगा जब जनता पार्टी का राज आया, उपाध्यक्ष महोदय, तब कुम्हेर से आने वाले माननीय सदस्य लोक सभा में राज्य सभा की टिकट पर, राज्य सभा में कांग्रेस की टिकट पर राज्य सभा के सदस्य हुए थे और जैसे ही जनता पार्टी का राज आया, इन्होंने मुझे नगर से टेलीफोन किया और कहते हैं कि सम्पत, प्रेस कान्फ्रेंस कर ले और कह दे कि हम तो जनता पार्टी में शामिल हो रहे हैं। मैंने कहा कि इस पुनीत काम को आप ही आकर कर लें, मेरे बस में तो इस कदर दल-बदल करना है नहीं।

उपाध्यक्ष महोदय, इस परिप्रेक्ष्य में हमारे यहां आम चर्चा होती है कि भाई, आपने चुनाव लड़ा था तब जीप के एक किनारे पर भारतीय जनता पार्टी का झंडा था और दूसरे किनारे पर जनता दल का झंडा था और उपाध्यक्ष महोदय, आपको भी याद होगा जब दिल्ली में देवीलालजी ने एक शाम यह फैसला किया कि कोई समझौता नहीं करना भारतीय जनता पार्टी से, मैं दो सौ की दो सौ सीटें लड़वाऊंगा, उस वक्त आज के इन क्रांतिकारियों के मुंह लटक गये थे। भारतीय जनता पार्टी के समर्थन के बिना चुनाव के मैदान में उतरने की हिम्मत नहीं थी। आज भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक हो गई ? सात महीने भैरोंसिंह की चूड़ी पहनी कुहनियों तक, आज उन चुड़ियों को फोड़-फोड़ कर भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिक बता रहे हैं। आप जैसी +++ तो कोई महिला भी इस राजस्थान की धरती पर नहीं है, आपने महिलाओं का नाम भी बदनाम किया है। आप से तो महिलाएं अच्छी। आज 26 +++ नहीं हैं, यह 26 आपके पिता तुल्य आदमी हैं जिन्होंने राजस्थान में प्रजातंत्र को बहाल रखा है, राजस्थान में आपको पिटने से बचा रा है अगर हम समर्थन नहीं देते तो आपको चुनाव में जाना पड़ता और +++हमने आप पर अहसान किया है, आपको पिटने से बचाया, आपको +++ होने से बचाया और उस गरीब जनता को भी बचाया जिन्होंने करोड़ों-करोड़ों रुपयों का घोटाला होते हुए भी चुनाव में जो +++ से जीत गये, उन लोगों की दोबारा शक्ल देखने से उस जनता को बचाया।

उपाध्यक्ष महोदय, पिलानी से आने वाली माननीय सदस्या मुझे कोई इशारा कर रही हैं। अगर आप उनसे पूछ कर बता दें या वह मुझे सीधे-सीधे आकर बता दें तो मैं उनकी बात नत्थीसिंह जी को कह सकता हूं। अगर यह व्यवस्था हो जाये तो मैं (व्यवधान) जो मैं कह रहा हूं वही माननीय सुमित्रा सिंहजी कह रही हैं। नत्थी सिंहजी +++ इस उम्र में न मालूम करोड़ों रुपयों का क्या करेंगे ? पटवारी

+++शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

से लेकर तहसीलदार और एक्स. ई. एन. तक इन्होंने लाइन लगा दी + + + उपाध्यक्ष महोदय, आपको भी उस होटल का पता है जिस होटल में बैठ कर जब-जब यह बयान दिया कि हमारे कहने से तो पटवारियों के भी तबादले नहीं होते। तो फिर काहे को चूड़ी पहनी भारतीय जनता पार्टी के साथ ? अगर आपका कहना पटवारी नहीं मानते थे और फिर सात महीने आपने + + + तो कोठी, कार और पैसे के लिए आपने सात महीने + + + आम जनता के हक हितों के लिए आपने नहीं रगड़ी। आप वोट लेकर आये थे कि हम गरीबों का, मजदूरों का, शोषितों का पक्ष लेंगे, पिछड़ों का पक्ष लेंगे और यही नत्थी सिंह जी थे जिन्होंने मण्डल आयोग की रिपोर्ट को पास नहीं होने दिया, मुख्य मंत्री का दिमाग भी इन्होंने जाम कर दिया। आज सवेरा हुआ है गरीबों का, आज सवेरा हुआ है मजदूरों का आज सवेरा हुआ है ईमानदार लोगों का, कि यह + + + घरने पर बैठकर + + + पीट रहे हैं और हमारे ईमानदार लोगों ने साढ़े चार करोड़ जनता को न्याय देने के लिए 1166 करोड़ रुपये की योजना का प्रारूप दिया है। आज पेट में दर्द हो रहा है। जब सारे लड़के, जो बेरोजगार घूमते हैं, पहले तो एक्स. ई. एन. से पैसा झटकते रहे थे, आज भरतपुर में पिट रहे हैं बासन गेट + + + आज इनकी हिम्मत नहीं है कि अपने चुनाव क्षेत्र में चले जायें।

उपाध्यक्ष महोदय, आप भी जानते हैं, आपने खुद ने आरोप लगाये, और तो और जिन गरीब किसानों ने, जिन गरीब मजदूरों ने इनको भूल से, चूक से माला पहनाई इनके जीतने पर, उस + + + पार्टी में भी जमा नहीं किया। इससे ज्यादा + + + कौन हो सकता है ? आपको अच्छी तरह याद है, जिस दिन राजस्थान का आम आदमी यह देख रहा था कि क्या फैसला होगा हमारे भाग्य का, यह 26 विधायक क्या फैसला लेने जा रहे हैं, हम तो फैसला ले रहे थे कि इस प्रगतिशील सरकार का साथ दें, हम तो फैसला ले रहे थे कि गरीबों की बहबूदी के लिए सरकार आई है इसका साथ दें और नत्थी सिंहजी क्या कर रहे थे, वह चुपके-चुपके बैंक में जाकर हमारे विधायकों की जो तनख्वाह कटती थी पार्टी चलाने के लिए, उस पैसे को खा गये। इससे ज्यादा + + + कौन होगा ? बताइये। आज किस मुंह से यह + + + हम सतियों को यह उपदेश दे सकती है, इनको अपने गिरेबान में हाथ डालना चाहिए। सारी उम्र इन्होंने + + + रुपया कमाया है, यह हमारे जैसे धर्मपंथी लोगों के खिलाफ क्या बोलने की हिम्मत रखते हैं ? उपाध्यक्ष महोदय, हमारे पूरे पांच साल.... (व्यवधान) (अश्रृव्य).... हिम्मत हो तो (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके खिलाफ कुछ कहना चाहता हूं। हिम्मत हो तो इनको चुप करो और मेरी बात सुनो.... (व्यवधान)

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री जगतसिंह दायमा : हिम्मत हो तो जरा सुन लो....(व्यवधान)

हिम्मत हो तो सम्पतसिंह जी को सुनो। आपकी कलई खोल रहे हैं। एक बार सुन तो लो आपके भ्रष्टाचार सामने आ रहे हैं। सुन तो लो....(व्यवधान)

श्री सम्पतसिंह : और इनको सलाह देना चाहूंगा कि यों आपने चार करोड़ राजस्थान वासियों के साथ खिलवाड़ की.... (व्यवधान)

यह जो थर्ड क्लास में आगे बैठे होते हैं, चुटकी बजाते हैं वही ऐसा शोर करते हैं। (व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : अपनी करतूतों को सुन तो लो जरा....(व्यवधान)

सम्पतसिंह जी को सुन लो। सारी पोलें खुल रही हैं। सुन लो....(व्यवधान)

अपने पापों का इतिहास सुन लो.... (व्यवधान)

श्री सम्पतसिंह : आपकी ईमानदारी में बताता हूं....आपकी तीन तीन पीढ़ियों में ईमानदारी की कोई परिभाषा नहीं समझता होगा। हमसे मत टकराओ आप चूर-चूर हो जाओगे। सारी उम्र तो इश्क में कटी है और अब आखिरी वक्त में मुसलमा होना चाह रहे हो। हिम्मत हो तो सुनो बताता हूं। (व्यवधान)

+++ यह क्या जानें राजनीति किस कहते हैं....(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, इस आदमी की +++जीप चला करती थी। उस आदमी को चौधरी अजीतसिंह ने राजस्थान में भैरोंसिंह जी की मेहरबानी से इतना सम्पन्न बना दिया कि उस आदमी ने बिना शादी के बिना बच्चों के तीन तीन पीढ़ियों के लिए रुपया जमा कर लिया है। यह राजस्थान का यातायात विभाग बोल रहा है। इनकी हैसियत है हमारे सामने बोल जायें। ये जब सड़कों पर घुमा करते थे.... (व्यवधान)

....एक शेरदा नाम के एस. डी. ओ. थे डीग में, उनके पास इन्होंने चिट्ठी लिखी मेरे पास रुपये नहीं हैं, मेरे पास कपड़ा नहीं है, मुझे रुपया और कपड़ा भेज देना। जसराज शेरदा आज नौकरी में मौजूद हैं, अगर वह मना कर दें तो मैं राजनीति छोड़ने को तैयार हूं। इन्होंने उस एस. डी. ओ. को चिट्ठी लिखी कि मुझे कपड़ा दो, मुझे रुपया दे दो, मेरी आज कोई हैसियत नहीं है। आज वह आदमी हमारे जैसे दूध के धुले हुए लोगों पर यह आक्षेप लगाना चाहता है कि हम रुपये पैसों में बिकने वाली चीज हैं। इनकी तीन-तीन पीढ़ियों में कोई ईमानदार नहीं हुआ होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, अगर हिम्मत हो तो कुल दस मिनट में दस साल की +++ नत्थीसिंह जी की मैं इस फ्लोर पर पटक कर रख दूं। हिम्मत हो तो चुप होकर सुनें। हल्ला मचाने से क्या काम चलता है? आप सात महीने मंत्री रहे सिर्फ +++ बनकर रहे और सात महीनों के बाद

+++ शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

में आज नत्थीसिंह 'नथिगसिंह' बन कर रह गये हैं इनकी कोई हैसियत नहीं है। इनको लोग टके के दो नहीं पूछते। आज दर्द इस बात का है कि ईमानदार कार्यकर्त्ता तो मंत्री बन गए और + + + अपने धुरे पर पड़े हुए हैं और दर्द इस बात का है और कोई दर्द नहीं है। आज अगर भैरोंसिंह जी हमारी बात मान जावें......

(व्यवधान)...इन्होंने जोशी जी के पांव पकड़ लिए। आज भैरोंसिंह जी के पांव पकड़ लिए। कोआपरेटिव की जांच नहीं होगी और इनको सजा कभी नहीं होगी। अगर मुख्य मंत्री जी कुछ कठोर बन कर ज्यूडीशियल एक्शन लें तो नित्थीसिंह की जगह विधान सभा में नहीं है घाटगेट की जेल में है और यह आदमी जेल में रहने लायक है।

चौधरी चरणसिंह जी एक व्यक्ति नहीं थे, चौधरी चरणसिंह जी एक विचारधारा थे पर + + + भरतपुर में इन्होंने कोल्ड स्टोरेज बनाकर चौधरी चरणसिंह जी की नीति को स्टोरेज में फ्रीज कर दिया है। यह वह + + + आदमी है। उपाध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं आज अगर लोहिया जी की आत्मा हो तो लोहिया जी कहते थे और चौधरी चरणसिंह के शैरों पर भी सन् 1980 में चौधरी चरणसिंह जी ने कहा था भरतपुर में कि अगर मेरे हाथों से गलती से किसी कोआपरेटिव के + + + टिकट मिल गयी है तो उसको वोट मत देना। यह वह + + + है। चौधरी चरणसिंह जी से ज्यादा और क्या सर्टीफिकेट चाहते हैं यह अपनी + + + का? वह हमेशा कहते थे कि यह 12, तुगलक रोड में घुसे नहीं और चौधरी चरणसिंह जी के माथे पर त्यौरी पड़ी नहीं! वे कहते थे कि इस + + + को ले जाओ, क्यों अपना टिकट भी खतरे में डालते हो, नत्थीसिंह जी के लिए कहते थे। आज यह ईमानदारी और बेईमानी पर बोल रहे हैं। इनको आप बतायें उपाध्यक्ष महोदय, इनकी जो हैसियत है आज बैंक में वह आपसे छुपी हुई नहीं है पर मैं इस सदन को भी बताना चाहता हूं, हिम्मत हो तो ज़रा सुन लें। तीन महीने से आपकी + + + सुनते आ रहे थे। सिर्फ आज के दिन के लिए कि विधान सभा में बोलेंगे और विधान सभा में पोल खोलेंगे। हिम्मत हो तो सिर्फ दस मिनट सुनें। नत्थीसिंह जी अगर आपको सदस्यता से हाथ नहीं धोना पड़े तो मेरे + + + लेकिन हिम्मत चाहिए। सच्ची बात हमेशा कड़वी होती है। + + + जब चोरी होती है किसी गांव में तो चोर भी हल्ला मचाने वालों के साथ हो जाता है और कह देता है पकड़ो, पकड़ो और गांव वालों में शामिल हो जाता है। मैं आपको आगाह करना चाहता हूं माननीय सदस्यों कि यह वह + + + है जो आपके छप्पर में आग लगा देगा, आपकी पार्टी में आग लगा देगा, प्रजातंत्र में आग लगा देगा। इनसे बच कर रहो, इनसे ज्यादा + + + कोई आदमी राजनीति में हमने नहीं देखा।

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

उपाध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं, जब बहस चली थी जार्ज फर्नान्डीस बोले थे, दिनभर बहस चली थी और मोरारजी देसाई सरकार की हिमायत की थी और चौधरी चरणसिंह जी की खिलाफत की थी। हमने कहीं सुना था कि राजनैतिक भ्रष्टाचार भी कोई चीज होती है। पर इस नाम की तो इंजेक्शन्स बिकती हैं। वह इन्होंने पहले ही लगा ली हैं, अब हमारे पास इसका क्या इलाज है ? भ्रष्टाचार तो हाथों में भी होता है। बिना हाथ की सच्चाई, बिना लंगोट के सच्चाई और बिना बात की सच्चाई वाले इनसे ज्यादा + + + कोई आदमी धरती पर पैदा नहीं हुआ होगा। इन्होंने पता नहीं + + + जिन्दगी बरबाद की है। जिस दिन राजस्थान के मतदाताओं की आंख खुल जायेगी.... (व्यवधान)... मैं तो कह ही रहा था कि सच्ची बात कड़वी होती है। मेरे नेता ही सुनना नहीं बरदाश्त कर रहे हैं, तो यह तो क्या सुनेंगे ? उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो चार राजनैतिक उपदेश देकर इनकी जिन्दगी सुधारना चाहता हूं। इनको कुछ ज्ञान ध्यान की बातें कह कर इनका भविष्य सुधारना चाहता हूं। यह किसान की + + + यह मजदूरों की + + + है। यह उन्हें भी धोखा देंगे, स्वयं को भी धोखा देंगे और इस प्रान्त की राजनीति को नाली तक ले जाने की कोशिश करेंगे। मैं इनको एक मौका देना चाह रहा हूं कुछ समझ लें, कर लें। डाक्टर से पैसा लेकर तबादला कराने वाले आदमी हम लोगों को रीति सिखायें यह हमारी समझ से बाहर है। मैं आज संक्षेप में और बहुत विनम्र भाषा में सिर्फ यह कह कर राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का समर्थन करता हूं और उनको धन्यवाद देता हूं।....(व्यवधान).... दल बदल करने वालों के सरदार तो आपकी बगल में बैठे हैं। सारी उम्र जिन्होंने दल बदले, सारी उम्र जिन्होंने पार्टियां तोड़ी, सारी उम्र जिन्होंने चन्दा उगाया, सारी उम्र जिन्होंने अपने नेताओं को + + + दिया–कभी राज बहादुर की चूड़ी पहन ली, कभी मास्टर आदित्येन्द्र की चूड़ी पहन ली, कभी चौधरी चरणसिंह जी की चूड़ी पहनली और कभी देवीलाल चौटाला की चूड़ी पहन ली। इन्होंने एक भी भले आदमी को नहीं बक्शा। सब को + + + दिया और स्वयं अपने चुनाव क्षेत्र को + + + दिया, गरीबों को + + + दिया, मजदूरों को + + + दिया। भरतपुर कलक्टरी में आज भी इन्क्वायरी चल रही है। एक हरिजन है वह कहता है मैंने कभी कोआपरेटिव से कर्जा लिया ही नहीं। उसके कर्ज को खा गए और इस तरह से तमाम सोसाइटीज जो गांव में नहीं हैं, केवल कागजों पर हैं उनसे करोड़ों रुपये यह खा गए। आज की तारीख में भी एक ट्रेक्टर पर 2500 रुपये की कमिशन नत्थीसिंह जी के घर पर आती है इससे ज्यादा + + + की बात क्या हो सकती है। (व्यवधान)....

उपाध्यक्ष महोदय, + + + को दिखा दें मैं ज्ञान ध्यान की बातें कर रहा हूं।

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिह)

इनकी कलई हमने खोली है, इनकी टोपी हमने खोली है। कहीं से + + + ले आये वरना आधी बांहों का कुर्ता पहनकर घूमते थे, जिन दिनों घूमा करते थे चन्दा उगाने के लिए। आज तो फारूक अब्दुल्ला बना हुआ है, बहन का मामा। आज तो देख लो कैसी प्रापर ड्रेस में है। इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि कुछ ज्ञान ध्यान की बातें करके इनका भविष्य सुधारना चाहता हूं। गलती सबसे होती है। पहली बार एम. एल. ए. बनकर आये, गलती हो गयी होगी, कोई बात नहीं, लेकिन आप प्रायश्चियत करिये कभी रिश्वत मत खाओ, कभी असत्य मत बोलो, कभी किसी को गलत बात मत बताओ और जिस पार्टी में रहते हो उस पार्टी को वोट करो। इस को कहते हैं ईमानदारी की राजनीति। यह + + + और यह + + + कितने दिन चलेगी ? काठ की हांडी एक बार चढ़ती है। पहले महेन्द्र शास्त्री भी ऐसा ही कहते थे और एक चुनाव लड़कर + + + खा गए और अपनी + + + पर बैठे हुए हैं।.... कौन पूछता है इस + + + को। आप तो उपाध्यक्ष महोदय, बहुत कहते रहते हो इनसे, लेकिन यह मानते ही नहीं हैं। आपने कितने रुपयों का इनके लांछन लगाया था। वह रुपया ही वापस जमा करा लेओ, हम मान लेंगे कि यह प्रायश्चित करने को तैयार हैं। आज यह दस्तावेज पेश हुआ हैं, इस दस्तावेज में कानून व्यवस्था, आर्थिक भयावह स्थिति, भ्रष्टाचार, तमाम राज-नैतिक, प्रशासनिक, न्यायिक प्रणालियों में जो चालीस-चालीस साल से दुर्गन्ध पैदा हो गई थी, उस दुर्गन्ध को हटाने का (व्यवधान)

श्री जगतसिंह दायमा : यह चौधरी चरणसिंह वाली बात कांग्रेस वालों से तो लें आओ कुछ। वह तो बैठे हैं चौधरी चरणसिंह का नाम ले रहे हैं अब। इन से तो ले आओ — (व्यवधान)

अब दूसरी दाढ़ी वाले खड़े हो गये हैं।

श्री सम्पतसिंह : वह नहीं है। आप + + + हो। चौधरी चरणसिंह तो आज भी एक विचारधारा है। आप चौधरी चरणसिंह को छोड़ कर गये थे। आप मधु लिमये के साथ गये थे (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : यह स्टेज नहीं है, विधान सभा है, बैठ जाइये।

श्री जगतसिंह दायमा : + + + बैठ जाओ।

श्री सम्पतसिंह : आपने चौधरी + + +

श्री जगतसिंह दायमा : + + + ज्यादा बात नहीं करोगे, बैठो।

श्री सम्पतसिंह : आप ट्रस्ट के पैसे खा गये जब मधु लिमये के साथ चले गये थे, जब चौधरी चरणसिंह कहां रहे ?

श्री उपाध्यक्ष : समाप्त करें, माननीय मंत्री महोदय। समाप्त करें।

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री सम्पतसिंह : अब जब दुखती रग पर हाथ जा रहा है तो दर्द हो रहा है। अब तो बड़ी बड़ी चापलूसी की बात सुनी ना। जब जब धरती पर आये हो जब पता पड़ा है। अब जब धरती पर आये हो तो पता चला है।

श्री उपाध्यक्ष : समाप्त करें, माननीय मंत्री जी।

श्री सम्पतसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं समाप्त कर दूंगा।

श्री जगतसिंह दायमा : और तो और डॉक्टर की + + + भी नहीं चलेगी।

श्री सम्पतसिंह : सिर्फ पांच मिनट शांति से मेरी बात सुन लें, पांच मिनट। छठी मिनट नहीं बोलूंगा। छठी मिनट नहीं बोलूंगा, सिर्फ पांच मिनट मेरी बात सुन लें। पांच मिनट में + + + पांच मिनट में + + + कर दूंगा। + + + सूप बोले तो बोले चालनी भी बोले जामे 72 छेद हैं। सबरी + + + है वह हमारे जैसे उज्जवल चरित्र के लोगों से बात करते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं (व्यवधान)

छुपने वाले सामने आओ। छुपने वाले सामने आओ।

अभी तो मैंने नत्थीसिंहजी की मिसल ले रखी है। मैं गहलोत की मिसल भी लूंगा, चंदनमल बैदजी की मिसल भी लूंगा लेकिन शांति से अगर सुनें तो सिर्फ पांच मिनट में अपनी बात कह कर मैं बैठ सकता हूं उपाध्यक्ष महोदय, अगर इनमें हिम्मत हो, पांच मिनट सुन लें। पांच मिनट सुन लें, मैं अपनी बात समाप्त कर देता हूं। मैं माननीय सी. पी. एम. के नेता महोदय से निवेदन करता हूं, आप इतनी बड़ी पार्टी के सदस्य होते हुए इस भेड़ कम्पनी में कितने दिन अपनी राजनीति चलाओगे ? मैं सिर्फ पांच मिनट मांग रहा हूं, उपाध्यक्ष महोदय, आप एक बार तो हिदायत दीजिये, घंटी बजाइये और इनको कहिये, सुनें।

(व्यवस्था–सूचक घंटी)

मैं माननीय विपक्ष के नेता महोदय से अपील करता हूं, सिर्फ पांच मिनट सुनाने का मुझे मौका दे दें और अपने माननीय सदस्यों से यह कह दे, सिर्फ पांच मिनट में कोई कहर नहीं टूट जायगा।

श्री उपाध्यक्ष : अब समाप्त करें, माननीय मंत्री महोदय।

श्री सम्पतसिंह : पांच मिनट में कोई कहर नहीं टूट जायेगा। तमाम रात आप नारे लगाते रहना, सिर्फ पांच मिनट में मैं आगाह करना चाहता हूं, कैसे कैसे + + + आपकी आस्तीन में घुसने की कोशिश कर रहे हैं। यह वही लोग हैं जो इमरजेंसी में आये थे, गिरफ्तारी के डर से आये थे। राजबहादुर को छोड़ कर आये थे। आपके पांव पकड़ कर छह करोड़ की बेईमानी को बचा ले गये, उपाध्यक्ष महोदय, छह करोड़ रुपये की। वरना इनके घर पर एक बैल की खेती होती थी, यह कोई जागीरदार

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री सम्पतसिंह)

का लड़का नहीं है। आज तो पचास करोड़ की जायदाद धरती पर चौड़े में दिखती है।

श्री उपाध्यक्ष : समाप्त करें, माननीय मंत्रीजी, अब समाप्त करें। समाप्त करें अब।

श्री सम्पतसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, इसलिये Come with clean hand; जो ईमानदार आदमी बोलेगा हम उसकी बात पर गौर करेंगे और वह अगर हमारे इस्तीफे की भी मांग करेगा, हम उसकी मांग पर इस्तीफा देने को भी तैयार होंगे लेकिन जिनकी सारी उम्र+ + + करने में निकली है, जो आज प्रजातंत्र को पलीता लगाना चाहते हैं, जिनमें इतनी भी तमीज नहीं है, यह अपने घर पर इनकम टैक्स के आफिसर को हुजूर, गरीब परवर, माई-बाप कह कर बुलाते हैं और यहां राज्यपाल के हाथ में से यह बेशकीमती दस्तावेज छीन कर उसको फाड़ना चाहते हैं, यह प्रजातंत्र की कब्र में अगर कील नहीं ठोक रहे हैं तो, उपाध्यक्ष महोदय, और क्या कर रहे हैं? इनको सबक लेना होगा। आज इस महत्वपूर्ण दस्तावेज के समर्थन में हम सिर्फ जो इस सदन में बैठे हुए हैं वही नहीं राजस्थान की साढ़े चार करोड़ जनता उठ खड़ी हुई है। कल बीबीरानी में प्रदर्शन था, दो दिन पहले भरतपुर में प्रदर्शन था, इस महत्वपूर्ण दस्तावेज के समर्थन में साढ़े चार करोड़ जनता उठ खड़ी हुई है। वह धन्यवाद देती है, इस दस्तावेज का अभिनंदन करती है और इन काले मुंह के नेताओं का निकृष्टता से, ईमानदारी से खण्डन करती है, बहिष्कार करती है। धन्यवाद।

जय हिन्द।

श्री उपाध्यक्ष : कांग्रेस की तरफ से कोई बोलना चाहेंगे। कांग्रेस की तरफ से? जनता दल की तरफ से? कम्युनिस्टों की तरफ से? माननीय श्री महावीर प्रसादजी जैन।

श्री महावीर प्रसाद जैन (टोंक) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के प्रति आभारी हूं जिन्होंने सदन में आकर हमारे राज्य के महत्वपूर्ण दस्तावेज को जनता के समक्ष रखा है। मैं ऐसा मानता था कि कांग्रेस के लोग जो इस प्रजातंत्र में चालीस साल तक इधर बैठे हैं और जिन्होंने कुछ परम्परायें कायम की हैं वह भी कुछ परम्पराओं को और विधान सभा में....(व्यवधान)

इस हाउस की कुछ गरिमा है, महामहिम राज्यपाल महोदय की कोई गरिमा है, आसन की कोई गरिमा है लेकिन बहुत कुछ सोचने के बाद मेरी समझ में आया कि यह इस प्रकार का आचरण कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं? चालीस साल में जो इन्होंने काले कारनामे किये आज इनके पास कोई बोलने के लिये नहीं है, चालीस साल में इन्होंने क्या किया वह कहने के

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

लिए नहीं है और इस सरकार के ऊपर किसी प्रकार का आरोप लगाने के लिए नहीं है। सिवाय इसके कि यह + + + करें, + + + करें और जिन संसदीय परंपराओं की बात करते थे उन संसदीय परम्पराओं का किस प्रकार निर्वहन करें, मैं समझता हूं इसके पीछे इनका एक षड़यंत्र है कि इनके काले कारनामे जो भ्रष्टाचार के............ (व्यवधान)

मैं अभी सुन रहा था, नगर से आने वाले हमारे मन्त्रिमण्डल के माननीय सदस्य ने जो माननीय नत्थी सिंह जी के ऊपर आरोप लगाये, जो डाक्टर चन्द्रभान के ऊपर आरोप लगाये, जो 15–25 हजार रुपये चंदे के लेकर चले गये, जो 6-6 करोड़ रुपये सहकारिता में गबन कर गये, कभी शिवचरणजी माथुर के, कभी हरिदेवजी जोशी के चरणों में जा गिरे, कभी भैरोंसिंह जी शेखावत के चरणों में जाकर गिरते हैं, आज वह किस नैतिकता की बात करते हैं। मैं राज्यपाल के अभिभाषण पर.......... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष : आप बोलना चाहते हैं क्या ?

श्री महावीर प्रसाद जैन : धन्यवाद देता हुआ निवेदन करना चाहता हूं मुख्य मंत्रीजी से....

श्री उपाध्यक्ष : मैं समय दूंगा जब आप लेना ।....(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : कि इनके षड़यन्त्र को पहचानें। इन्होंने एक हजार करोड़ रुपये का जयपुर की हाउसिंग सोसायटी के नाम पर घोटाला किया है....मैं समझ सकता हूं इनकी पीड़ा को। इनको लग रहा है, यदि विधान सभा चलेगी, यदि हम इस विधान सभा को चलने देंगे तो यह जो आज यहां पर बैठे हुए हैं, आधे से ज्यादा लोग उस एक हजार करोड़ के गबन में शामिल है और वह एक हजार करोड़ का गबन किया है वह विधान सभा के सामने आएगा और उस पर कार्यवाही होगी और इनकी जगह विधान सभा में नहीं, सींखचों में होगी। उन सींखचों से बचने के लिए आज इस प्रकार की कार्यवाही कर रहे हैं। सदन की प्रक्रियाओं की, मान-मर्यादाओं को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। आपके पास इसके अलावा कुछ नहीं है। आप + + + हो। आपके पास और कुछ है नहीं। विधान सभा में करोड़ों रुपये एक-एक मिनट के खर्च होते हैं। राजस्थान की जनता यह चाहती है कि जिनको हमने जन प्रतिनिधि के रूप में विधान सभा में भेजा है, उनका किस प्रकार का आचरण है, वह किस प्रकार के + + + हैं। आज जिनके पास बोलने के लिए शब्द नहीं है। सरकार की आलोचना करने के लिए शब्द नहीं हैं...

श्री प्रेमसिंह दहिया : + + + बजाना बन्द करो।

(4·00 म. प.)

श्री महावीर प्रसाद जैन : 1166 करोड़ रुपये प्रदेश में विकास की गंगा के लिए,

---

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

राजस्थान के गांवों के विकास के लिए 60% बजट का प्रावधान किया गया है। आज इनकी पीड़ा यह है कि इन हजारों-करोड़ों रुपयों को जो अपनी जेब में ले जाते थे, अपने घरों को ले जाते थे, आज क्या होगा ?

श्री महीपाल यादव : फर्जी कार्यवाही नहीं चलेगी।

श्री महावीर प्रसाद जैन : केवल 1166 करोड़ रुपये की चिन्ता नहीं है, जो हजारों-करोड़ों रुपये पर इन लोगों ने डाका डाला है। आज यह सब मिल कर कांग्रेस और जनता दल आज नीति की, चरित्र की चर्चा करते हैं। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि दिल्ली में बिना बारात जो दूल्हा बैठा है उसकी क्या हालत है जिसका सदन में बहुमत नहीं है। बहुमत तो छोड़िये, आज वह सरकार चला रहे हैं और नैतिकता की बात करते हैं। नगर से आने वाले माननीय सदस्य, मंत्री जी का वह कथन मुझे बड़ा सटीक लगता है कि एक + + + एक सुहागन को, एक सती को शिक्षा दे रही है। यह + + + के स्वरूप में वहां बैठने वाले लोग सती का पाठ पढ़ा रहे हैं + + + जिस प्रकार उन्होंने कहा, जिनके पास केवल यह कार्यक्रम है कि यहां + + + की तरह घोषणा करें। मैं चुनौती देता हूं कि वह राजस्थान सरकार के पिछले एक साल का जो लेखा-जोखा है, जो कमियां रह गई हैं उनका वह यहां पर विवेचन करे। जो आपके ऊपर जो इस सरकार को शिकंजा कसना चाहिए। आपके भ्रष्टाचारों के ऊपर, आपने जो अनीतियां की हैं, आपने जो कालाबाजारियां की हैं, आपने जो भ्रष्टाचार किया है उस पर इस तरह का शिकजा इस सरकार को कसना चाहिए लेकिन आपकी नीयत तो + + + की दाढ़ी में तिनके की तरह है, आप कैसे बोल सकते हैं ? पिछली बार हमने दो बार आपके इस सारे सदन की कार्यवाही को देखा। किसी एक में इस प्रकार की हिम्मत नहीं हुई कि वह सदन की प्रक्रिया के तहत, नियमों के तहत आये। मैं कहता हूं कि यदि इनको प्रक्रियाओं का ज्ञान नहीं है तो मैं आह्वान करता हूं कि आयें, मैं उनको समझाऊंगा कि विपक्ष में किस प्रकार की भूमिका अदा करते हैं ? किस प्रकार से आप प्रस्ताव ला सकते हो, किस प्रकार आप सरकार की आलोचना कर सकते हो ? किस प्रकार यदि यहां पर गड़बड़ हुई है तो सारे राजस्थान की जनता को बता सकते हो। लेकिन आपके पास बताने के लिए कुछ नहीं है। राज्यपाल महोदय के द्वारा जो हमारी सरकार ने एक प्रकार का दस्तावेज पेश किया है। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि राजस्थान की गरीब जनता के लिए जो एक कल्पना संजोयी है हमारी सरकार ने कि हमारे यहां पर हरित-क्रान्ति आये। हमारे खेत हरे-भरे हों। किसानों के खेतों में बिजली पहुंचे, नहरें पहुंचे। एक-एक बून्द राजस्थान की धरती पर लगे। आपने विकास की योजनाओं को ठप्प करके पिछले 40 साल में जिस प्रकार की दुर्गति की है। जो हमारा

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

उपलब्ध पानी है उस पानी का आपने उपयोग नहीं किया। इस राजस्थान सरकार ने इस दस्तावेज से यह संकल्प दोहराया है कि हम राजस्थान में जो उपलब्ध पानी है उसकी एक-एक बून्द खेतों पर पहुंचायेंगे। बेरोजगारों के हाथों को काम देंगे, उनको काम पर लगायेंगे। लोगों के हाथों को काम मिलेगा। खेतों में हरियाली होगी, लोग समृद्धिशाली होंगे तो आपके अरमान पूरे नहीं हो सकते। इसलिए आप चाहते हो कि राजस्थान की धरती सुखी रहे। किसी प्रकार का आयोजन न हो। ऐसे-ऐसे लोग बोल रहे थे, मैं देख रहा था जिन्होंने तीन-तीन करोड़ रुपये और पी. डब्लू. डी. की फाइलें इधर-उधर करके कई अफसरों को मरवा दिया....

श्री प्रेमसिंह दहिया : यह + + + बन्द करो।

श्री महावीर प्रसाद जैन : मैं तो मुख्य मंत्री जी से मांग करता हूं कि जिम्मेदार प्रशासन बनाना आवश्यक है। मैं जानता हूं कि कई इस प्रकार की फाइलें हैं जिनमें करोड़ों का गबन और + + + उच्चाधिकारियों के सामने आती हैं।

(4.10 म.प.)

(श्री रमाकांत शर्मा, सभापति पदासीन)

उच्चाधिकारी इनको देखकर इन फाइलों को रख देते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है, मुख्य मंत्री जी, आपको संवेदनशील प्रशासन बनाना पड़ेगा। जो कांग्रेस का लगाया हुआ कांटों का, बबूल का पेड़ है उसको जड़ से उखाड़ कर फेंकना पड़ेगा यदि यह सारे स्वप्न आपको संजोने हैं, राजस्थान की धरती पर हरियाली लानी है, खुशहाली लानी है, यदि आपको संवेदनशील प्रशासन देना है तो उसके लिए आवश्यक है इनके षड्यन्त्र को पहचानना। आज जब नगर से आने वाले माननीय सदस्य जिस प्रकार 6-6 करोड़ के घोटाले के आरोप माननीय नत्थी सिंह जी के ऊपर लगा रहे थे तो हमारे सदन के नेता महोदय को बड़ी दया आई और उन्होंने कहा, ठहरिये। ठहरने की आवश्यकता नहीं है। जिसने अपराध किया है, एक बार यह बताने की आवश्यकता है कि जो अपराध करेगा, वह कानून के शिकंजे में होगा चाहे वह कितना ही बड़ा व्यक्ति हो, चाहे वह माननीय नत्थी सिंह जी हो या वह माननीय चन्द्रभान जी हो, कोई भी हो। मैं पूछना चाहता हूं जिन्होंने युवा छात्रों के नाम पर, और मैं जानता हूं माननीय चन्द्रभान जी मेरे साथ इमरजेन्सी के दिनों में जिन दिनों में कांग्रेस की सरकार ने इमरजेन्सी लगाई थी और मैं जेल में था उस समय मेरे साथ ये जेल में थे। किन कारणों से थे, जयपुर में कैसे थे, इन कारणों में मैं नहीं जाना चाहता लेकिन मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं, सरकार के मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि आपको इतना सदाशील होने की आवश्यकता नहीं है। आपको इस ग्रिप को तोड़ना होगा और

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

इन्होंने इस प्रकार का षड़यन्त्र कर रखा है और षड़यंत्र करके जिस प्रकार से राजस्थान की विधान सभा में भी उस षड़यंत्र को कामयाब करना चाहते हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं और चुनौती देना चाहता हूं कि प्रजातन्त्र के रखवाले आपके इस षड़यन्त्र को पूरा नहीं होने देंगे। आपकी एक-एक घटनाओं को लेकर आपको कठघरे में खड़ा करेंगे और केवल कठघरे में ही नहीं कानून के शिकंजे में जकड़ेंगे और आपकी जगह फिर विधान सभा में नहीं होगी आपके + + + लगेगी और आपको + + + में भेजा जाएगा। यह आपका भ्रम है जिसके द्वारा आज विधान सभा में यह दृश्य उपस्थित कर रखा है। राजस्थान की 4 करोड़ जनता आपके इस कुकृत्य को देख रही है। आपके पास बोलने के लिए क्या है। आपके पास ऐसी कोई सामग्री नहीं है और न ही 40 सालों में जो कुछ किया है वह बताने के लिए नहीं है। एक साथ और पिछले ढाई सालों में जो जनता पार्टी की सरकार और हमने किया है, उसी की आलोचना करने के लिए और मुझे तो अफसोस इस बात का भी है कि इस सरकार में रहकर 7 महीनों में किस प्रकार से कई काम किये हैं जो उधर चले गये हैं, कम से कम वह यह कहकर बताते कि हमने किन किन नीतियों और रीतियों के कारण, ऐसी कौनसी परिस्थितियां पैदा हो गई थीं, ऐसा कौनसा राजस्थान का विकास करना चाहते थे कि आपको छोड़कर जाना पड़ा और वापिस उन्हीं षड़यंत्रकारियों में जाकर उन्हीं भ्रष्टाचारियों और उन लोगों से मिलकर अपने भ्रष्टाचार को छिपाने की कौनसी आवश्यकता हुई।

अंत में मैं राज्यपाल महोदय को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने राजस्थान की जनता के लिए राजस्थान की खुशहाली के लिए और यह संकल्प दोहराया कि जो उपलब्ध पानी है कि उसकी एक-एक बून्द का उपयोग करके किसानों के खेतों में पहुंचाया जायेगा और कई प्रकार की योजनाएं लाकर "अपना गांव अपना काम" और जो हमारी सरकार ने जिस प्रकार से दायित्व निभाया है। 280 करोड़ रुपये हमने ऋण राहत योजना में लोगों को दिये हैं। इस प्रकार हमारी जो राजनीतिक प्रतिबद्धताओं, किस प्रकार हम राजनीति में अपने कहे हुए वायदे को पूरा करते हैं, यह करके हमने बताया है। इसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि ये सारे षड़यन्त्रकारी आपके पास आकर हाथ जोड़ते हैं, आपके पैर पकड़ लेते हैं और आप इनको उदारता-पूर्वक और पता नहीं किस वक्त में आप मुक्त हस्त होते और जो छूट देते हैं यह उचित नहीं है। यह छूट का ही परिणाम है कि जो इस प्रकार संवैधानिक मर्यादाओं को तोड़ रहे हैं और तोड़-मरोड़कर जिस प्रकार इसकी धज्जियां उड़ा रहे हैं, संविधान की धज्जियां उड़ा रहे हैं और यह काले अक्षरों में लिखा जावेगा।

माननीय सभापति महोदय, यह हमारे देश का, प्रदेश का दुर्भाग्य है कि जो

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

जिम्मेदारी हमारे विधायी कार्य के लिए विधायकों को सौंपी गई है, जो नैतिक जिम्मेदारी हमने ली है और सब प्रकार की व्यावहारिक जिम्मेदारी हमारी है कि हम संसदीय परम्पराओं का निर्वहन करें, हम संसदीय मर्यादाओं को निभाये लेकिन मुझे अफसोस है कि आज का दिन और 22 तारीख के दिन को काला दिवस के रूप में याद करेंगे और राजस्थान की जनता कभी भी माफ नहीं करेगी। जिस प्रकार इन्होंने संविधान के साथ मखौल किया है और जिस प्रकार हमारे और आसन के प्रति, हमारे महामहिम राज्यपाल महोदय के प्रति, हमारे सदन के प्रति जिस प्रकार का आचरण किया है, वह कभी भी क्षम्य नहीं हो सकता। माननीय सभापति महोदय, क्या कोई राजस्थान की जनता या कोई भी व्यक्ति इनको क्षमा कर सकता है जहां कि एक-एक शब्द लिखा हुआ है। उस आसन के प्रति, इस विधान सभा में भी किसी प्रकार के शब्दों का उच्चारण नहीं कर सकते। जिस आसन की मर्यादाओं के प्रति जहां हम यहां नहीं कर सकते, हम बाहर अखबारों में स्टेटमेण्ट दे रहे है। मैं नहीं समझता कि कानून के बनाने वाले और कानून का संचालन करने वाले किस प्रकार संचालन कर रहे हैं और जो प्रिजाइडिंग आफिसर हैं जिससे आप न्याय की अपेक्षा करते हैं, उस प्रिजाइडिंग आफिसर के सामने आप कौनसे ऐसे तथ्य प्रस्तुत करना चाहते हैं? क्या आपने राजस्थान की जनता को बताया, यहां पर बैठकर क्या आपने उन प्रक्रियाओं का पालन किया और आपने यह बताया कि यहां कौनसी + + + हुई, कौनसा दल-बदल हुआ और कौनसे कानून और संविधान का उल्लंघन हुआ? यह आपके + + + की बात नहीं है। आपका तो दिवाला निकला हुआ है, आपकी + + + निकला हुआ है। आपके जो + + + है, वह सामने दिखाई देते हैं और जब आपके कारनामे दिखाई देते हैं तब आपका भ्रष्टाचार का स्वरूप दिखाई देता है तो आप सारा कुछ भूल जाते हैं। न कोई प्रक्रिया है, न कोई व्यवस्था है। अव्यवस्था के नाम पर, अपने + + + को छिपाने के नाम पर अपने भ्रष्टाचार को दबाने के नाम पर यह षड़यन्त्र किया जा रहा है लेकिन राजस्थान की जनता आपको कभी माफ नहीं करेगी।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ जिस प्रकार से राज्यपाल महोदय के अभिभाषण से हमारी सरकार ने जो अभिभाषण पेश किया है, जो डाक्युमेंट्स दिये गये हैं, इस देश की जनता को कि किस प्रकार हम लोगों के खेतों में, किसानों की खुशहाली चाहते हैं और सारी कल्पनाओं को आप पूरा करें। इतना ही निवेदन करते हुए अपना भाषण समाप्त करता हूं। जय हिन्द।

श्री सभापति: कांग्रेस पार्टी के माननीय सदस्य बोलना चाहें? जनता दल के माननीय सदस्य बोलना चाहे? कम्युनिस्ट पार्टी के माननीय सदस्य बोलना चाहे? माननीय श्री बंशीलाल जी पटवा।

+ + + शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री बंशीलाल पटवा (भीलवाड़ा) : आदरणीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपना जो अभिभाषण सरकार के दिशा निर्देशों के रूप में प्रस्तुत किया, इस सदन में पढ़ा, और इससे साफ जाहिर होता है कि राजस्थान के माननीय भैरोंसिंह जी शेखावत की सरकार आम आदमी और विशेष रूप से किसानों और कृषकों के हित के लिए काम करना चाहती है और लोकतन्त्र में सरकारें बनती हैं और बिगड़ती हैं लेकिन लोकतन्त्र को चलाने करने के लिए बहस की जाती है, विचार प्रस्तुत किये जाते हैं लेकिन जब राज्यपाल महोदय ने अपना अभिभाषण इस सदन में आकर पढ़ना आरम्भ किया तो उस समय कुछ माननीय सदस्यों ने राज्यपाल महोदय से भाषण की प्रति छीन ली, लाइट हटा दी, माइक को फेंक दिया और इस तरह की हरकतें करके लोकतन्त्र को जीवित रखना चाहते हैं ? यह एक प्रकार की घिनौनी राजनीति है और निन्दनीय कार्य किया है और उस दुष्टता की सजा निश्चित रूप से इनको दी जानी चाहिए। लोकतन्त्र को चलाने करने के लिए आज दिन तक गांधी जी का नाम लेते रहे लेकिन 40 वर्षों में इन लोगों ने इस तरह घिनौने काम किये हैं जिसके कारण से ऐसा लगता है कि इस देश में गांधीजी पैदा नहीं हुए और यदि आज गांधीजी जिन्दा होते और जीवित रहते और सदन में इस तरह की हरकतें देखते तो शायद गांधीजी को जहर खाकर मरना पड़ता।...

श्री सम्पतसिंह (नगर) : भले-भले तो जा रहे हैं और बुरे-बुरे यहां पर अभी बैठे हुए हैं।

श्री बंशीलाल पटवा : इस तरह की स्थिति इन लोगों ने पैदा की है और आज लोकतन्त्र का नाम ले रहे हैं, दल-बदल की बात कर रहे हैं लेकिन कांग्रेस से मिलकर घिनौनी कार्यवाही राजस्थान में करना चाहते हैं। पिछले 40 वर्षों में राजस्थान के किसानों के हितों की बातें करते रहे लेकिन किसानों को न बिजली दे सके, न पानी दे सके और आम किसानों को पानी और बिजली चाहिये लेकिन राजस्थान में पिछली कांग्रेस की सरकार आज दिन तक भी बिजली जनरेट नहीं कर सकी, इसके कारण आज किसानों को बिजली मुहैया नहीं हो पा रही है। पिछली बार जो कांग्रेस सरकार माली हालत छोड़ गई थी, उस दुर्दशा को देखते हुए ऐसा लगता था कि सरकार के कर्मचारियों तक को भी पैसे दे पायेंगे या नहीं दे पायेंगे लेकिन सारा का सारा पैसा इन लोगों ने लूट खाया। गांवों के विकास के नाम पर पैसा पंचों, सरपंचों की जेब में और कांग्रेसियों की जेब में चला गया और आज राजस्थान में सड़कों के नाम पर, नालियों के नाम पर आप गांवों में चले जाइये, पैसा इन लोगों ने उठा लिया और वहां पर नालियां नजर नहीं आयेगी, और पैसा इन्होंने बटोर खाया। आज इनके पेट में दर्द हो रहा है। 1166 करोड़ रुपये की योजना राजस्थान सरकार ने स्वीकृत की है और राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह दिशा निर्देश स्पष्ट है और भारतीय जनता पार्टी और जनता दल (दिग्विजय सिंह) के गुट दोनों को मिलाकर जो सरकार चल रही है, वह किसानों के हित में काम करना चाहती है और जिनके पेट में दर्द हो रहा है, वे खुद मंत्री नहीं

(श्री बंशीलाल पटवा)

रहे, गाड़ियां इनकी छीन ली गई, ऐश और आराम की जिंदगी थी, ये इससे वंचित हो गये। इसलिए चिल्ला रहे हैं और धरना देकर बैठे हैं और अंदरवाईज तो स्थिति इनकी ऐसी है कि चौखटे जाकर देखे तो मैं सोचता हूं कि हालात खराब हैं इन्होंने घिनौनी राजनीति का अनुसरण किया है लोगों के चरित्र को गिराया है जहां देश में चरित्र की राजनीति की बातें की जाती है लेकिन चरित्र की राजनीति की बात करने वालों की तस्वीर देखों तो इनके + + + हो जायेंगे और इन लोगों ने आज दिन तक जनता के शोषण किया है। गरीबों की रोटी छीनी है और गरीबों के नाम पर इन्होंने राजस्थान को लूटा है। यह वह राजस्थान है जो कृषि प्रधान प्रदेश है। आज राजस्थान के इतिहास को हिन्दुस्तान के इतिहास मे निकाल दे तो राजस्थान का इतिहास कुछ नहीं बचेगा और राजस्थान के इतिहास में भी मेवाड़ का इतिहास निकाल दे तो राजस्थान का इतिहास कुछ नहीं बचेगा। जिस राजस्थान का एक उज्ज्वल इतिहास है, जिसे इन्होंने कलंकित किया है और इनसे इसका लेखा-जोखा लिया जाए तो शायद इनकी ऐसी हालत हो जाए, आज इनकी ऐसी दुर्दशा हो जाए...और इनके ऊपर यदि आप जांच करें तो मैं सोचता हूं कि कल तक तो इनके घरों में चूहे उपवास करते थे, घरों में कुछ भी नहीं था लेकिन आज इन्होंने महल खड़े कर लिये। कहां से आया पैसा ?

हम भी राजनीति में काम करते हैं। यदि हमने कलंकित किया है और हमें लोग यदि चरित्र से गिर गये तो जनता में हमारी साख उजड़ जायेगी। लेकिन जिनकी साख उजड़ी हुई है वे इस तरह से लोकतन्त्र को बातचीत के जरिये नहीं चला करके + + + से चलाना चाहते हैं। यह इस देश में कभी भी नहीं चलने वाला है। जोशी जी ने कहा कि हम भूख-हड़ताल पर बैठते हैं। गांधीजी का सिद्धान्त था वह गांधीजी के सिद्धान्त के साथ चला गया है। गांधीजी ने जो स्वदेशी का नारा दिया था, आप लोगों ने उस नारे को पलिता लगा दिया है, देश में और राजस्थान में अराजक स्थितियां ला कर के किसान को बरबाद किया है, आम आदमी को भूखा मारा है और आयातित नीतियों का दुष्परिणाम यह निकला कि आज राजस्थान तबाही के कगार पर खड़ा है। यह सारा दोष कांग्रेस राज पर है। इन्होंने आज दिन तक सिंचित क्षेत्र को नहीं बढ़ाया और जो भी बड़े-बड़े प्रोजेक्ट बनाये हैं कांग्रेस राज में उन प्रोजेक्ट्स को खराब किया, इन लोगों ने जगह-जगह बंधे लगा दिये और आज बीसलपुर योजना है, प्रोजेक्ट है, मेरे भीलवाड़ा जिले में मैजा प्रोजेक्ट है, कोठारी प्रोजेक्ट है। लेकिन यह जो सारे प्रोजेक्ट्स बनाये हैं उस पर कांग्रेस राज में बन्धे लगा दिये जगह-जगह पर और सारे प्रोजेक्ट्स को खराब कर दिया।

आज किसान उससे सिंचाई नहीं कर सकते। यदि कोई भी प्रोजेक्ट बनाया जाता है तो उनके कैचमेण्ट में कोई भी रुकावट पैदा नहीं की जाती लेकिन कांग्रेसियों ने कांग्रेस राज में उन प्रोजेक्ट्स को खराब करके समस्याएं पैदा की है। इस तरह के हालात हैं। हमारे प्रमुख जो स्रोत हैं, हमारे

+ + + शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किये गये।

(श्री बंशीलाल पटवा)

पुरखों ने जो बात कही है, गांधी जी ने स्वदेश की बात कही है, उस आधार पर यह योजनाएं नहीं बना सके और न ही चला सकें। केवल इन्होंने तो वोटों की खरीद और फरोख्त के आधार पर राज किसी तरह से बना रहे उसी तरह की योजनाएं बनायी और जिन्दा रहे। आज जितने भी कांग्रेस राज में बैठे हैं और आज इधर भैरोंसिंह जी के राज में बैठे हुए लोग हैं। आप दोनों की तुलना करिये तो उन लोगों के पास नामी-बेनामी, रिश्तेदारों के नाम पर जमीनें मिलेंगी, प्लाट मिलेंगे और जितने भी बड़े-बड़े आफिसर हैं उनकी बीवी बच्चों के नाम पर यह सब कुछ कर गये और सरकार को इस तरह के खोटे धन्धे करके चलाते रहे और राजस्थान को रसातल की ओर इन्होंने धकेला है। इस तरह की स्थितियां इन्होंने पैदा की। इसलिए इन्होंने पिछले 13–13 वर्ष तक नगरपालिकाओं के चुनाव नहीं करायें। आज लोकतन्त्र की बात करते हैं। नगर परिषद् के चुनाव नहीं करायें। आज भैरोंसिंह शेखावत की सरकार है जिसने 147 नगरपालिकाओं, नगर परिषद् के चुनाव कराये, सहकारी संस्थाओं के चुनाव करायें और अब पंचायतों के चुनाव करवाने की तैयारी है। आज इस तरह की स्थिति है। आज जितने जिला प्रमुख, जितने प्रधान गाड़ियों का दुरुपयोग कर रहे हैं, मैं तो हमारी सरकार से निवेदन करता हूं कि जो दुरुपयोग कर रहे हैं, जो घिनौनी राजनीति चला रहे हैं उनकी गाड़ियां छीन ली जाय, पंचायतें भंग करादी जाय, प्रधानों को हटा दिया जाय, जिला प्रमुखों को हटा दिया जाय नहीं तो वे राजस्थान में और इस तरह की घिनौनी राजनीति को बढ़ावा देंगे। तो मेरा इस पर स्पष्ट कहना है जिस तरह की हमारे राजस्थान की परिस्थितियां हैं उसके अनुरूप आम किसान का किस तरह से हित हो सकता है और आम आदमी को किस तरह से ऊंचा उठाया जा सकता है। अन्त्योदय योजना के नाम पर गरीब के घर से हम लोग दीपक जलायेंगे और इन्दिरा आवास के नाम पर इन लोगों ने लूटा है, ग्रामीण रोजगार के नाम पर इन्होंने लूटा है और तरह-तरह की योजनाएं चला कर इन्होंने लूटा है। बायो गैस के नाम पर फर्जी प्लाण्ट बना कर राजस्थान में कांग्रेस ने अपने घर भरे हैं। यदि कोई इस तरह की स्थिति देखना चाहे तो मेरे क्षेत्र में आ जावे। जितने बायो गैस प्लान्ट स्वीकृत किये गये थे वह आज एक भी नहीं मिलेगा। इस तरह की स्थिति है। गाय और बैल खरीदने के नाम पर फर्जीवाड़ा किया है। आज राजस्थान में भैरोंसिंह शेखावत की सरकार है। जो भी बैलगाड़ी खरीदता है उसी को ही कर्जा मिलता है। जिस गरीब के घर पर दीपक नहीं है उनके वहां रोशनी की जाती है और आज आप इस सरकार को गाली देना चाहते हैं। हम यथार्थता की स्थिति में खड़े होकर सरकार को चलाना चाहते हैं और इन्होंने कुर्सी को बचाने के लिए सरकार चलायी है। तो मेरा इस अवसर पर निवेदन है कि राजस्थान में जो स्वदेशी के आधार पर हमारे पुरखों ने बात कही है उस आधार पर, परम्परागत स्रोतों को हम फिर से लागू करेंगे और किसी भी गांव में पेयजल की समस्या खड़ी नहीं रहे, गरीब ऊंचा उठे, गरीब का झोपड़ा बने,

52

(श्री बंशीलाल पटवा)

बड़े गांवों को सड़क से जोड़ दिया जाय। इस तरह की जो भी योजनाएं हैं उनमें कृषक को बिजली मिले, पानी मिले, बिजली जनरेट हो। इस दिशा में कदम उठाना चाहते हैं और यही दिशा निर्देश राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में दिया है। भैरोंसिंह शेखावत की सरकार पिछले साल बनी। राज्य की माली हालत खराब होते हुए भी विकास के काम किये और इस वर्ष 1166 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये। यह जो योजना है उसके अन्तर्गत यह चालू सरकार अच्छी बनेगी और सदा-सदा के लिए भैरोंसिंह शेखावत की सरकार कांग्रेस की छाती में कील ठोकने का काम करेगी। इतना ही कहते हुए मैं अपने विचार समाप्त करता हूं। जय भारत।

श्री सभापति : कांग्रेस पार्टी के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें ?

जनता पार्टी के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें ?

कम्युनिस्ट पार्टी के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें ?

श्री मदनलाल सैनी।

श्री मदनलाल सैनी (गुढ़ा) : माननीय सभापति महोदय, आज खुशी की बात तो यह है कि जो राम विपक्ष निकल गया था आज इनको याद आ गया है। माननीय जोशीजी से और विपक्षी सदस्यों से मैं एक प्रार्थना करना चाहूंगा कि भूख हड़ताल करने की आदत आपकी कभी रही नहीं इसलिए आपके सदस्य अनुशासन में रहे, आपके निर्णय का पालन करें, बीच-बीच में नाश्ता नहीं करें। इसलिए इसको लम्बी मत चलाइये नहीं तो यह नियम टूट जायेगा। अभी चर्चा हो रही थी सरकार के दल बदल की। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं, माननीय सभापति महोदय, 1967 का वो साल। जब कांग्रेस ने सत्ता प्राप्ति के लिए सुखाड़िया के नेतृत्व में कत्ले आम गोली चलायी थी। कांग्रेस की सरकार बनायी थी मां, बहिनों के सुहागों को उजाड़ कर। जिन्होंने माताओं के छोटे-छोटे बच्चों को और बीमारों को गोली मारी थी। इस प्रकार की सरकार को आज यहां बैठना नहीं चाहिये और उस काण्ड के कारण से कांग्रेस को उसी समय भंग कर देना चाहिये था। जो पार्टी लोगों पर गोलियां चला कर सरकार बनाना चाहती हैं उस पार्टी को तो बोलने तक का हक ही नहीं रहता।

आज दूसरा दर्द है, वह दर्द इस प्रकार से खड़ा हो गया कि जो इतनी बड़ी योजनाएं बनी हैं, आज 1166 करोड़ रुपये की योजना बनी है जो राजस्थान के गरीब तक पहुंचेगी। राजीव गांधी कहते थे कि मैं एक रुपया दिल्ली से भेजता हूं लेकिन नीचे पहुंचते-पहुंचते 15 पैसा रह जाता है। इसमें कहा गया है कि 15 पैसा नहीं 85 पैसा ले जाने वाले लोग जेल के अन्दर पहुंच जायेंगे लेकिन जनता के पास पूरा रुपया पहुंचेगा। इस प्रकार की व्यवस्था इस अभिभाषण में की गई है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान इस अभिभाषण में जो गरीब जनता के लिए किया गया है उस ओर दिलाना चाहता हूं।

53

(श्री मदनलाल सैनी)

मैं इस अभिभाषण का पुरजोर शब्दों में स्वागत करता हूं। यह एक इस प्रकार का ऐतिहासिक अभिभाषण है, एक ऐतिहासिक योजना है जिसकी ओर राज्यपाल महोदय ने इशारा किया है कि आने वाले समय में, आने वाले वर्ष में यह सरकार किस प्रकार की योजना ले रही है, कार्यक्रम ले रही है।

हमारे सब माननीय सदस्य जानते होंगे कि इन्होंने गांव के लोगों की भूख बढ़ाई, मांगें खड़ी की गयी। गांव के लोगों में समर्पण का, त्याग की भावना कांग्रेस ने चालीस साल में खड़ी नहीं की, पैदा की पर अपना गांव अपना काम योजना में इस प्रकार की बात खड़ी की गई है ताकि गांव के लोगों का भी कुछ योगदान विकास के काम में हो। 30 प्रतिशत गांव के लोग इक्ट्ठा करेंगे और 70 प्रतिशत सरकार देगी और यदि राजस्थान के गांवों में, गांव के लोगों के द्वारा पैसा इक्ट्ठा करके बनाई जाने वाली इमारत बनायी गयी तो उस इमारत की एक भी कंक्रीट गिरेगी नहीं, जनता उसके लिए खड़ी हो जायेगी। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी का स्वागत करूंगा कि उन्होंने यह अभिनव योजना जो आज तक किसी ने भी रखी नहीं, जो योजना हिन्दुस्तान की किसी भी सरकार ने नहीं रखी इससे जनता में समपर्ण का भाव आयेगा और इसके कारण से गांव में काम होगा।

माननीय सभापति महोदय, प्रान्त में पशुओं की बहुतायत है लेकिन दूध की कमी है। गायों और भैंसों की नस्ल सुधार कर दूध का भण्डार राजस्थान में खड़ा किया जाय इस प्रकार की योजना बनी है और उस योजना के तहत माननीय सभापति महोदय, तीन लाख अस्सी हजार गाय भैंसों का गर्भाधान किया जायेगा। यह गर्भाधान इस प्रकार से होगा कि उससे 3 लाख 80 हजार बछड़े तैयार होंगे जिससे दूध का उत्पादन बढ़ेगा। दूध का भण्डार इतनी बड़ी मात्रा में बढ़ेगा कि हम अपनी आवश्यकता से अधिक दूध का उत्पादन कर सकेंगे।

अन्त्योदय योजना जो कांग्रेस सरकार ने बंद की थी। आज उसमें गांव के पांच आदमी, सात आदमी, दस आदमी, पन्द्रह छांटकर....(व्यवधान)

माननीय मुख्य सचेतक जी को मैं कहना चाहूंगा कि मैं अकेला ही काफी हूं इसलिए आप जितना बोल सकते हैं, बोलिये।

माननीय सभापति महोदय, अन्त्योदय परिवारों का जो चयन किया जायेगा, पांच सौ, एक हजार की सीमा तय करके, पांच आदमी, सात आदमी, दस आदमी, पन्द्रह आदमी तय किये जायेंगे। उन परिवारों का समुचित व्यवस्था, एक आदर्श व्यवस्था खड़ी करने का जो निर्णय किया गया है, योजना बनायी गयी है, उस योजना का मैं स्वागत करता हूं। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी को इसके लिए बधाई देता हूं कि गांव के उपेक्षित आदमी का उन्होंने चिन्तन किया। एक झोपड़े से निकला हुआ ही जान सकता है कि झोपड़ी वाले का दर्द क्या है ? तो इस झोपड़े के दर्द को उन्होंने समझा।

(54)

(श्री मदनलाल सैनी)

खेती का जहां तक सवाल है। आज तक किसानों का शोषण किया गया है किसानों से वोट मांगे गये, शहरों और किसान के बीच दूरिया खड़ी की गई, सारा पैसा शहर पर खर्च किया गया पर इस सरकार ने किसानों की चिन्ता की है। इस अभिभाषण के द्वारा हमें लगता है कि आज 25 हजार कुओं को बिजली के कनेक्शन दिये जा चुके हैं। क्या एक साल में आज तक इतने कनेक्शन किसी को मिले हैं? आपके पास दरख्वास्त पेंडिग हो तो कल चलिए मेरे साथ कनेक्शन करा दूंगा।

दूसरी एक बात जो कही गई है वह है डार्क जोन की। इससे राजस्थान के कई हिस्से पीड़ित हैं। जिसके कारण राजस्थान के कई हिस्सों का विकास नहीं होता है क्योंकि जमीन के नीचे पानी नहीं है उस डार्क जोन में पिछले 87–88 से 89–90 में जो वर्षा हुई उसके कारण जल स्तर ऊपर आ गया है इसलिए उस पर दुबारा विचार करने के लिए, डार्क जोन जहां पर है वहां पर दुबारा विचार होगा इस प्रकार की चर्चा की गई है। डार्क जोन प्रभावित क्षेत्रों के लिए इससे बढ़ा तोहफा माननीय मुख्य मंत्री का और कोई नहीं हो सकता है। इससे कई हिस्से डार्क जोन से अलग हो जायेंगे और वहां खेती का विकास हो सकेगा।

सभापति महोदय, जो राजस्थान का सर्वे हुआ है उसके हिसाब से 16 लाख कुएं राजस्थान में बन सकते हैं। मैं धन्यवाद देना चाहूंगा माननीय मुख्य मंत्रीजी को जिन्होंने 2 लाख कुएं बनाने का निर्णय किया है। राजस्थान में यह इस प्रकार की योजना बनाई गई है जिसके कारण से किसानों को रोजगार मिलेगा, प्रदेश धन-धान्य से परिपूर्ण होगा और जो आज तिलहन-अन्न हम बाहर से मंगवाते हैं राजस्थान पंजाब को पीछे छोड़ देगा। इस प्रकार की योजना के लिए मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को बधाई देना चाहता हूं कि गांव की और गरीब की बात उन्होंने इसमें रखी है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है कर्जा माफी की। पिछले सत्र के समय जब कर्जा माफी की बात चल रही थी, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जब कर्जा माफी की घोषणा की थी और आज जब वह कर्जा माफ किया गया तो उसके हिसाब से 9 लाख 72 हजार किसान परिवारों को गरीब परिवारों को उसका लाभ मिला और इस मद में 270 करोड़ रुपया राजस्थान सरकार ने भुगतान किया है। माननीय सदस्य कह रहे हैं कि किसी को भी नहीं मिला। वास्तव में माननीय सदस्य या तो अखबार नहीं पढ़ते या गांवों में रहते नहीं इसलिए उनको पता नहीं है। अपना क्वार्टर छोड़कर कहीं जाते नहीं है और अखबार पढ़ते नहीं है क्योंकि वही आदमी यह कह सकता है कि किसी को भी कर्जा माफ नहीं हुआ। यह हो सकता है कि आपका कर्जा माफ नहीं हुआ होगा आप उस सीमा में नहीं आते हैं, इसलिए आपका माफ नहीं हुआ होगा।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपको एक बात की ओर ध्यान दिलाना चाहूंगा कि राजस्थान में कुछ इस प्रकार के डार्क

(श्री मदनलाल सैनी)

जोन हैं, पहाड़ी बैल्ट है जिसमें पहाड़ों का पानी रोकना चाहिए। यह पानी जब वेग से गिरता है तो दूर-दूर तक जमीन का कटाव करता है और मिट्टी खराब कर देता है। इसलिए मैं मुख्य मंत्रीजी से आग्रह करूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में खेतूड़िया नाला और कई इस प्रकार के नाले हैं जो जब निकलते हैं तो हजारों बीघा जमीन की बरबादी करते हैं। इस प्रकार के पानी को बांध बनाकर बांधना चाहिए। झुन्झुनूं जिले में इस प्रकार के बड़े बांधों की रचना नहीं की गई, वहां और जगह भी हैं जहां इस प्रकार के बांधों की रचना करना चाहिए।

जीवन धारा के अन्दर 35 हजार कुएं खोदने का निर्णय किया है इस निर्णय का भी मैं स्वागत करता हूं। कुएं बढ़ने से किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। आज किसानों के नौजवान लड़के जो खेती की व्यवस्था नहीं होने के कारण दर-दर नौकरी के लिए भटकते हैं उन किसानों के लड़कों को, उनके खाली हाथों को अपने खेत पर ही काम मिल जायेगा, वे अपने खेत पर ही काम करने लग जायेंगे। इस प्रकार की अनूठी ऐतिहासिक योजना के लिए मैं माननीय मुख्य मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं।

मान्यवर, एक ऐतिहासिक काम हुआ और वह हुआ कि कांग्रेस के लोग जो कुण्डली मार कर बैठ गये थे और अफसरों को बैठा दिया था कि तुम भी खाओ बेटे और हमको भी लाकर दो। इस प्रकार के अफसर जो म्युनिसिपैलिटी में बैठ गये थे। जनता सरकार ने आते ही एक धक्का मार कर, गिराकर चुनाव करा दिये। इसलिए प्रजातन्त्र की हिमायती यदि कोई है तो भैरोंसिंह शेखावत की सरकार है जिसने प्रजातन्त्र का स्वागत किया है और हम ही हैं जो पंचायतों का समय पूरा होने से पहले भंग नहीं कर रहे हैं। नहीं तो आपको याद होगा आपके पहले के साल कि आप क्या करते थे? जब आप आते थे तो इस प्रकार से करते थे। अभी मद्रास की सरकार गिरायी आपने। इस प्रकार की व्यवस्था हुई।

इस प्रकार की जो स्थिति है उसमें भैरोंसिंह सरकार ने आते ही म्युनिसपैलिटी के चुनाव कराये और कोपरेटिव सैक्टर, जो गांवों का सैक्टर है, जिससे गांव का किसान, छोटा व्यक्ति प्रभावित होता है, जहां कई प्रकार के घोटाले थे, पुराने लोग बेईमान और भ्रष्ट होकर बैठे थे, उन लोगों को हटाया और हटाने से नई राहत जनता को मिलेगी, इसके लिए भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगा और दूसरी मांग करना चाहता हूं कि जो भ्रष्ट सरपंच, प्रधान और प्रमुख बैठे हैं, जो आप लोगों के साथ मिलकर बैठे हैं, जो भ्रष्टाचार की जड़ और अड्डा हैं, उन नागनाथों और सांपनाथों को इस विधान सभा सत्र के दौरान भंग करना चाहिये, यह भी मैं मुख्य मंत्री महोदय से मांग करना चाहता हूं। (व्यवधान) सरकार ने इस प्रान्त में एक अनूठा कार्यक्रम दिया है कि इस प्रान्त में जो बढ़ता हुआ रेगिस्तान है, रेगिस्तान बढ़ रहा है और जंगल कट रहे हैं जिससे गरीब जनता के पास ईंधन की कमी होती जा

(श्री मदनलाल सैनी)

रही हैं, उस कमी को पूरा करने के लिए जंगल लगाने की योजना बनी है। इन जंगलों के लग जाने से इमारती लकड़ी मिलेगी, जलाऊ लकड़ी मिलेगी और वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण पर भी रोक लगेगी, खेत हरे-भरे होंगे, भूमि का कटाव रुक जायेगा और ग्रामीण जनता को लाभ मिलेगा। इस प्रकार से जंगल लगाने का जो अभियान चलाया है, इस अभियान के लिए मैं समझता हूं राजस्थान की जनता इस मंत्रिमण्डल और मुख्य मंत्री श्री भैरोंसिंह जी शेखावत को कभी भूल नहीं सकती कि राजस्थान में एक मुख्यमंत्री हुआ था जिसने जंगल लगाये जिससे जनता को लकड़ी जलाने को मिली और वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण भी समाप्त हो गया।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें।

श्री मदनलाल सैनी : इस प्रकार से जंगल लगाने की जो योजना चली है वह अपने आपमें एक अनूठी योजना है।

राज्य सरकार ने बात का और फैसला किया है और वह बात यह है कि आज गरीब जनता को न्याय प्राप्ति के लिए अदालतों में दूर-दूर तक जाना पड़ता है। कांग्रेस के लड़ाई कराने में अभ्यस्त हमारे साथी एक दूसरे की पीठ पर हाथ रखते थे और बोलते थे आप इधर से लूटों मैं उधर से लूटता हूं। लोगों को मीलों दूर तक जाना पड़ता था और नेताजी को जीप में लेकर जाना पड़ता था, रात को होटल में ठहराओ, सुबह 7 बजे की अदालत में जाओ। इस झगड़े को खत्म करने के लिए तहसील स्तर तक अदालतों का निर्माण किया जायेगा, मैं समझता हूं न्याय प्राप्ति के लिए गरीब जनता को एक बहुत बड़ा तोहफा इस सरकार ने दिया है, इसके लिए श्री माननीय मुख्य मंत्री महोदय बधाई के पात्र हैं।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें। समय का ध्यान रखें।

श्री मदनलाल सैनी : विद्युत के बारे में मैं कह रहा था कि राजस्थान आत्मनिर्भर बने, इसके लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं स्वीकृत की गई हैं और बरसिंहसर की जो योजना है, उसके लिए स्वीकृति मिली है और अन्ता और धौलपुर के गैस प्रोजेक्ट के लिए स्वीकृति मिल जाने की आशा है। इस प्रकार से विद्युत में राजस्थान आत्मनिर्भर हो, इस प्रकार की योजना बन रही है।

सभापति महोदय, पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आपके गांव में और मंडावा में पर्यटन विकास किया गया है। माननीय चन्द्रभान जी आप क्यों भूल जाते हो कि आपके गांव में और कोई जाता नहीं था, अब राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा मिलने से लोग हवेलियां, गढ़ देखने जा रहे हैं, तो आप इस बात को भी ध्यान में रखिये कि राजस्थान में इस प्रकार के जो भी स्थान हैं, जो पर्यटन के योग्य बनाये जा सकते हैं, उन स्थानों में से अधिकतम को पर्यटन के लिए बनाया जायेगा, ताकि विदेशी जनता यहां आये और हमें पैसे की प्राप्ति हो।

राजस्थान के वैभव का भी लोगों को दर्शन हो सके। शिक्षा के क्षेत्र में जो

(श्री मदनलाल सैनी)

अध्यापकों की कमी चल रही थी, उस कमी को पूरा करने के लिए इण्टरव्यू चल रहे हैं और मैं समझता हूं इस महीने तक राजस्थान में सब जगह स्कूलों में अध्यापक लगा दिये जायेंगे।

चिकित्सा के क्षेत्र में हमारे चिकित्सा मंत्री बड़े सजग हैं। सभी चिकित्सालयों में एक हजार के करीब नये डाक्टर्स को रिक्रूट करके यह प्रयास किया गया है कि उन्हें सब जगहों पर लगा दिया जाये, ताकि कोई भी जनता इस कारण से तड़पकर नहीं मरे कि उसको चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं हुई। इस प्रकार की व्यवस्था करने के लिए चिकित्सा मंत्रीजी का भी मैं स्वागत करता हूं।

गांव-गांव और ढाणी-ढाणी को सड़क से जोड़ने की जो योजना है, उसका भी मैं स्वागत करता हूं। पैट्रोल और डीजल की कमी सारे देश में खाड़ी युद्ध के कारण से आई लेकिन हमारे रसद मंत्रीजी और मुख्य मंत्रीजी के सफल प्रयासों के कारण से इस समस्या का ठीक तरह से समाधान किया गया, उसके लिए भी मैं उनका बड़ा आभारी हूं और बधाई देना चाहता हूं।

खनिज सम्पदा का दोहन ठीक प्रकार से हो, इसके लिए राजस्थान में लिग्नाइट के जो भण्डार है और दूसरे जो लाइम स्टोन, ग्रेनाइट और स्टील गेंड है, उसका भी और उपयोग करना चाहिए। मैं याद दिलाना चाहूंगा खंडेला का पाइराइट्स फास्फोरस का कारखाना, उसके लिए मैं मुख्य मंत्रीजी से आग्रह करूंगा कि केन्द्रीय सरकार से मन्जूर करवाये जिससे हजारों की तादाद में गरीब, युवा लोग काम कर सकें। अतः इस प्रकार से खंडेला और सलेदीपुरा के खाद कारखानों को मन्जूर करवाना चाहिए। अपनी योजना में इस प्रकार की बात वह रखें।

सभापति महोदय, मैं एक बार फिर राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का पुरजोर शब्दों में समर्थन करता हूं। यह अनूठा, कल्पनातीत और ऐतिहासिक अभिभाषण है। इस प्रकार के डाक्यूमैण्ट से राजस्थान के (गरीब की झोपड़ी में पानी, बिजली पहुंचेगी। इस प्रकार की जो योजना बनायी गई है, उसके लिए मैं आज सारे हाउस को भी कहता हूं कि ऐसा अभिभाषण आपको न भूतो न भविष्यति पढ़ने को मिला होगा, इसका समर्थन करिये। धन्यवाद। जय भारत।

श्री सभापति : कांग्रेस के सभी सदस्यों...

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री राजेन्द्र राठौड़ (उप मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, मैं मांग करता हूं कि सदन का समय दो घण्टे और बढ़ा दिया जाये।

श्री सभापति : क्या सदन की सहमति है?

(स्वीकृत)

सदन का समय दो घण्टे के लिए और बढ़ाया जाता है।

(श्री सभापति)

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

कांग्रेस के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहे ?

जनता दल के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें ?

कम्युनिस्ट पार्टी के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें ?

श्री नन्दकिशोर जी ।

श्री नन्दकिशोर शर्मा (छबड़ा) : माननीय ससभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव का मैं पुरजोर समर्थन करता हूं । इस अभिभाषण में सरकार की किसान से लेकर गरीब तक की योजनाएं हैं । माननीय मुख्य मंत्री जी की पहली योजना गतवर्ष भ्रष्टाचार को मिटाना और उसका दृढ़ता से पालन है । चाहे गत वर्ष कितनी ही विषम परिस्थितयां रही हों, चाहे मंडल आयोग की, या कोई भी हो, उनका दृढ़ता से पालन करना, जिन्होंने भ्रष्टाचार किया है उनको दण्ड दिलाना यह सरकार की योजना रही है । मुझे बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि तीन-तीन मुख्य मंत्री होते हुये, जिन्होंने चालीस साल तक संवैधानिक प्रक्रिया का पालन करना सीखा हो । अभिभाषण में इतनी सुन्दर योजना है जो गांव का विकास चाहते हैं, पानी देना चाहते हैं, गरीब के खेत में सिंचाई की सुविधा देना चाहते हैं । उन पर कोई योजना सुझाने के स्थान पर उल्टे महामहिम राज्यपाल महोदय का अपमान किया, प्रति छीन ली, माइक हटा दिया, यह लज्जा की बात है । ऐसे अनुभवी जहां हों वहां यह और खेदजनक बात है । उसमें और विकास की बात बतायी जाय कि ऐसे किसान का विकास होगा, उसमें नयी बात कोई बतावें कि भ्रष्टाचार कैसे मिटेगा । जिसमें विकास की बात हो, गांव तक पहुंचने की बात हो गरीब का भला करनेकी बात हो, उसका यदि विरोध किया जाता है, यह बड़ी लज्जा की बात है । जहां तीन-तीन मुख्य मंत्री बैठे हों वहां अध्यक्ष और राज्यपाल का अपमान होता हो, ये बातें इस विधान सभा के लिए, संसद् के लिए अपमान जनक हैं ।

हमने जनता से वादे किये थे कि कर्जा माफ होगा, कर्जा माफ किया । कोरी घोषणाएं नहीं करते हैं, जैसे पिछले चुनावों में कांग्रेस ने सड़कों की घोषणा कर दी, पैसा था ही नहीं । स्कूलों की घोषणा कर दी, अध्यापक पहुंचे ही नहीं । जिनका खामियाजा आज तक भोग रहे हैं । उनको अब पूरा किया जा रहा है । हमने सड़कों के लिए योजना बनायी कि एक हजार की आबादी तक सड़क पहुंचायी जायेगी । यह योजना बनाकर हमने इन्होंने जो घोषणाएं की सड़कों की, उनको भी पूरा करने की कोशिश की । नगर पालिकाओं और सहकारी संस्थाओं के चुनाव कराकर जनतंत्र के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त की है । प्रदेश में कृषि विकास के लिए 470 करोड़ रुपए की योजना बनाकर विश्व बैंक को भेजी गयी है । उसकी 2–3–4 बैठकें हो गयी हैं । अगर वह योजना पूरी हुई तो कृषि का समग्र विकास होगा । तिलहन की कमी जो इन्होंने इस प्रदेश में पूरी की थी

(श्री नन्दकिशोर शर्मा)

उसका तिलहन संघ बनाया जिसमें 250 करोड़ का कारोबार हुआ। आज राजस्थान में करीब 24 लाख टन सरसों और सोयाबीन होगा, जिसको कृषि जगत ने अपनी योजना बनाकर बढ़ावा दिया और हमारा प्रदेश तेल में आत्मनिर्भर ही नहीं होगा बल्कि बाहर ही भेजेगा। कृषि की इन योजनाओं के लिए मुख्य मंत्रीजी और यह सरकार धन्यवाद की पात्र है। कुओं पर ऋण राहत देकर एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया है कि दो लाख कुओं को हम निश्चित समय में पूरा करेंगे जिससे छोटे-छोटे गरीबों को राहत मिलेगी। उन गरीबों के लिए हम बड़ी-बड़ी योजनाएं नहीं बना सकते, लेकिन छोटी-छोटी योजनाएं बनाकर उस गरीब के कुएं पर सिंचाई होगी। पैदावार बढ़ेगी, सिंचाई भी बढ़ेगी और उस गरीब को लाभ भी होगा। ये तीनों काम होंगे, इसके लिए माननीय मुख्य मंत्रीजी बधाई के पात्र हैं। अन्त्योदय की योजना पहले भी 1977 में चलाकर एक नया सन्देश दिया था, एक नयी सोच दी थी कि गरीब तक कैसे पहुंचा जाय। वह सोच चाहे आई. आर. डी पी. में तब्दील हुई हो या और योजना में हुई हो लेकिन गांव के, विकास की एक नयी सोच दी। उसमें कुछ बिगाड़ आये। आज फिर नये सिरे से प्रत्येक गांव में पांच आदमियों को छांटकर उनका हर दिशा में समग्र विकास किया जाय, यह सोच दिया इसके लिए सरकार धन्यवाद की पात्र है।

बिजली में बरसिंहपुर और सूरतगढ़, दोनों योजनाएं मंजूर हो गयी हैं। धौलपुर की भी मंजूर होने वाली है। रेल्वे लाइन में में एक हजार किलोमीटर छोटी लाइन बड़ी लाइन में बदलना राजस्थान के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी इन बातों का हम पूरी तरह से स्वागत करते हैं। पेयजल के लिए गत वर्ष इतना पानी नहीं था, सरकार ने उसका दृढ़ता से मुकाबला किया और पेयजल का संकट नहीं आने दिया। योजना के पूरा होने पर केवल एक हजार गांव ही रहेंगे, यह बहुत बड़ी बात होगी। आने वाले एक दो वर्षों में उनको भी पूरा किया जायेगा। इन बातों पर कार्य करना गांव के लिए एक बहुत ही सुन्दर बात होगी। "अपना गांव अपना काम" योजना तो और भी सुन्दर योजना है, इन सारी योजनाओं के चलते हुए एक नयी योजना कि कोई गांव जिसको बहुत ज्यादा तकलीफ है मिलकर चाहे कि यह काम जरूर होना चाहिए, उसके लिए एक नयी सोच दी कि वह अपना पैसा लगाकर इस कार्य को पूरा करे। स्कूल बनवाये, सड़क बनवाये, औषधालय बनवाये या और कोई काम करे, उसमें गांव का योगदान होगा और काम भी ज्यादा अच्छा होगा। वनों के विकास में गांवों को भागीदारी दी गयी, क्योंकि आज तक सरकार ने कांटा ही कांटा है लगाया कुछ नहीं। यदि गांव उसमें भागीदार होगा तो लकड़ी का भी विकास होगा। ये सारी योजनाएं बहुत सुन्दर योजनाएं हैं राजस्थान के विकास के लिए। माननीय भैरोंसिंह जी ने राजस्थान का बजट 750 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 1166 करोड़ रुपए तक पहुंचाया है। विकास गांव तक पहुंचाने के लिए इस 46

(श्री नन्दकिशोर शर्मा)

प्रतिशत की बढ़ोतरी से जलन नहीं लगनी चाहिए, उसमें बढ़ोतरी होनी चाहिए। यह जलन क्यों होती है? जब गांवों का विकास होता है, एक गरीब ऊंचा उठता है तो कांग्रेस वालों को या इनको जलन क्यों होती है? एक नयी सोच दी जानी चाहिए थी। सिंचाई की सुविधा के लिए जीवन धारा में कुएं बढ़ते जा रहे हैं, छोटे-छोटे एनिकट् से गरीबों को लाभ मिला है।

अभी न्याय की बात हो रही थी। तहसील स्तर पर यदि गरीबों को न्याय मिलेगा तो उसको आने-जाने में जो किराया भाड़ा मिलता है उससे वह वंचित होगा। इसी तरह हमने एक हजार की आबादी तक के गांवों तक सड़क की योजना बनायी। वह मिले, गरीबों को न्याय मिले, गांव खुशहाल हों। हम बिजली में आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रहे हैं, हमने सिंचाई के दो लाख कुओं का एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया है, वनों के विकास का कार्यक्रम बनाया है। इससे गांव का विकास होगा, गांव में किसान के पास जब कुछ होगा तो वह व्यापारी के पास आयेगा। व्यापारी के पास आयेगा तो उसका विकास होने से शहर का विकास होगा और वापस फिर गांव का विकास होगा इसलिए पहला काम गरीब का विकास, गांव का विकास। इस नारे का मैं पुरजोर समर्थन करता हूं और इसी के साथ अपनी बात पूरी करता हूं।

श्री सभापति : कांग्रेस के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें? जनता दल के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें? कम्युनिस्ट पार्टी के बोलना चाहें?

माननीय श्री गुलाबसिंह जी।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित (सुमेरपुर): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल ने सदन में जो अभिभाषण रखा, बड़े ही दुख की बात है कि विरोधी पक्ष ने महामहिम राज्यपाल को अभिभाषण पढ़ने नहीं दिया। माइक छीन लिया, लाइट हटा दी और प्रति फाड़ दी (व्यवधान) चिल्ला लो चिल्ला लो। मैं कोई गलत बात नहीं कह रहा हूं। सही बात कह रहा हूं बिलकुल सही है।

सभापति महोदय, मुझे एक बात याद आती है। एक बच्चा घर पर गया। शान्ति से सुनो। बोला, मां! मैं रिकार्ड तोड़ आया हूं। मां बोली कि तू घर में प्लेट और कप तोड़ता है, बाहर रिकार्ड ही तोड़ेगा और क्या करेगा। सभापति महोदय, सत्ता में रहते हुए आज तक इन लोगों के कपड़े फाड़ने के सिवाय क्या किया, उनका हक छीनने के सिवाय क्या किया? उनके मुंह की रोटी छीनने के सिवाय कुछ नहीं किया। अब जब कुछ नहीं मिल रहा है तो इन्होंने अभिभाषण ही फाड़ दिया, वह माइक ही हटा दिया। कुछ न कुछ हटाना ही है, यह अभिभाषण का विरोध नहीं है। अभिभाषण में जो बात है वह अन्तिम हित की है। उसमें जिन बातों का समावेश किया गया है उन बातों पर अमल होकर अगर राजस्थान में कामों को गति मिले तो मैं कहता हूं कि इस कांग्रेस की आत्महत्या जैसी स्थिति हो जाती है। इसलिए इन्होंने इसका विरोध

(श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित)

किया है, बाकी कोई कारण नहीं है। सभापति महोदय, कोई कारण इनको नजर नहीं आया। इनको यह लगा कि यह सरकार काम करके इतनी उपलब्धियां ले लेगी, जनता में खुशहाली आयेगी, किसान जो पीड़ित, दलित रहा है, शोषण का शिकार रहा है वह कुछ ऊपर उठ आयेगा। इस अभिभाषण में जो विकास की बात कही है, पिछले अभिभाषण की चर्चा करना चाहूंगा कि 60 परसेन्ट राशि गांवों के विकास पर खर्च की जायेगी और उस पर सरकार ने अमल करते हुए सबसे पहले काश्तकारों के कर्जे माफ किये। आप +++खाली, जवाब दें इस बात का कि 40 साल में किसी एक काश्तकार का भी पैसा माफ किया है जो आज बैठकर +++ रहे हैं कि जो सरकार+++ है वह सरकार बदलनी है। ऐसी+++ सरकार थी वह तो बदल दी और थोड़े बहुत आये हैं इस बार जनता उनका भी सफाया कर देगी कोई चर्चा की बात नहीं है। कभी काश्तकारों को रोजी-रोटी दी नहीं और यहां सदन में बैठकर कहते हैं कि वह सरकार +++वह तो बदल दी।

सभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने जब पिछली घोषणा की थी काश्तकारों के कर्जे की, 241 करोड़ रुपए के कर्जे काश्तकारों के माफ किए हैं, उनको राहत दी हैं। राजस्थान में पानी की कमी है, आम काश्तकार और आम जनता बरसात के पानी पर निर्भर रहती है और इसी दृष्टि से जल संग्रहण विकास की नई-नई योजनाएं विकसित की जाकर सरकार ने यह मानस बनाया है कि बरसात के पानी के उपयोग से ज्यादा सिंचाई हो और ज्यादा से ज्यादा पैदावार हो जिससे गरीब काश्तकारों को लाभ हो और गांवों का विकास हो। इसी दृष्टि से फव्वारा सिंचाई पद्धति और सामुदायिक ट्यूब वैल्स की योजना सरकार ने रखी है मैं निःसंदेह कहता हूं कि इससे काश्तकारों को लाभ मिलेगा।

एकीकृत जल संग्रहण विकास योजना जोधपुर, अजमेर, भीलवाड़ा और उदयपुर के लिए स्वीकृत की गई है वहीं दूसरी और प्रदेश के लगभग 190 विकास खण्डों में राष्ट्रीय जल ग्रहण क्षेत्र विकास योजना का विस्तार किया गया है जिस पर 136 करोड़ रुपए खर्च किये जायेंगे। और ठीक इसी तरह से मरुस्थल विकास, सूखा सम्भाव्य क्षेत्र विकास एवं कंदरा विकास परियोजना आदि पर लगभग 300 करोड़ रुपये का प्रपोजल रखा है वह क्या राजस्थान के विकास के लिए नहीं रखा है, वह उस गरीब काश्तकार के फायदे के लिए सारी योजनाएं हैं उनसे काश्तकारों को निःसंदेह लाभ मिलेगा। इसके लिए माननीय मुख्य मंत्रीजी और यह सरकार बधाई की पात्र है।

समग्र कृषि का विकास कैसे हो, इसके लिए विश्व बैंक के सामने योजना रखी

+++शब्द/अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित)

और 470 करोड़ रुपए इसके लिए स्वीकृत हुए हैं। वह पैसा भी आपको नहीं मिलेगा, काश्तकारों को मिलेगा, आपको एक पैसा नहीं मिलने वाला है, काश्तकारों को मिलेगा और उसका लाभ भी काश्तकारों को मिलेगा।

सभापति महोदय इस सरकार के आने के बाद कृषि जिंसों के भाव बढ़े, रायड़ा, गेहूं आदि के भाव बढ़े। कृषकों को उनकी उपज का सही मूल्य नहीं मिलता था, आपके पुराने शासन काल का इतिहास उठाकर देखें। जिस समय पैदावार मण्डी में आई होगी तब 400-350 रुपए रायड़ा बिका होगा 1000-1200 रुपए का कभी भाव नहीं रहा। यह इस राजस्थान का सौभाग्य है कि इस सरकार ने उन काश्तकारों के लिए उपज के पैदावार के भाव निश्चित किए और बढ़ाये और आज उनको फायदा मिल रहा है।

किसी भी राज्य के विकास, नगरों के विकास या शहरों विकास की बात हो, जब तक स्थानीय निकायों का विकास नहीं होगा या उनका कार्यान्वियन सही नहीं होगा तब तक उनका विकास सम्भव नहीं है। इसी दृष्टि से वर्तमान सरकार ने साल के अन्दर नगर पालिकाओं के चुनाव करवा दिए, सहकारी संस्थाओं के चुनाव करवा दिए दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के चुनाव करवा दिए और जब इन सहकारी संस्थाओं के चुनाव होते हैं तभी गांवों का विकास होता है। पुरानी सरकार ने मैं आक्षेप लगाता हूं किसी गांव के विकास का काम नहीं किया, इन्होंने अपना विकास किया है गरीब की बात करते हो, आप नारा देते हैं कि सरकार बदल दो, दल बदलुओं को बदल दो लेकिन सदन में जितने पुराने मंत्री हैं, जितने पुराने विधायक हैं उनकी सारी सम्पत्ति की जांच करवायें जो जनता खुश होगी, पता चलेगा कि गरीबों का पैसा इस समय कहां पड़ा हुआ है, कहां अटका हुआ है। वह पैसा बाहर निकलेगा, यह नारा दें तो हम भी खुश होंगे।

राजस्थान में विकास की दृष्टि से वन सम्पदा के बारे में एक नई योजना सरकार ने रखी हैं, जनता का सहयोग मिले। सामुदायिक भावना और सहयोग की भावना से वन भूमि कहीं गोचर है या पड़त भूमि है इस तरह की भूमि का उपयोग नहीं हो रहा है सरकार की ओर से वह उनको दी जाकर वन लगाये जायेंगे और उनको सहयोग दिया जायेगा और जो उपज होंगी उससे सरकार को भी लाभ मिलेगा और उन लोगों को भी लाभ मिलेगा। इसलिए वन लगाने से आर्थिक दृष्टि से भी राज्य को फायदा होगा और मानसून की दृष्टि से जो बरसात की कमी है उससे राजस्थान निजात पा सकेगा।

सभापति महोदय, पशुपालन के लिए नस्ल सुधार के कार्यक्रम में "गोपाल योजना" रखी है। राजस्थान का विकास पशुधन और खेती पर आधारित है उस खेती और पशुधन को बढ़ावा देने के लिए यह "गोपाल योजना" रखी है उससे पशुपालकों और गांवों का निःसंदेह विकास

(श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित)

होगा, काश्तकार आगे बढ़ेंगे। इसके लिए भी माननीय मुख्य मंत्रीजी बधाई के पात्र हैं।

गांवों के विकास की इन सारी योजनाओं के साथ-साथ जनता पार्टी के 1977-80 के शासन काल में जो अन्त्योदय योजना लागू की थी उस अन्त्योदय योजना को फिर से लागू किया गया है और उसमें नई बातें और समावेश की गई हैं, मूलभूत आवश्यकताओं में चिकित्सा और शिक्षा को भी शामिल किया गया है ताकि किसी भी परिवार और गांव का समग्र विकास हो। एक ही दृष्टि से नहीं, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से भी विकास हो इसलिए, यह अन्त्योदय योजना दुबारा लागू की गई है। यह भी एक प्रशंसनीय कदम इस सरकार का है।

सबसे बड़ा "अपना गांव अपना काम" योजना जो आई है उसमें लोगों ने बढ़-चढ़ कर आना शुरू किया है। आप अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर देखें, शायद आप क्षेत्रों में नहीं जाते होंगे। लोग गले पड़ेंगे कि यह लो 30 पर्सेन्ट राशि और सरकार से 70 पर्सेन्ट राशि लेकर काम करवाओ। यह लोगों में उमंग जगी है। राजस्थानियों में ही नहीं बल्कि प्रवासी राजस्थानी जो बाहर रहते हैं वह लोग भी पत्र लिख-लिख कर हमसे जानकारी चाह रहे हैं कि किस तरह से पैसा हमको देंगे और किस तरह से विकास करेंगे? तो यह भी एक प्रशंसनीय कदम है इस सरकार का जो गांवों के विकास के लिए लाभकारी होगा।

स्वरोजगार में कृषि पालन और पशुपालन को भी शामिल किया गया है यह भी किसी शहरी और धनाढ्य वर्ग के लिए नहीं है यह भी गांवों के गरीबों और मजदूरों/काश्तकारों के हित और उन्नति के लिए लागू की गई है इसका लाभ भी ग्रामीण जनता को पहुंचेगा।

अनुसूचित जाति के चयनित परिवारों को 35 हजार कुंएं और 20 हजार इन्दिरा आवास मकान निर्माण का लक्ष्य रखा गया है उससे निःसंदेह पिछड़े वर्ग को आज तक शोषित और दलित रहे हैं उनको लाभ मिलेगा। पिछली बार इसकी बड़ी आलोचना की थी कि 25 हजार कुओं का लक्ष्य बहुत कम रखा है। इन्होंने 23 हजार का 2 साल में रखा था। पढ़ लें पिछले 2 साल का रिकार्ड उठाकर पिछले 2 सालों में 23 हजार कुओं को कनेक्शन दिया था और इस सरकार ने 25 हजार कुओं को कनेक्शन्स दिए हैं और वह भी पैसे से कनेक्शन्स नहीं मिलेंगे, नीति से मिलेंगे। रिश्वत खोरी से मिलने वाले नहीं है, नीति से 25 हजार कनेक्शन्स मिले हैं।

श्री सभापति : समाप्त करने का प्रयास करें।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित : राजस्थान में विद्युत की कमी है। विद्युत की कमी से आज तक काश्तकार पिछड़ा रहा, औद्योगिक विकास नहीं हो पाया और इस दृष्टि से आज तक जो पिछली सरकारें रहीं हैं इस बारे में गम्भीरता से उन्होंने प्रयास नहीं किए। माननीय श्री भैरोंसिंह जी ने इसको गम्भीरता से लिया है और

(64)

(श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित)

756 करोड़ की बरसिंहसर लिग्नाइट परियोजना को मंजूरी मिली है। सूरतगढ़ ताप परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। इनका काम भी पूरा होगा तो निश्चित रूप से मैं कहता हूं कि, सभापति महोदय, इससे औद्योगिक विकास राजस्थान में होगा, कृषि के क्षेत्र में विकास होगा, औद्योगिक क्षेत्र को भी विद्युत से लाभ होगा।

सरकार की ओर से ऐसे प्रयास किए गए हैं कि जैसे चुंगी में रियायत की घोषणा की गई है, मण्डी शुल्क में छूट की घोषणा की गई है, बिक्री कर में भी रियायत देने घोषणा की गई हैं, पूंजी विनियोजन और सब्सिडी की सुविधा ज्यादा लागू की गई है उसके लिए भी लोग आगे आयेंगे और ज्यादा से ज्यादा उद्योग राजस्थान में लगेंगे। इसके लिए भी माननीय मुख्य मंत्रीजी बधाई के पात्र हैं कि औद्योगिक नीति में परिवर्तन करके यह समावेश किया है निःसंदेह लोग आगे आकर उद्योग राजस्थान में लगायेंगे।

चिकित्सा सुविधा के लिए राजस्थान के अन्दर नेत्रहीन पीड़ा को इस सरकार ने समझा है और नेत्र ज्योति नाम से शिविर लगाये जायेंगे इससे नेत्रहीनों की चिकित्सा होगी और इस तरह से एक जो कार्यक्रम हाथ में लिया है, एक बड़ी उपलब्धि होगी कि नेत्रहीनों को या मोतिया बिन्द के जो रोगी हैं उनको इसका लाभ मिलेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में भी सरकार की यह मंशा है जो इस अभिभाषण के माध्यम से दर्शाई गई है कि हम शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना चाहते हैं। वास्तव में शिक्षा इतनी बढ़ गई है कि लड़का एम. ए., बी ए., करके डिग्रियां हासिल करके भी किसी लायक नहीं रहता। वह कोई चाय की दुकान नहीं खोल सकता तो ऐसी शिक्षा से क्या लाभ। इस दुखान्तिका को इस सरकार ने समझा है। इस पीढ़ी को समझा है और इसके लिए यह नीति बनाई है कि शिक्षा में स्व-रोजगार को भी शामिल किया जाए।

सभापति महोदय, इसके साथ-साथ सरकार प्रशंसा की पात्र है जिन्होंने इस अभिभाषण के माध्यम से घोषणा की है कि दो साल के भीतर-भीतर राजस्थान के सभी गांवों में पेयजल पहुंचा दिया जाएगा। जो काम पिछले चालीस सालों से नहीं हुआ दो साल में इस सरकार ने करने का बीड़ा उठाया है। इसलिए मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं माननीय मुख्य मंत्री जी को कि हर गांव में पेयजल की सुविधा होगी। सड़कों का जाल बिछाया जाएगा इस दृष्टि से भी सरकार ने एक हजार किलोमीटर की सड़क जिसके लिए 38 करोड़ का प्रावधान रखा है निःसन्देह गांवों को सड़कों से जोड़ा जाएगा तो उनका विकास सड़कों की दृष्टि से होगा।

खाड़ी संकट की अन्त में चर्चा करता हूं कि इस खाड़ी संकट के समय जो अन्तर्राष्ट्रीय दुर्गति देशों की थी उसका प्रभाव भारत पर भी पड़ा। पैट्रोलियम पदार्थों की कमी आई। सबसे पहले सरकार ने

(श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित)

अपने मंत्रि परिषद् के सदस्यों पर नियंत्रण किया। यह कहावत है कि दूसरे का घर साफ रखना चाहते हो तो पहले अपना घर साफ करो। अपने घर गन्दगी है तो पर उपदेश बहुतेरे नहीं होते हैं। इस दृष्टि से पहले मंत्रि परिषद् के सदस्यों के वाहनों के ईधंन की सीमा निर्धारित कर दी कि इससे ज्यादा कोई भी ईधंन का उपयोग नहीं करेगा। यह एक बहुत ही लाभकारी कदम है जो सरकार ने पहल की है। निःसंदेह जनता ने भी इसका अनुसरण करके अपने वाहनों में एक दो दिन दिन की कटौती की और वाहनों का उपयोग कम किया। इससे पेट्रोलियम पदार्थों की खपत कम हुई व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा की बचत हुई। इसके साथ-साथ मैं इसमें एक निवेदन और करना चाहता हूं कि पेट्रोलियम पदार्थों की बचत के लिए सरकारी कार्यालयों में इस तरह की पाबंदी लगा दी जाए, इस बात का भी इसमें समावेश किया जाए ताकि पेट्रोलियम पदार्थों की ज्यादा से ज्यादा बचत और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा की भी बचत हो सके।

गेहूं, तेल, चीनी राशनिंग व्यवस्था में जो सुधार की बात कही है अगर वास्तव में यह सुधार होता है और गेहूं, तेल, चाय, चीनी आदि अगर सरकारी मूल्य पर मिलते हैं तो निःसन्देह इसका लाभ गांवों को मिलेगा। इसलिए सभापति महोदय, मैं अन्त में इतना ही कहता हूं कि इस अभिभाषण का विरोध करने का कोई औचित्य, कोई आधार नहीं है, सिर्फ आधार यही है कि जनता ने इस कुर्सी से उठाकर उस कुर्सी पर बैठा दिया। इस कुर्सी पर वापस कैसे आया जाए लेकिन यह धारणा उनकी निर्मूल सिद्ध होगी। जनता ने इस बार तो थोड़े से बैठाए हैं इस बार इनका बिल्कुल सफाया हो जाएगा। सदन में तो कोई नाम लेवा रहेगा और न कोई पानी देवा रहेगा। धन्यवाद जयहिन्द।

श्री सभापति : कांग्रेस के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं?

जनता दल के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं?

कम्युनिस्ट पार्टी के कोई माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं?

श्री टीकमचन्द कान्त।

श्री टीकमचन्द कान्त (रेवदर) : माननीय सभापति महोदय, महामहिम रज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण इस सदन में प्रस्तुत किया है मैं उस अभिभाषण हेतु धन्यवाद प्रस्ताव पर उसकी सहमति में बोल रहा हूं। उम्मीद तो बड़ी थी कि इतना बड़ा, पुराना और सीनियर पक्ष, कांग्रेस पक्ष विरोध पक्ष में बैठा है। यह विरोध पक्ष में कुछ नये आदर्श कायम करेगा यह मन में था लेकिन दुर्भाग्य है सफेद टोपी मुझे सिर्फ एक दीख रही है कुर्सी पर बैठी हुई और उसके नेतृत्व के अन्दर जो काण्ड हुआ तब मुझे लगता है कि शायद गांधी की आत्मा अब रो रही होगी, नेहरू स्वर्ग में सिसकते होंगे पुराने जितने भी कांग्रेसी महान नेता हुए, जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी, इस लोकतन्त्र

(श्री टीकमचन्द कान्त)

को आजाद कराने के लिए जिन लोगों ने यह सब किया उनकी आत्मा आज बड़ी तड़प-तड़प कर रो रही होगी कि उनकी यह पीढ़ी आज इस सदन के अन्दर क्या कर रही है। यह सदन कोई सड़क नहीं है, यह सदन किसी मील का गेट नहीं है। यह सदन यहां की साढ़े तीन चार करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करता है। और इन दो लाख मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग जब उस व्यक्ति के हाथ में से, महामहिम राज्यपाल के हाथ में, सुनने लायक बात है इस सदन को आहूत राज्यपाल महोदय करते हैं, इस सदन का जो कुछ भी है वह राज्यपाल महोदय करते हैं। संविधान का सर्वोच्च पद राजस्थान में जिसके माध्यम से और जिसके नाम पर ही सरकार सारे काम करती है, उस महामहिम राज्यपाल के साथ में ऐसा व्यवहार।

लोकतन्त्र वास्तव में बहस का विषय है। लोकतन्त्र में बहस होनी चाहिए। आज यह नहीं ले रहे लेकिन क्या जवाब देंगे उन मतदाताओं को जाकर के कि राज्यपाल के अभिभाषण पर जब सामने की पार्टियां बोल रही थी हमारे क्षेत्र के बारे में तुम लोगों ने क्या बात की? इस राजस्थान की नीति के बारे में तुम लोगों ने कोई पक्ष रखा या नहीं रखा? एक-एक राजस्थान का मतदाता इनको पूछेगा राजस्थान के इस सदन में सुनते हैं कि गरिमा की बात है। विरोधी पक्ष के नेता वर्षों तक मुख्य मंत्री रहे हुए हैं बार-बार इस सदन की गरिमा की बात करते रहे और उनके समक्ष यह सारा काण्ड हुआ है। इस सदन की गरिमा को काला कलंक लगाने वाला कांग्रेसी, उस को जवाब देना पड़ेगा उन मतदाताओं के पास जाकर के जनता को जवाब देना पड़ेगा। इस सदन की मान्यता, मर्यादा और गरिमा का अगर ध्यान नहीं रखा गया तो इस सदन के प्रति लोगों का विश्वास उठ जाएगा। बड़ी निराशा हुई इस कांग्रेस के विरोध पक्ष में आने पर। जो उम्मीद थी मुझे कि हमने विरोध पक्ष की भूमिका जो निभाई है वह निभाई है लेकिन शायद यह विरोध पक्ष में आकर के आदर्श प्रस्तुत करेंगे, पेश करेंगे वह आदर्श यह प्रस्तुत नहीं कर सके, पेश नहीं कर सके। बड़ी निराशा हुई।

सभापति महोदय, अभिभाषण की प्रति इनके पास जरूर पहुंची होगी, इस अभिभाषण के अन्त में दिया हुआ श्लोक इसके अन्दर सारी अभिव्यक्ति सामने आ जाती है कि हम क्या चाहते हैं, हमारा मन कैसा है, किस प्रकार का हमारा चिन्तन है। उस अभिभाषण के अन्दर

"समानो मंत्रः समितिः समानी समानं
मनः सह चित्तेमेषाम्। समानं मंत्रमभि
मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि"

समान चिन्तन, सबका एक ही लक्ष्य, एक सभा में हम बैठे हैं, एकसा चिन्तन करें हम समिति के साथ सारी मंत्रणाएं करें एक ही स्वर में, इस का आह्वान करता हूं। इस प्रकार की जो उन्होंने बात कही। सभापति महोदय, हम लोकतन्त्र में कितना मानते हैं इस प्रदेश का विकास इस राज्य का विकास, इस राजस्थान का विकास, इस

(श्री टीकमचन्द कान्त)

बहबूदी के लिए हम साथ आपको जोड़कर के चलना चाहते हैं यह इसमें साबित होता है। आपने क्या उदाहरण प्रस्तुत किया है, अगर वास्तव में आपने भूख हड़ताल रखी है, अन्न जल ग्रहण करने को मना किया है, आप नहीं करेंगे तो मालूम है कि गांधी जी ने कहा था कि उपवास करने पर आत्मा जगती है और अगर आत्मा आपकी जागे तो आप पूछ लेना कि आपका यह सत्याग्रह है या हठाग्रह है। अगर सत्याग्रह होता तो मैं भी इसके अन्दर जुड़ जाता लेकिन सत्याग्रह नहीं है। न्याय नहीं, न्याय को तोड़ मरोड़ कर के अपने हक में फैसले करवाने की जिद्द है और इस प्रकार लोकतन्त्र नहीं चलता....जिस प्रशासन में बैठे थे उस समय भी इनका तरीका इसी प्रकार का था। तब उनकी तानाशाही अलग प्रकार की चलती थी। आज विरोध के अन्दर बैठ कर इस समय अलग प्रकार की तानाशाही चली है। सहारा लिया सत्याग्रह का और है हठाग्रह। तोड़-मरोड़कर फैसले करवाना इनका एक तरीका है। सारी चीजें सामने रखी जा सकती है। मुझे बड़ा खेद है कि इसमें वरिष्ठ सदस्य सफेद टोपी लगाये हुये इस समय बिराजमान हैं और उनको कोई दिशा-निदेश नहीं दे सके। अपने आपको जनतादल कहने वाले लोगों ने बड़ा नारा लगाया है दल बदल का। जनता से पूछो कि दल किसने बदला है। दल उन लोगों ने बदला है जो कांग्रेस के साथ में जा कर बैठ गये। जबकि यहां की जनता ने कांग्रेस के विरूद्ध फैसला लिया। दल बदलने वाले वो लोग हैं। मैं धन्यवाद देता हूं उन लोगों को जिन्होंने इस राजस्थान की जनता के उस फैसले को कायम रखा। जिन्होंने कहा था कि हम कांग्रेस नहीं चाहते। कांग्रेस का राज्य, नहीं दूसरी पार्टियों का राज्य चाहते हैं। मैं साथ में आने वाले लोगों को धन्यवाद देता हूं। दल बदलने की प्रक्रिया में कौन आता है, कौन नहीं आता है। कौन जाता है, कौन नहीं जाता। (व्यवधान)

सभापति महोदय, जिस प्रदेश पर चालीस साल तक शासन किया उस प्रदेश का करेक्टर और लोकतन्त्र किस स्वरूप में सामने आया मैं आपको बताऊं। जनता कालोनी के अन्दर पण्डित दीन दयाल उपाध्याय की मूर्ति, एक विचार मार्क्सवादी और मार्क्स रोयेगा, उसकी मिट्टी सिसकती होगी। मार्क्स और मार्क्सवाद, फेल हो गया, आप मार्क्स के बराबर नहीं हो। श्रीमान् इस पूरे विश्व के अन्दर जो राजनैतिक विचारधारा है, पूंजीवाद, समाजवाद और इसके बीच के अन्दर से एक चिन्तन भारतीय चिन्तन, एक मानवतावाद। सिर्फ व्यक्ति नहीं, सिर्फ समाज नहीं....(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य कृपया आसन के द्वारा बात कीजिए। माननीय सदस्य बैठ जाईये। मैं आपको बोलने दूंगा आप बोलना चाहेंगे तो। जारी रखिये।

श्री टीकमचन्द कान्त : मार्क्सवादी साथी मैं भी मानता हूं उसको। उस एकात्म मानववाद का संसार में एक नया विचार रखने वाले पण्डित दीन दयाल उपाध्याय, मुझे मालूम है कालीकट के अन्दर जब उन्होंने एकात्म मानववाद का

(श्री टीकमचन्द कान्त)

दर्शन दिया था कौन विरोधी हुये थे और मुगलसराय की पटरियों में किस प्रकार उनका खून हुआ था उसके पीछे कौन था ? मुझे मालूम है हेतरामजी । सभापति महोदय, यह है निर्माण चालीस साल के इनके राजस्थान के यहां के व्यक्ति का, प्रजातन्त्र के अन्दर, इस विचारक का, महान दार्शनिक का चिन्तन उसकी मूर्ति को खण्डित किया जा रहा है और यह जनतादल अपने आपको कहने वाले और वी. पी. सिंह के पीठ में छुरा घोंपा जा रहा था । मुझे उनसे कोई सहानुभूति नहीं है । हमने तो खुला कहा था कि वी. पी. सिंहजी आपके साथ नहीं रहेंगे । वहां छुरा घोंपा जा रहा था झण्डा वी. पी. सिंह का हाथ में पकड़े हुये वहां कांग्रेस उसका मटियामेट करने जा रही थी । यह कांग्रेस के साथ अन्दर में सरकार बनाने के वादे कर रहे थे । यह चरित्र है । इस प्रकार की बातें, सभापति महोदय, अनुसूचित जाति की बात कर रहे हैं ।....(व्यवधान)

अनुसूचित जाति की बात के बीच में नहीं बोलते । सभापति महोदय, मैं उदाहरण दूं । अनुसूचित जाति का बड़ा दम भर रहे है आज तक कांग्रेस । अनुसूचित जाति का मन में से स्वाभिमान खत्म करके....
(व्यवधान)

कड़वी लग रही है यह बात अभी तो सुन रहे थे । अब क्या होगा ?- अनुसूचित-जाति की बात नहीं सुनना चाहते हैं । यह है कांग्रेस का चरित्र । सभापति महोदय, अब तक बात सुन रहे थे । अनुसूचित जाति की बात आई तो बात सुनने के लिए मना कर दिया इन लोगों ने । ये चरित्र है इनका । उजागर हो गया इनका चरित्र । अनुसूचित जाति को भीख का कटोरा दे कर उनके पीछे-पीछे दान के टुकड़े डाल करके जिस प्रकार का चरित्र निर्माण इन लोगों ने किया है उसका उदाहरण दूं श्रीमान्, बड़ी बातें करते थे रिजर्वेशन की, पदोन्नतियों की । अभी मुझे थोड़ा मौका मिला देखने का । जब गणित किया गया, हिसाब लगाया गया पदोन्नतियों के अन्दर और अपाइन्टमेंट के अन्दर । सभापति महोदय, 16 प्रतिशत एस. सी. का होना चाहिए और 12 प्रतिशत एस. टी. का होना चाहिए था कोटा उसमें और गणित करने के बाद में क्या मिलता है, कांग्रेसी जरा नोट कर लें, अनुसूचित जाति का नाम लेने वाले नोट कर लें, अनुसूचित जाति के बन्धु नोट कर लें उसके अन्दर जहां 16 प्रतिशत होना चाहिए था वहां .02 प्रतिशत सभापति महोदय, यह इनका परिणाम आया । और अनुसूचित जनजाति की बात, अनुसूचित जन जाति का प्रतिशत जहां 12 प्रतिशत होना चाहिए था वहां अनुसूचित जन जाति का प्रतिशत .007, हजार में से सात यह कोटा कांग्रेस ने अनुसूचित जन जाति को दिया । मैंने एक उदाहरण दिया । सभापति महोदय, पहले ही वर्ष में जब सरकार हमने रखी, प्रथम वर्ष में 795 से 956/30 प्रतिशत की सीधी बढ़ोतरी । एक ही वर्ष तो गुजरा । दूसरा साल हमारे पास में है । दूसरे साल में 22 प्रतिशत बढ़ोतरी । कुल 46 प्रतिशत, 46 प्रतिशत सिर्फ दो वर्ष के अन्दर । हां यह बात जरूर है कि 956 करोड़ रुपया जब राजस्थान के अन्दर फेंका

(श्री टीकमचन्द कान्त)

गया, उसे जब खर्च करने के लिए कहा गया तो गांव-गांव सोई हुई 100-100 साल की रेत को जगा करके रेत सड़कों पर डाली जाने लग गयी, एनीकट और पानी का प्रबन्ध होने लग गया। गांव-गांव विकास का काम होने लग गया। बात यह नहीं थी सभापति महोदय, जो दोषारोपण यह कर रहे थे उस दोषारोपण के लिए एक प्रक्रिया है, उसको लागू करने के लिए, उसको साबित करने के लिए। उसके लिए पत्रकार परिषद को नहीं बुलाया जाता। पत्रकारों के समक्ष विधान सभा की बातें नहीं कही जाती। इस सदन की बात को सदन की प्रक्रियाओं के अनुसार ही कहा जाता है। लेकिन इन लोगों ने अपने आप को हीरो बनाने के लिए एक तरीका निकाला है, प्रक्रियाओं से अलग हट करके, नियमों से अलग हट करके और ठीक रीति से अलग हट करके इन लोगों ने अपना काम करना शुरू किया। सभापति महोदय, जो नियम और प्रक्रिया लोकतन्त्र के अन्दर तोड़ करके अलग हट करके जो कार्य करते हैं वो लोकतन्त्र के लिए घातक सिद्ध होते हैं और लोकतन्त्र के घाती सामने बैठे हुए हैं....(व्यवधान)

मुझे मालूम है, मैं तो पीड़ित हूं। पानी जो हजारों एम. सी. एफ. टी. पानी आबू-रोड का और रेवदर का गुजरात में जाता है। आज इस अभिभाषण के अंदर जब लिखा गया कि "बून्द-बून्द पानी का संरक्षण", तब मुझे लगा है कि 70 हजार एकड़ में से कम से कम 50 हजार एकड़ भूमि असिंचित पड़ी है और वो सारा पानी इधर काम आ जाय तो रेवदर लहलहा उठे, वो क्षेत्र लहलहा उठे, आबू के आसपास का क्षेत्र लहलहा उठे। सभापति महोदय, मैं धन्यवाद देता हूं इस सोच को, इस सरकारी सोच को, महामहिम राज्यपाल ने इस अभिभाषण के अन्दर व्यक्त किया। इस सोच को, किसान का बेटा जो सी. एम. की कुर्सी पर बैठा हुआ है उस सोच को मैं धन्यवाद देता हूं। एक आशा की किरण जगी है। जो बून्द-बून्द पानी के संरक्षण की बात आई है उससे पानी रूकेगा। वह उस क्षेत्र को उपजाऊ बनाएगा, उस क्षेत्र को सिंचित करेगा।....(व्यवधान)

एकदम खुले में कहा गया है कि 35 हजार कुएं अनुसूचित जाति के लिए। कभी कोई संख्या दी थी और वो भी पूर्ण अनुदान के साथ में अनुसूचित जाति के लिए 35 हजार कुओं की? मैं तो गदगद हो उठा हूं। इस वर्ग का आदमी हूं। सभापति महोदय, आज मैं कह सकता हूं अपने भाइयों को जाकर यह जो सरकार है इस सरकार ने हमारे लिए 35 हजार कुएं पूर्ण अनुदान के साथ तुम्हारे लिए खोलने के लिए कहा है, पूरा एक वर्ग खुश हो उठेगा। 20 हजार इन्दिरा आवास की बात।

सभापति महोदय, जलोत्थान योजना से अनुसूचित जाति को ऊपर उठाने की बात। अन्त्योदय के अन्दर तो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति का आदमी आता है इसमें कोई दो मत नहीं। यानि उसका समग्र विकास और समग्र विकास के अन्दर शायद "समग्र" शब्द आज तक इनके भाषणों में था या नहीं। लेकिन इस

(श्री टीकमचन्द कान्त)

अभिभाषण के अन्दर समग्र शब्द है और कृषि नीति के लिए समग्र कृषि नीति। समग्र कृषि नीति दीर्घकाल तक के लिए प्रभावी रहे ऐसी नीति। वास्तव में सही बात है कि इस राज्य का उत्थान करना है। देखना पड़ेगा उसका इन्फ्रास्ट्रक्चर बन सकता है या नहीं। 1000 किलोमीटर सड़कें और कृषि मण्डी द्वारा 14 करोड़ रुपए और सड़कों पर। हिसाब लगाइये 3 लाख पर एक किलोमीटर बनती है। कितनी कुल सड़क बनेगी। राजस्थान का एक कायाकल्प होगा एक साल की इस योजना के तहत। इन्फ्रास्ट्रक्चर की बात करता हूं और उसके लिए चाहिए बिजली। बिजली के कुओं की बात। जरूर कह रहे हैं। एक दिन का एक करोड़ रूपया देना पड़ता है और हर रोज बिजली प्राप्त करने के लिए। योजनाओं को नया-नया स्वरूप मिल गया होगा। कहीं हमारे भी मतभेद हैं सरकार के साथ में। लेकिन एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि बिजली का उत्पादन इसी राज्य में हो ताकि हमें उधार लेनी न पड़े। हमें भीख माननी न पड़े। रोज एक करोड़ रुपया ले जा करके उनको जमा करवाना न पड़े और इसकी सोच आज तक कांग्रेस ने क्यों नहीं की? क्यों उसके लिए उन्होंने तकलीफ नहीं उठाई? वह है राजस्थान की इस सरकार की सोच। यह है विकास की तरफ हमारा चिन्तन।.... (व्यवधान)

सभापति महोदय, स्वरोजगार। सबको एम्पलायमेन्ट, नौकरी नहीं दी जा सकती और नौकरी जिनने दिमाग के अन्दर घुसा दी मैं उनसे कहना चाहता हूं कि वो पुराना कथन याद करें। पुराना कथन यह था श्रीमान्, कि उत्तम खेती। पुराना कथन है, लोगों का सोच, चिन्तन किस प्रकार का होना चाहिए। उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और नीच नौकरी। यह चिन्तन जब तक आदमी के दिमाग में पैदा नहीं होगा कि नौकरी नीच है उत्तम खेती और व्यापार मध्यम है। इस प्रकार का चिन्तन हम देने जा रहे हैं। चिन्तन के साथ में काम करने जा रहे हैं। वनों की उगाई को भी स्वरोजगार के साथ में जोड़ने जा रहे हैं। उद्योगों को ज्यादा मात्रा में लगाने की कोशिश कर रहे हैं। नए औद्योगिक विकास केन्द्र खोल करके बाहर के उद्योगपतियों को बुला रहे हैं। तुम वहां नौकरी कर रहे हो, सिर्फ भागीदारी कर रहे हैं। यहां आओ, तुम अपना उद्योग लगाओ, इस राजस्थान को पनपाओ। इस प्रकार से यह समग्र व संपूर्ण अभिभाषण इस राज्य सरकार का आदर्श है यह आपके सामने प्रस्तुत है। इस वर्ष आगे के लिए, गांव के लिए, गरीब के लिए किसान के लिए, कृषि के लिए हमारा किस प्रकार का चिन्तन है यह अभिभाषण इस प्रकार की बात कहता है। सभापति महोदय, मैं चाहूंगा यह सदन इस अभिभाषण पर अपनी सहमति दे और धन्यवाद प्रस्ताव में साथ दे, धन्यवाद।

श्री सभापति : कांग्रेस का कोई माननीय सदस्य बोलना चाहे, जनता दल का कोई माननीय सदस्य बोलना चाहे। कांग्रेस पार्टी के माननीय सदस्य बोलना चाहें। माननीय श्री हीरासिंह चौहान।

श्री हीरासिंह चौहान (रायपुर) आदरणीय सभापति महोदय, मैं राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलूं इसके पहले मेरे विपक्ष के साथियों को और मेरे जनता दल के साथियों को यह कहना उचित समझूंगा कि पिछली लोकसभा का चुनाव भारतीय जनता पार्टी ने और जनता दल ने पूरे देश में साथ मिल कर लड़ा था और इस प्रदेश में भी जनता दल और भारतीय जनता पार्टी ने एक साथ चुनाव लड़ा था और उस चुनाव में इस प्रदेश की जनता ने इन दोनों दलों को मेण्डेट दिया था कि आप शासन करो और इस प्रकार शासन करना प्रारम्भ किया। मैं भाई दिग्विजय सिंह जी और उनके साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि राजस्थान की जनता की भावनाओं की उन्होंने कद्र की और कद्र करके इस शासन को स्थायी रखा। लेकिन मैं उन जनता दल के साथियों को भी चेतावनी देना चाहता हूं कि जिस व्यवस्था के साथ आप चल रहे है उस व्यवस्था में आप जिन्दा नहीं रहेंगे। आपको मालूम होना चाहिए कि उस हत्यारे मुलायम सिंह के साथ बैठ करके जो कांग्रेस शासन चला रही है, गुजरात में चिमन भाई के साथ जो आप लोग शासन चलाते हैं और वो वहीं लूट रहे हैं और यहां पर एक मेण्डेट दिए हुए लोगों के साथ शासन करने के लिए हमारे साथी बैठे हैं जिनके लिए आप कहते हैं कि फर्जीवाड़ा कर दिया। कौनसा अनोखा फर्जीवाड़ा कर दिया उन्होंने? वो तो उसी दल के साथ थे और जब तक हमारे माननीय अध्यक्ष उसका निर्णय नहीं देते हैं तब तक आप किस प्रकार कहते हैं कौनसा दस्तावेज फर्जी है? और कोई हेराफेरी नहीं हुई। यह आपके दिमाग की हेराफेरी हैं। आप चाहते हैं ये शासन क्यों कर रहे हैं और राजस्थान के गांवों के किसानों को, मजदूरों को एक बढ़िया शासन क्यों दे रहे हैं? मैं उदाहरण देना चाहता हूं। पिछले चुनावों में जब हमने गांवों के किसानों को कर्जा माफी की घोषणा की तो मेरे कई कांग्रेस के साथी जो अच्छे-अच्छे नेता हैं वे यह कहते सुने गए कि किसानों का कर्जा माफ करोगे तो ये कमाना-खाना भूल जाएंगे। इस प्रकार की हालत में आ जाएंगे कि कुछ भी व्यवस्था नहीं करेंगे। इस प्रकार के लोगों ने भाषण दिए। लेकिन मैं आप लोगों से निवेदन करना चाहता हूं कि कई वर्षों का कर्जा था। ब्याज पर ब्याज आप लोगों ने जोड़ा। जमा करवा दिया लेकिन जमा नहीं किया और उस व्यवस्था से उबारने के लिए, उस व्यवस्था से उनको निकालने के लिए जिस प्रकार पूंजीपतियों के करोड़ों रुपए माफ किए और पिछली सरकारों ने बकाया टैक्स वसूल नहीं करके करोड़ों रुपए माफ किए और करोड़ों रुपए माफ करने के बाद अगर किसानों के 341 करोड़ रुपए का, मैं तो धन्यवाद देना चाहूंगा शेखावत सरकार को जिसने पहले ही इस बात का इन्तजाम किया और किसानों को कर्जे से मुक्ति दी। आजादी के बाद, चालीस वर्षों तक सरकार ऐसी रही, हमेशा कांग्रेस पार्टी शासन में बैठी लेकिन किसानों की तरफ आंख खोल कर कभी नहीं देखा, न किसानों के दुख-दर्द को सुना, न किसानों के बारे में कभी चिन्ता की। मैं निवेदन करना चाहता हूं, आप सौ बार धरने पर बैठिये, वापस

(श्री हीरासिंह चौहान)

चुनाव भी होंगे, नतीजे यह के यह निकलेंगे। हम भी गांवों में रहते हैं, हम भी झोपड़ियों में रहते हैं, एक-एक की मालूम है मुझे कि किस प्रकार पिछले चालीस साल में इस कांग्रेस के शासन में उनकी क्या गति की। आपको मालूम है. हमने पिछले सालों में.... (व्यवधान)

हमारी छवि बन जायेगी, आपको चिन्ता नहीं है, आप अपनी चिन्ता कीजिए। पिछले सालों में कोई शासन नहीं था। 85 से लेकर 90 तक इस प्रदेश में कोई शासन नहीं था। सब जगह अव्यवस्था फैली हुई थी, जनता में बड़ी भारी कुलबुलाहट मची हुई थी कि किस प्रकार का शासन है। शासन व्यवस्था मर चुकी थी और जनता इसीलिए पुनः अच्छा शासन प्रदेश को देने के लिए इस भारतीय जनता पार्टी को शासन में लाई। इसके साथ हमारे साथी भी बैठे हैं। कर्जा माफी कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य में नौ लाख बहत्तर हजार किसानों को ऋणों से मुक्ति दी गई। बिजली कनेक्शन की भी बताऊंगा। आपके कनेक्शन लगेगा, वह भी बताऊंगा। उसके बारे में भी बड़ी चिन्ता कर रहे हैं। उसके बारे में भी बताऊंगा।

इसी प्रकार इस कर्जा माफी कार्यक्रम के अन्तर्गत मैं और बताना चाहता हूं। पिछले दिनों मैंने माननीय शेखावत साहब से निवेदन किया कि सन् 58 से लेकर 70 के बीच में जिन किसानों ने तकाबी ऋण लिये थे पंचायत समितियों में और अभी तक वह ऋण माफ नहीं हुआ, माननीय शेखावत साहब ने बड़े दिल से कहा कि इस प्रकार के कर्जे को भी माफ किया जायेगा। इस तरह किसनों को लाखों रुपये के इस कर्जे से भी मुक्ति मिलेगी। पिछली कांग्रेस सरकार के पापों को साफ करने के लिए इस शेखावत सरकार ने आते ही एक आव्हान किया था कि हम प्रदेश में भ्रष्टाचार को खत्म करेंगे, भ्रष्टाचार को जड़-मूल से नष्ट करेंगे और आप एक साल में देख रहे थे कि कितने ही अच्छे-अच्छे आई. ए. एस. अधिकारी, आर. ए. एस. अधिकारी आई. पी.एस. और आर. पी. एस. अधिकारी थे, जो भी भ्रष्टाचार करते हुए पाये गये उनको दण्डित किया गया और सरकार ने स्पष्ट घोषणा की कि 25 साल की सेवा वाले और 50 साल की सेवा में जितने भी भ्रष्ट अधिकारी हैं उनको अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी जायेगी। क्या इस प्रकार का चिन्तन आपने किया? प्रदेश में स्वच्छ शासन देने के लिए, अच्छा प्रशासन देने के लिए हिम्मत चाहिए। आप लोगों में हिम्मत नहीं थी, हम लोगों ने हिम्मत की है और हिम्मत करके इस राजस्थान प्रदेश को एक अच्छा शासन शेखावत सरकार दे रही है जिसका चारों तरफ शानदार स्वागत हो रहा है लेकिन आप लोगों को बड़ी चिन्ता है। आप लोग बड़ी चिन्ता कर रहे हैं। आज हम इस राज्य की सबसे बड़ी पंचायत में बैठे हैं और पंचायत में बैठने का हम सब को सौभाग्य मिला है। हम सब को चिन्तन करना पड़ेगा कि विधान सभा की कार्यवाही में किस प्रकार से हम को भाग लेना है। हालांकि आप लोगों का कर्त्तव्य है, जो कुछ भी आप कर रहे हैं उससे आपको रोका नहीं जा सकता लेकिन प्रदेश की जनता

(श्री हीरासिंह चौहान)

भी हमसे पूछती है। प्रदेश की इतनी बड़ी पंचायत में आज दूसरा दिन है इस अधिवेशन को प्रारम्भ होने का और उसके बाद में जिस मांग को आप मनवाना चाहते है उसके और भी बहुत तौर-तरीके हैं। कई तौर-तरीके हैं, जो भी निर्णय होगा–निर्णय तो निर्णायक करेगा। वह तो निर्णायक का काम है। आपका और हमारा काम नहीं है। आपका और हमारा काम तो उस बात पर दबाव डालना है, दबाव डालने के लिए आपको नहीं रोका जा सकता। लेकिन इस हाउस की वैली में आकर बैठ जाना और कार्यवाही को रोकना कतई शोभा नहीं देता है।

माननीय सभापति महोदय, 1988 और 1989 में कांग्रेस के राज में यह घोषणा की गई थी कि सात-आठ जिलों में, जिनमें पाली जिला भी इन्होंने चुना, इनमें पेयजल से समस्याग्रस्त कोई गांव नहीं रहेगा। यह घोषणा की इन लोगों ने, हमें बड़ी खुशी हुई। मैं, खंगार सिंहजी और पुष्पाजी भी इस सदन के मेम्बर थे। हमें बहुत खुशी हुई कि पाली जिले में ढाणी-ढाणी में, गांव-गांव में पानी पहुंच जायेगा। लेकिन माननीय सभापति महोदय, मैं इनके आंकड़ें दूं तो आप अचम्भित रह जायेंगे। राजस्थान में 34 हजार गांव यह पानी देने के लिए बताते हैं और उसमें से 32 हजार गांवों को पानी दे दिया। अगले साल के आंकड़ें आते हैं तो कहते हैं कि 30 हजार में पानी और पहुंचा दिया। मतलब बिल्कुल फर्जीवाड़ा चलता है। किसी भी जगह इन्होंने ईमानदारी से काम नहीं किया। लेकिन गांवों में पानी पहुंचाने के लिए इस वर्ष यह राज्य सरकार बड़ी गम्भीरता से चिन्तनशील है और चिन्तनशील होकर किस गांव में कहां पानी पहुंचाना है, इसके ऊपर बराबर चिन्तन कर रही है। ढाणियों तक पानी पहुंचाने की योजना बनाई गई है और आपको अगले कुछ ही दिनों में मालूम पड़ जायेगा कि ढाणियों तक पानी पहुंच रहा है या नहीं पहुंच रहा है।

(5·45 म. प.)

(श्री हरिशंकर भाभड़ा, अध्यक्ष, पदासीन)

इसी प्रकार गांवों की चिकित्सा पद्धति को ले लीजिए। गांवों में शफाखाने खुल गये, चिकित्सालय खुल गये, कोई डॉक्टर नहीं, कोई नर्स नहीं कोई व्यवस्था नहीं। हजारों डॉक्टर शहरों में डेपुटेशन में बैठे रहते थे और गांवों के शफाखाने बन्द पड़े रहते थे। उनके बारे में कोई चिन्ता नहीं, कौन क्या कह रहा है। डॉक्टर लोग नेताओं के पीछे-पीछे घूमते थे और नेताजी जैसी चाहते, वैसी व्यवस्था करते और इस सरकार के आने के बाद में जो चिकित्सालय ग्रामीण क्षेत्र में बन्द थे, डॉक्टरों को उन गांवों में भेजा गया और गांवों में डॉक्टरों को भेज कर चिकित्सा पद्धति में सुधार किया गया। कई डॉक्टरों को सस्पैण्ड किया गया, कइयों के खिलाफ कई प्रकार की कार्यवाही की गई। जिस बात के लिए यह सरकार है, सरकार में बैठे हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी और मंत्रियों को एक-एक की चिन्ता है अपने विभाग की, हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी ने एक-एक मंत्री के साथ बैठ कर उनके

(श्री हीरासिंह चौहान)

विभागों के कामों की समीक्षा की है कि आपने एक साल में क्या-क्या काम किया और आपके कौन-कौन से काम, जिनको आप नहीं कर पा रहे हैं, कौन सा बजट है, कौनसा फण्ड है जिसको आप यूटिलाइज नहीं कर पाये हैं, इसकी इन्होंने एक-एक के साथ बैठ कर समीक्षा की है लेकिन कांग्रेस के राज में ऐसा नहीं होता था। और तो और, मुख्य मंत्री बदलने का क्रम लगातार चलता रहता था। कभी तो माननीय हरिदेवजी जोशी साहब बैठते तो लंगी लगा कर माननीय शिवचरण माथुर साहब आ जाते। जोशीजी जो घोषणा कर के जाते, माननीय माथुर साहब उनको लागू नहीं करते। प्रदेश की किसी को चिन्ता नहीं थी। अगर पिछले चालीस सालों में शासन में बैठने वालों ने इस प्रदेश के विकास की चिन्ता की होती तो आज इस प्रदेश की तस्वीर ही अलग बन जाती। आज हमारे खेत सूखे पड़े हैं, पानी की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। आज यह पूरा बैल्ट सूखे का सूखा पड़ा है, हमारा आधा पाली सूखा पड़ा है, अजमेर सूखा पड़ा है, पश्चिमी राजस्थान पूरा सूखा पड़ा है। अगर एक भी योजना में आप सफलता पा लेते कि इन खेतों को पानी देना है, गांवों की गरीबी मिटानी है, गांवों में खुशहाली लानी है और गांवों के खेतों को लहलहाना है, पैदावार लानी है, हमारी आंखों में आंसू आते हैं, मैं ईमानदारी से कहता हूं— जब दूसरे प्रदेशों में हम जाते हैं, खेतों को लहलहाते देखते हैं, किसानों की वह हालत देखते हैं और इस प्रदेश की तरफ आते हमारी आंखों में आंसू आते हैं। बड़े धर्म-ईमान से कहते हैं क्योंकि यहां के शासन में बैठने वालों ने कभी किसी प्रकार की चिंता नहीं की इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में जो-जो राज्य के विकास के लिए बिन्दु या मार्ग-दर्शन दिये गये हैं उसी के निर्देशों के अनुसार हम प्रदेश की प्रगति करना चाहते हैं, विकास करना चाहते हैं। इतना ही सब कहते हुए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि राज्यपाल महोदय ने अभिभाषण पेश किया है उसके ऊपर धन्यवाद पेश किया जाय।

श्री अध्यक्ष : कांग्रेस (आई) पार्टी की तरफ से कोई माननीय सदस्य बोलना चाहता है?

जनता दल की तरफ से कोई माननीय सदस्य बोलना चाहता है?

और कोई बोलना चाहता हैं? (व्यवधान)

और कोई माननीय सदस्य बोलना चाहता है?

श्री ओम प्रकाश गुप्ता (मुख्य सचेतक) : माननीय अध्यक्ष महोदय, विरोधी दलों के माननीय सदस्यों के राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अरुचि व असहयोग के कारण इधर से कोई नहीं बोल रहे हैं, माननीय मुख्य मंत्रीजी इस प्रस्ताव पर अपने विचार रखेंगे। अन्य सदस्य, जो लिखित में अपने विचार रखना चाहें उन्हें अनुमति देने की कृपा करें। कार्य सलाहकार समिति के प्रस्ताव के अन्तर्गत—

श्री अध्यक्ष : क्या सदन की इच्छा है कि माननीय मुख्य मंत्रीजी का जवाब आज हो जाये ?

(स्वीकृत)

माननीय मुख्य मंत्रीजी।

धन्यवाद प्रस्ताव का पारण।

श्री भैरोंसिह शेखावत (मुख्यमंत्री) : अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के माननीय सदस्यों ने किस बात का धरना दिया है मैं समझता हूं कि न विपक्ष के सदस्य इस बात से परिचित हैं और न अभी तक इस सदन को इस बात की जानकारी दे पाये कि आज धरना किस बात का दिया गया है। मुझे इस बात का खेद है कि आज विपक्ष के नेता डिबेट में भाग नहीं ले रहे हैं और इस बात का भी खेद है कि आज सरकार के विरोध में कांग्रेस पार्टी के माननीय सदस्यों को भाग लेना चाहिए था लेकिन उन्होंने भाग नहीं लिया और नतीजा यह निकला कि ऐसी स्थिति में मैं यही निवेदन कर सकता हूं, मुझे ज्यादा कहने की आवश्यकता नहीं, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में सब कुछ आ गया। माननीय सदस्यों ने सब कुछ कह दिया। राजस्थान के विकास की दृष्टि से हम सब लोग कार्यवाही कर रहे हैं, हम सब लोग राजस्थान के विकास की प्रगति की कार्यवाही कर रहे हैं। इसका कोई औचित्य नहीं है। मैं चाहूंगा अध्यक्ष महोदय, कि विधान सभा की कार्यवाही समाप्त होने पर मैं विपक्ष के नेताओं से बातचीत करूं और किस प्रकार की समस्या है, उसका समाधान करूं लेकिन अभी तक मुझे इस बात की जानकारी नहीं मिली है कि धरना किस बात को लेकर दिया गया है। जहां तक दल बदल का प्रश्न है, मैं ऐसा समझता हूं कि हमारी राजस्थान की जनता इस बात को जानती है कि पहले भी दलबदल राजस्थान में हुआ है और पहली बार 1952 में दल बदल हुआ, 1957 में दल बदल हुआ, 1962 में दल बदल हुआ और 1967 में गोलियां चलाकर दल बदल किया गया। आज वही कांग्रेस के नेता दल बदल को लेकर इस प्रकार की बात कर रहे हैं। मुझे यह समझ में नहीं आता कि आज दल बदल के सम्बन्ध में फैसला अध्यक्ष महोदय को देना है लेकिन जब राज्यपाल महोदय यहां आये उनके हाथ से लाउड स्पीकर छीनना, उनके हाथ से भाषण छीनना और उनकी लाइट बन्द कर देना यह सब बातें किसी भी प्रकार से शोभनीय नहीं है। आज चाहे मेरी गलती हो, चाहे किसी और की गलती हो हमें राज्यपाल महोदय का सम्मान करना चाहिए था, वह सम्मान नहीं किया। अध्यक्ष महोदय, इस सरकार का विरोध किस बात का है। मैंने 270 करोड़ रुपये किसानों का कर्ज माफ किया, उसका दर्द सरकार को है। मैंने काम के बदले अनाज की योजना चलाई उसका दर्द सरकार को है। मैंने सिंचाई योजनाएं भारत सरकार से मंजूर करा के बिजली की समस्या का समाधान कराने की चेष्ठा की उसका भी अधिकतर सदस्यों को दर्द है। मैंने योजना का आकार बढ़ाया उसका दर्द भी इस सरकार को है। हमने अन्त्योदय योजना चालू करके गरीबों की रोजी-रोटी का प्रबन्ध किया उसका दर्द भी इस सरकार को है। राजस्थान में भ्रष्टाचार के खिलाफ एक मुहिम चलाकर इस बात की मैंने व्यवस्था की है।

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

मैं आज माननीय सदस्यों से पूछना चाहता हूं खास तौर से जनता दल के माननीय सदस्यों से कि वी. पी. सिंह जी से जाकर पूछो यही कांग्रेस पार्टी है जिस पार्टी ने दिल्ली में दल बदल सरकार का समर्थन किया है। यही कांग्रेस पार्टी है जिस कांग्रेस पार्टी ने गुजरात के अन्दर चिमनभाई पटेल की सरकार का समर्थन किया है। यही कांग्रेस पार्टी ने यू. पी. में जनता दल की सरकार का समर्थन किया है। आज यह सब राज्यों में जनता दल की सरकार का समर्थन कर रहे हैं और दिल्ली में जनता दल की सरकार का समर्थन कर रहे है जनता दल (एस) के नाम से। मुझे याद है अध्यक्ष महोदय, जिस समय इस पार्टी का विभाजन हुआ था और चन्द्रशेखर जी प्रधान मंत्री बने उस समय इसी जनता दल के नेताओं ने कहा था कि यह दल बदलू हैं। आज उन दलबदलुओं के साथ यह लगे हुए हैं। उसी दल बदलू सरकार का यह समर्थन कर रहे हैं। अब दल बदल की स्थिति में आज उनको ज्यादा चिढ़ पैदा हुई, मेरी समझ में नहीं आता।

अध्यक्ष महोदय, मैं, यह भी कहना चाहता हूं, इन जनता दल के नेताओं से कहना चाहता हूं कि आपकी जनता दल की सरकार ने और वी. पी. सिंह ने तामिलनाडु में जब सरकार भंग की गयी उसका विरोध किया। आंध्रप्रदेश के गवर्नर और बिहार के गवर्नर को हटाया उसका विरोध किया लेकिन सुरेन्द्र व्यास ने जो ज्ञापन प्रस्तुत किया उसकी 5 लाइनें पढ़कर सुनाना चाहूंगा :

"Without submitting anything on the merits of the decision of the Central Government in that behalf in the matter of dissolution of Tamilnadu Assembly or dismissal of Tamilnadu Goverment. I beg to agree with the action of his Excellency the President of India entirely in divesting Shri Mohd. Yunus Saleem in reading the address containing critical reference in respect of such dissolution of the House and dismissal of the Government."

मैं जनता दल के माननीय सदस्यों से पूछना चाहता हूं कि क्या सुरेन्द्र व्यास ने जो बात कही है उस बात का आप समर्थन कर रहे हैं ? उसका आप समर्थन करें तो स्पष्ट रूप से यहां चर्चा कर लें। आप उसका समर्थन नहीं कर रहे हैं। आप इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि हमारी सरकार को भंग किया जाए, आप इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि राजीव गांधी हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री बन जाये लेकिन मैं आज आपको कहता हूं कि हिन्दुस्तान की जनता ने फैसला कर लिया है कि चाहे राजीव गांधी हो और चाहे कांग्रेस की पार्टी हो जनता कभी भी आगे नहीं आने देगी। उसी प्रकार की मार खाओगे। आज आप लोग सारे हिन्दुस्तान में राज करने की कल्पना कर रहे हैं। आपका विधान सभा में व्यवहार कैसा है ? राज्यपाल के हाथ से भाषण– छीना आप तो भाषण छीनते-छीनते कुर्सी पर जाकर राज्यपाल के साथ मारपीट भी कर सकते हैं।

(श्री भैरोंसिह शेखावत)

अध्यक्ष महोदय, मैंने जब आज प्रस्ताव रखा वह तो इस सदन की परम्परा के अनुसार रखा है। मुझे याद है आज के बीस वर्ष पहले श्री मानिकचन्द जी सुराना, श्री रामानन्द अग्रवाल, श्री मुरलीधर जी व्यास और स्वयं श्री नत्थीसिंह जी सहित 11 सदस्यों को सदन के शेषकाल के लिए निलम्बित किया गया था। इसी सदन में कांग्रेस पार्टी ने प्रस्ताव पास किया था। उसके बाद में अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है कि मेरे खिलाफ श्री सुखाडिया जी ने इसी सदन में प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, मेरे और डिप्टी स्पीकर के बीच झगड़ा हो गया और मुझे 6 महीने तक विधान सभा से बाहर निकाला जाये यह प्रस्ताव यहां रखा था। उसके बाद निकाला नहीं वह दूसरी बात है।

मैं तीसरी बात कहना चाहता हूं कि इसी सदन में श्री देवीसिंह जी भाटी एक तख्ती लगाकर आ गये। उस तख्ती के आरोप में श्री देवीसिह जी भाटी को सदन से निष्कासित करने का प्रस्ताव यहां आया था। मैंने कोई अन्याय नहीं किया। मेरी जिम्मेदारी है कि राज्यपाल महोदय की सुरक्षा हो, राज्यपाल महोदय का सम्मान बढ़े और इसी सम्मान की दृष्टि से मैंने उचित समझा कि जिन माननीय सदस्यों ने राज्यपाल का अपमान करके संविधान का अपमान किया है, लोकतान्त्रिक व्यवस्था के विपरीत आचरण किया है उनकी प्रताड़ना की जाये और इसी प्रताड़ना की दृष्टि से मैंने प्रस्ताव रखा है लेकिन अध्यक्ष महोदय के आदेश से मैंने इस प्रस्ताव पर विचार करना स्थगित इसलिए रखा कि आपस में बैठकर किसी प्रकार की बात कर ली जाये। जिस समय जोशी बोले हम सारे सत्तारूढ़ दल के माननीय सदस्यों ने उनकी बात को गम्भीरता से सुना और यदि उस समय मुझे मौका मिलता तो मैं अध्यक्ष महोदय, जोशी जी का भी सम्मान करता और कांग्रेस पार्टी के सदस्यों का भी सम्मान करता लेकिन आज वह होहुल्लड़ के जरिये किसी को दबाना चाहें तो मैं आखिरी व्यक्ति होऊंगा जो होहुल्लड़ से दबकर ऐसी बात को स्वीकार करूं। मैं आज जोशी जी का सम्मान करता हूं, जोशी जी मुझे बुलाकर कह देते कि इस प्रकार की कार्यवाही नहीं होनी है तो मैं विश्वास से कहता हूं कि मैं उस प्रकार की कार्यवाही नहीं करता। आज भी मैं जोशी जी का सम्मान करता हूं, माथुर साहब का सम्मान करता हूं, पहाड़िया जी का सम्मान करता हूं, परसराम जी का सम्मान करता हूं जितने भी वरिष्ठ लोग हैं उन सब का सम्मान करता हूं। वह मुझे बुलाकर कहते कि इसका कोई दूसरा रास्ता निकल सकता है तो दूसरा रास्ता निकालता। अध्यक्ष महोदय, मुझे आज कुछ ज्यादा नहीं कहना है राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के सम्बन्ध में जो धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है मैं उसका समर्थन करता हूं और सदन के माननीय सदस्यों से कहता हूं कि इस प्रस्ताव को पारित किया जाये।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि श्री कालीचरण सराफ, सदस्य, विधान सभा की

(श्री अध्यक्ष)

ओर से रखा गया प्रस्ताव पारित किया जाय ।

(स्वीकृत)

प्रस्ताव पारित किया गया ।

सदन की कार्यवाही दिनांक 5 मार्च, 1991 के मध्याह्नपूर्व 11·00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही सायंकाल 6·01 बजे दिनांक 5 मार्च, 1991 के पूर्वाह्न 11·00 बजे तक के लिये स्थगित हुई ।)

79

परिशिष्ट–1

सचिव,

राजस्थान विधान सभा,

जयपुर।

विषयः—प्रक्रिया नियम 295 के अन्तर्गत सपोटरा क्षेत्र की पेयजल समस्या के सम्बन्ध में।

सपोटरा विधान सभा क्षेत्र में कुल 50 ग्राम पंचायत है जिनमें से करीब दस-बारह पंचायतों में पेयजल उपलब्ध हैं बाकी की पंचायतों में पीने के पानी की बहुत समस्या बनी हुई हैं। पानी पांच चार किलोमीटर दूर से लाना पड़ता हैं, लगातार वर्षा कम होने से नदी, नाले, झरने सूख चुके हैं हैण्ड पम्प तो कुछ खराब हालात में हैं और कुछ सूखे पड़े है कंन्टीजेंसी प्लान के तहत स्वीकृत हैण्ड पम्प पूरे नहीं लग पाये है। इस खेत में 70-80 हैण्ड पम्प स्वीकृतशुदा पड़े हुये है। यदि इन हैण्ड पम्पों को लगा दिया होता तो काफी पानी उपलब्ध हो सकता था।

इस क्षेत्र के बाडौती, भाकरी, समलपुर, कुड़गांव, मण्डावरा, खूबपुरा, हाडौती, करनपुर, गोठरा, लोहरा, बूकना, डाबरा, चन्देलीपुरा, खीदरपुर बहुत ही समस्याग्रस्त गांव है इनकी आबादी 2000 से ऊपर हैं इन गांवों में पानी की समस्या को लेकर आन्दोलन व झगड़े भी हुये हैं जिनसे काफी नुकसान भी हुआ है। कई बार मन्त्री जी व उच्च अधिकारियों ने पानी मुहैया कराने के आश्वासन भी दिये परन्तु नतीजा शून्य रहा ऐसी सूरत में इन समस्याग्रस्त गांवों को प्राथमिकता के तौर पर नल योजना या पाताल तोड़ बोरिंग करवा कर के पानी मुहैया कराया जाये। जिससे इस ग्रामों के ग्रामवासियों को ग्राम छोड़कर पलायन करने को मजबूर न होना पड़े।

अतः उक्त इस लोक महत्व के प्रस्ताव को मध्य नजर रखते हुये सपोटरा विधान सभा क्षेत्र को शीघ्र पेयजल सुविधा उपलब्ध कराकर के जनता को सन्तुष्ट करेंगे।

भवदीय,

ह०

(प्रभुलाल पटेल)

वि. स. 83

अमीन खां, विधायक ।
शिव निर्वाचन क्षेत्र
सचिव,
राजस्थान विधान सभा,
जयपुर ।

विषय:– प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियमों के नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख ।

महोदय,

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि पिछड़े हुए रेगिस्तानी क्षेत्रों में विशेष योजनाओं के कार्यक्रम में अनुसूचित जाति व जन जाति के होने वाले लाभों में प्रभावशाली लोगों की प्रशासन में खुलम, खुला दखल अन्दाजी के कारण अनुसूचित जाति के लोगों के कार्य बन्द किए जाने पर पिछड़े व कमजोर वर्ग में भारी असन्तोष है ।

उदाहरण के तौर पर बाड़मेर जिले की तहसील शिव के ग्राम जुड़ीया में मेगवाल का खड़ीन दो लाख पांच हजार का स्वीकृत माह अप्रेल 1990 में हुआ था, परन्तु विभाग के राजनैतिक दबाव के कारण सबल लोगों के खड़ीन बनाना शुरू कर दिया जिस पर अनुसूचित जाति के लोगों ने आमरण अनशन शुरू कर दिया था जिस पर जिला प्रशासन ने सवर्णों के खड़ीन स्वीकृत करके बाद में दोनों एक साथ चालू करने का आश्वासन देकर आमरण अनशन तुड़ाया । इसी प्रकार जैसलमेर तहसील के ग्राम-बीरमानी में अनुसूचित जाति के स्वीकृत खड़ीन को स्टे कर रखा है ।

अतः सरकार से इस लोक महत्व के मामले में विशेष निवेदन है कि पिछड़े व अनुसूचित जाति के योजनाओं से लाभ मिलने के कार्यक्रमों में प्रशासन में खुलम-खुला दखल बन्द कराकर गरीबों को सही राहत दिलाने का हुक्म फरमावें ।

भवदीय,
ह०
(अमीन खां)
वि. स. 6

सेवा में,

श्रीमान् सचिव महोदय,
राजस्थान विधान सभा, जयपुर।
विषयः—कार्य संचालन एवं प्रक्रिया नियम 295 के तहत प्रस्ताव।

महोदय,

ग्राम नरहड़, जिला झुन्झुनूं (राज.) के कृषि भूमि खसरा नं. 325 एवं 330 की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

श्री अब्दुल गनी वल्द श्री अलादीन, नि. नरहड़ ने उक्त खसरों को सर्वप्रथम श्री जयनारायण पुत्र रामजीलाल नाई को कुल रकबा 2.64 है, का आधा 1/2 एवं दूसरा उसके बाद 1/2 हिस्सा श्री विजयपाल पुत्र श्री श्योकरण जाट, निवासी नरहड़ को बेची। दिनांक 17-2-90 के बाद उक्त दोनों क्रेताओं के बीच पत्थर गढ़ी कुल रकबे का आधा-आधा हिस्से के लिए विवाद चल रहा है। प्रथम क्रेता श्री जयनारायण नाई द्वारा क्रेता से बार-बार निवेदन किया कि मुझे मेरी पूरी जमीन पर सीमा का सही आंकलन कर पत्थर गड्ढी करने दी जावे परन्तु इसके बाद 1/2 हिस्से से ज्यादा जमीन दूसरा क्रेता लगातार बोता आ रहा है। उससे जमीन की सीमा विवाद को लेकर श्री जयनारायण नाई दिनांक 28-6-90 को सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट, झुंझुनूं को आवेदन पत्र दिया जिसमें उन्होंने तहसीलदार, चिड़ावा को पत्थगड्ढी करवाने हेतु आदेश दिये। दिनांक 6-7-90 को प्रार्थी जिलाधीश के पास आवेदन पत्र दिया जिसमें उन्होंने तहसीलदार चिड़ावा को आवश्यक कार्यवाही हेतु निदेश दिये हैं। दिनांक 17-10-90 को फिर प्रार्थी ने तहसीलदार को निवेदन किया। उन्होंने गिरदावर एवं हल्का पटवारी को विलम्ब हेतु स्पष्टीकरण मांगा, पर इतना होने के बाद भी प्रार्थी को आज तक कब्जा नहीं दिया है।

अध्यक्ष महोदय, उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए प्रार्थी को आज तक न्याय नहीं मिल पाया है तथा दोनों क्रेताओं के बीच खून-खराबा होने की आशंका हो गई है और इस प्रकार प्रार्थी को न्ययालय में जाने हेतु मजबूर किया जा रहा है। इसी के साथ प्रार्थी को कम जमीन होने के कारण कुए के नीचे जमीन की आमद होने के कारण प्रत्येक फसल से काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। आज तक की गई कार्यवाहियों की प्रतियां आवश्यक कार्यवाही एवं दोषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति अनुशासनिक कार्यवाही करने हेतु सदन की टेबल पर रख रहा हूं। आशा है उचित कार्यवाही कर प्रार्थी को पत्थर गड्ढी करवाकर कब्जा दिलायेंगे।

भवदीय,
ह०/-
(किशनाराम)
विधायक सं. 19 (श्री डूगरगढ़)

दिनांक : 21-2-91

(82)

श्रीमान् सचिव,

राजस्थान विधान सभा,

जयपुर (राज.)

विषयः—कुचामन नावा क्षेत्र में प्राप्त विद्युत सप्लाई न मिलने के कारण काश्तकारों को हो रही परेशानी के संबंध में नियम 295 के अन्तर्गत विशेष उल्लेख प्रस्ताव ।

महोदय,

कुचामन सहायक अभियन्ता कार्यालय क्षेत्र के ग्राम चितावा 33 के. वी. सब-स्टेशन पर 5 फीडर है जिनका लोड भार निम्न प्रकार है:—

1.	राजपुरा फीडर	2402 के. वी.
2.	शिव फीडर	2272 ,,
3.	पांचवा फीडर	1919 ,,
4.	अड़कसर फीडर	2780 ,,
5.	नालौट फीडर	9203 ,,
	कुल लौड	10476 के. वी.

परन्तु यहां अभी तीन पावर ट्रान्सफार्मर 1600 के. वी. 2500 के. वी. व 1000 के. वी. के लगे हुये है चौथा ट्रान्सफार्मर 1600 के. वी. भी था जिसे जले हुये एक वर्ष हो चुका है– इस प्रकार वहां के लोड से आधी क्षमता से भी कम क्षमता वाले पावर ट्रान्सफार्मर ही है जिससे काश्तकारों को मात्र 2 3 घन्टा ही बिजली मिल पाती है तथा जिन ट्रान्सफार्मरों से विद्युत सप्लाई दी जा रही है उन पर क्षमता से अधिक लोड के कारण उनके भी जलने की संभावना बन गई है इसलिये एक ट्रान्सफार्मर का प्लेटफार्म खाली पड़ा है वहां 5 एम. वी. का ट्रान्सफार्मर शीघ्र लगाया जाना चाहिये ।

कुचामन के पास ग्राम जिलिया में 33 के. वी की सब-स्टेशन 4 वर्ष से स्वीकृत है वहां मेटेरियल पड़ा है जी. एस. एस. का काम पूरा कर दिया किन्तु लाइन अभी तक नहीं खेची गई है– इस जी. एस. एस. पर 1.6 एम. वी का ट्रान्सफार्मर भी लाकर रखे एक माह करीब हो चुका है जो जनोपयोगी पड़ा है– इससे अच्छा होता कि चितावा जी. एस. एस. पर जले हुये ट्रांसफार्मर की

जगह रखते तो उसका उपयोग होता काश्तकारों को ठीक वोल्टेज मिलते। कुचामन में सहायक अभियन्ता का पद है उस पर ए. ई. एन. कार्यरत है–परन्तु इन्होंने जनहित की दृष्टि से जब तक बड़ा ट्रान्सफार्मर चितावा नहीं आता इसी 1.6 एम. वी. ए. के ट्रान्सफार्मर को अब तक लगा देते तो उपयोग भी होता एवं गरीब किसानों को कुछ वोल्टेज ठीक मिलते फसल का नुकसान नहीं होता। इस प्रकार की लापरवाही के लिये उनके खिलाफ शीघ्र कार्यवाही की जावे तथा अब काफी समय हो चुका है चितावा जी. एस. एस. पर एक 5 एम. वी. एस. ट्रान्सफार्मर शीघ्र रखा जावे व काश्तकारों की फसल बचाई जावे। जिलिया के स्वीकृत सब-स्टेशन का कार्य इस फसल से पहले करना था अभी तक कार्य नहीं हुआ है शीघ्र कराया जावे।

मारोठ जी. एस. एस. पर 3.15 एम. वी. ए. पावर ट्रान्सफार्मर लगा दिया गया परन्तु उसकी ओ. सी. बी. जयपुर ही छोड़ गये ट्रान्सफार्मर प्रोटेक्शन के लिये जरूरी है नावा नमक उद्योग क्षेत्र की दृष्टि से जब तक राजास में 33 के. वी. सब-स्टेशन नहीं बनता, इस क्षेत्र की अलग से फीडर लाइन निकाल कर एक इसके लिये पृथक पावर ट्रान्सफार्मर लगाया जावे।

कुचामनसिटी 132 के. वी. सब-स्टेशन पर एग्रीकल्चरल कनेक्शनों का लौड अधिक है– इसकी क्षमता भी 26 एम. वी ए. की है– परन्तु मकराना 132 के. वी. सब-स्टेशन को अधिक लौड दिया जाता है व कुचामनसिटी को कम-जिससे इस क्षेत्र के काश्तकारों को विद्युत वोल्टेज बहुत ही कम मिलता है– मोटरें जल रही है।

इस विशेष उल्लेख प्रस्ताव के जरिये सरकार का ध्यान आकर्षित कर अनुरोध करता हूं कि किसानों को पूरी बिजली दी जावे-विद्युत विभाग के प्रशासन में सुधार किया जावे जो लोग इस ओर उपेक्षा करते हैं–उनके खिलाफ कठोर कार्यवाही की जावें।

भवदीय,

ह०/

(हरिशचन्द्र कुमावत,)

विभाजन सं. 187

विधान सभा क्षेत्र, नांवा (नागौर)

सचिव,

राजस्थान विधान सभा,

जयपुर।

विषयः—राजस्थान में कार्यरत विभिन्न जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों की समस्याओं तथा बीकानेर जिला दुग्ध उत्पादक संघ एवं इनके संबंधित फैडरेशन इकाइयों के विलीनीकरण नहीं करने के संबंध में नियम 295 के अन्तर्गत विशेष उल्लेख।

महोदय,

राजस्थान में कार्यरत विभिन्न जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों को राजस्थान को-ओपरेटिव डेयरी फैडरेशन द्वारा स्थिर भाव दिये जाने से वे अपनी गायों का भरण-पोषण सही ढंग से नहीं कर पाते। राजस्थान को-ओपरेटिव डेयरी फैडरेशन ने अपनी उत्पादित वस्तुओं पर 25 प्रतिशत से 40 प्रतिशत की वृद्धि की है परन्तु दुग्ध के क्रय मूल्य में केवल 25 पैसे की वृद्धि की है जबकि दिल्ली में दूध 5.30 पैसे प्रति किलो के भाव से विक्रय किया जा रहा है। मौजूदा दूध के क्रय मूल्यों अविलम्ब वृद्धि किये जाने की नितान्त आवश्यकता है। राजस्थान को-आपरेटिव डेयरी फैडरेशन के चुनाव अविलम्ब कराये जाये। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के निर्देशानुसार अमूल पद्धति की भावना को लागू करने के लिए प्रदेश में कार्यरत कुल 16 जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों में से केवल मात्र 12 जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों का फैडरेशन में विलीनीकरण किया गया है जबकि बीकानेर सहित चार जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों को फैडरेशन में विलीनीकरण किया गया है जबकि बीकानेर सहित चार जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों को' राजस्थान को-ओपरेटिव डेयरी फैडरेशन में विलीनीकरण अविलम्ब किया जाना आवश्यक है। बीकानेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ द्वारा एकत्रित दूध से प्रतिदिन लगभग एक लाख रुपये फैडरेशन को प्राप्त हो रहा है और 17 वर्ष से यही रुपया फैडरेशन ले रहा है जो लगभग 10 करोड़ रुपये से अधिक है। यह राशि बीकानेर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ को जानी चाहिए। फैडरेशन के संचालक मंडल के चुनाव किस कानून के अन्तर्गत रोके जा रहे है, इसकी साधारण सभा की बैठक अभी तक क्यों नहीं बुलायी गई, आर. सी. डी. एफ. की ऑडिट कब करायी गई, आडिट रिपोर्ट सदन की मेज पर रखी जानी चाहिए।

राजस्थान की चार जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों के कितने-कितने रुपये आर. सी. डी. एफ. में बकाया है इसकी सूची भी प्रस्तुत की जावे। बकाया पूंजी आर. सी. डी. एफ. कैसे व किस प्रकार से जिला उत्पादक सहकारी संघों को लौटायेगी इसका विवरण भी प्रस्तुत किया जावे तथा इनके लॉ और बाई लाज की प्रतियां भी सदन की मेज पर रखें। आर. सी. डी. एफ. का स्टाफ यथा एम. डी., परियोजना अधिकारी, सहायक परियोजना अधिकारी को प्रतियुक्तियों पर संघों में लगा रखा है इन पदों को अविलम्ब समाप्त किया जाना चाहिए अथवा इनका विलीनीकरण कर दिया जाना चाहिए। 16 जिला दुग्ध उत्पादक संघों के लाभ हानि की सूची सदन की मेज रखी जावे। आर. सी. डी. एफ के चुनाव लम्बे अर्से से नहीं हुए है इसकी उच्च स्तरीय जाँच करायी जावे और समय-समय पर जो घपलेबाजी हुई है उसकी भी जांच करायी जावे। डेयरी विकास मंत्रालय क्या डा. कुरियन की आनन्द पद्धति के उप नियम लागू करने पर विचार रखती है ? जिला दुग्ध उत्पादक संघों के अध्यक्षों को जिला प्रमुखों के समान सुविधायें देने के संबंध में विभाग क्या विचार रखता है ?

गत वर्षों में आर. सी. डी. एफ. द्वारा दूध के विक्रय मूल्यों में समय-समय पर वृद्धि की गई परन्तु मूल्य सूचकांक में वृद्धि होने पर भी दूध के खरीद मूल्य में तदनुरूप वृद्धि नहीं की गई जिसके परिणाम स्वरूप पशुपालकों अकाल एवं अभाव से ग्रस्त रहा और दूसरी ओर दूध के खरीद मूल्य के कम होने से वह अपने पशुओं का भरण-पोषण करने में पूरी तरण असफल रहा आर. सी. डी. एफ ने जिला दुग्ध उत्पादक संघों के मुनाफे को दूध की उचित कीमत नहीं दी जा सकी इस संबंध में जिला दुग्ध उत्पादक संघों एवं संयंत्रों के विलीनीकरण पर तत्काल आवश्यक आदेश जारी करने की आवश्यकता है। बीकानेर जिला दुग्ध उत्पादक संघ के लगभग 10 करोड़ से अधिक की राशि आर. सी. डी. एफ. में बकाया है जिसे संघ को लौटाया जाना चाहिए एवं जिला स्तर पर होने वाले लाभ को पशुपालकों में वितरित किया जाना चाहिए।

भवदीय,

ह० /–	ह० /–
(राम स्वरूप मीना)	(बुलाकीदास कल्ला)
वि. सं. 142	वि. सं. 93

सचिव, हेतराम बेनीवाल

राजस्थान विधान सभा, विधायक संगरिया

विषय : 295 के तहत सदन में विशेष उल्लेख हेतु।

महोदय,

राजस्थान का कृषि विभाग उच्च प्रशिक्षित कृषि वैज्ञानिकों को नियोजित किये हुए है इस के संचालन हेतु उच्च प्रशासनिक आइ ए. एस. अधिकारी भी हैं भागीरथी योजना का बाकी तो हिसाब राज्य सरकार करेगी मेरे जिले गंगानगर में जो किसान इस विभाग से सलाह प्राप्त करले उसकी फसल तो खड़ी ही जल जाती है नरमें व चने में हमारे काश्तकार ने अजमा कर देखा है। कृषि अधिकारी घटिया दवाइयां बेचने वाली कम्पनियों व दुकानदारों के दलाल है वे ही दवाइयां किसानों को बताते हैं जिसमें मुनाफा ज्यादा हो।

इस बार नरमें के समय दवाइयों में दी गई अनुदान की राशि व स्प्रेयर में दी गई छूट ने बहुत बड़ी उच्च अधिकारियों की साजिश को सभी काश्तकारों के सम्मुख स्पष्ट कर दिया है। छूट की राशि तय करने से पहले कम्पनियों के रेट तय किये गये और सभी से मिलकर वे रेट बहुत ही ऊंचे ले लिए गये। तो प्रतिशत छूट के पश्चात् भी बाजार के थोक वह दवाइयां उसी रेट पर किसानों को मिली जिस पर छूट के पश्चात् उपलब्ध हुई। स्प्रेयर की कीमत बाजार में 525 रुपये छूट के पहले उसकी कीमत 750 रुपये दिखला लगभग 520 रखी गई। इसी प्रकार छूट के पश्चात् लगभग 5-10 रुपये प्रति लीटर के अन्तर में बाजार में बिकती रही है राजफेड कृषि विभाग व इनके सर्वोच्च अधिकारी महोदय ने मिलकर कम्पनियों से सांठगांठ करके रेट ऊंचे ले लिए और अनुदान का पैसा सेठ व अधिकारी डकार गये। जिले के कृषि अधिकारियों ने इसके बाद भी लूट मचाई और जो दवाइयां सहकारी दुकानों पर मंगवाने के आदेश दिये वे सभी निम्न स्तर की अलवर उदयपुर व जयपुर की कमानियों की दवाइयाँ की स्प्रेयर भी अच्छी कम्पनी के नहीं मंगवाये गये। इस प्रकार राज्य के गरीब काश्तकार की फसलों को व के लिए जो अनुदान राज्य सरकार देती है बंटवारा उच्च स्तर पर ही हो जाता है जाँच का विषय है पर इन अधिकारियों के लम्बे हाथ देखते हुए किसी अन्य विभाग के उच्च अधिकारी की जाकर ही कुछ कर पायेगी।

ह०/

भवदीय,

(हेतराम बेनीवाल) सांगरिया

87

सचिव,

राजस्थान विधान सभा,

जयपुर।

विषयः—विधान सभा के कार्य संचालन एवं प्रक्रिया के नियमों के नियम 295 के अन्तर्गत अपना गांव अपना काम योजना में 30 प्रतिशत जन सहयोग के स्थात पर ट्राइबल एरियों में 5 प्रतिशत जन सहयोग करवाने के लिये विशेष उल्लेख के सम्बन्ध में।

महोदय,

विधान सभा के कार्य संचालन एवं प्रक्रिया के नियमों नियम 295 के माध्यम से मैं राज्य सरकार की योजना अपना गांव अपना काम की ओर आकर्षित कर निवेदन करना चाहता हूं कि:—

यह योजना राज्य सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय जनता के सहयोग से सामुदायिक सुविधाओं का निर्माण हो तथा साथ ही लोगों को रोजगार के साधन भी उपलब्ध हों और इस योजना के अन्तर्गत 30 प्रतिशत राशि स्थानीय समुदाय द्वारा उपलब्ध कराना है।

इस योजना के माध्यम से गांवों में कई प्रकार के विकास के कार्य कराये जा सकते है लेकिन ट्राइबल ऐरिया में जहां 80 प्रतिशत से भी अधीक लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं वहां 30 प्रतिशत जन सहयोग लेकर किसी निर्माण को करना बिल्कुल असंभव है और आज तक मेरी यह जानकारी है कि किसी भी ट्राइबल ऐरिया की पंचायत समिति में इस योजना के अन्तर्गत कोई भी कार्य स्वीकृत नहीं हुआ है और आज तक ट्राइबल एरियों में विकास कार्य भी नहीं के बराबर हुये हैं। वहां पर न तो स्कूल भवन पक्के हैं और कहीं-कहीं तो विद्यालय भवन ही नहीं हैं। विशेषकर उच्च प्राथमिक विद्यालयों की तो स्थिति बहुत खराब है। ने कच्ची पक्की सड़के हैं न ही औषधालय व उप स्वास्थ्य केन्द्र भवन बने हुए हैं और न ही पटवार मण्डल भवन बने हुए हैं।

ऐसी स्थिति में ट्राइबल एरिया में कई विकास कार्य कराये जा सकते है, किन्तु 30 प्रतिशत का जन सहयोग मिलना भी बिल्कुल असंभव है इसलिये मेरी राज्य सरकार से यह प्रार्थना है कि ट्राइबल एरियां के लिये अपना गांव अपना काम योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए 30 प्रतिशत जन सहयोग के स्थान पर 5 प्रतिशत जन-सहयोग लेने की तत्काल घोषणा कोरे एवं साथ ही वह जन सहयोग केश या श्रमदान के रूप में देने के निर्देश भी दें, ताकि ट्राइबल एरिया के लोगों को उक्त योजना का लाभ मिल सकें।

भवदीय,

ह०/

(दयाराम परमार)

शुद्धि–पत्र

क्र.सं.	स्कम्भ सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
1.	150	फोलियो	पर वाद-विवाद	का पारण
2.	152	,,	,,	,,
3.	154	,,	,,	,,
4.	156	,,	,,	,,